Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
Published from Ranchi
Ranchi ● Tuesday, 19 September 2023 ● Year : 01 ● Issue : 242 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com E-Paper : epaper.thephotonnews.com

सुविचार

पूर्णतया निंदित या पूर्णतया प्रशंसित पुरुष न था, न होगा, न आजकल है।

धम्मपद

12

जरीन खान की होगी गिरफ्तारी?

SHARE

सेंसेक्स	:	67,596.84
निफ्टी	:	20,133.30

SARAFA

सोना	:	5,660
चांदी	:	78.00

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

पुरानी संसद में आखिरी दिन बार-बार आया अटल का नाम, पक्ष-विपक्ष दोनों ने किया याद

आज से नए संसद भवन में 1.15 बजे लोकसभा और 2.15 बजे राज्यसभा की शुरू होगी कार्यवाही

AGENCY NEW DELHI : मंगलवार का दिन जितना ऐतिहासिक होगा उतना ही सोमवार था। यह पुरानी संसद में कार्यवाही का आखिरी दिन था। मंगलवार को नए संसद भवन में लोकसभा की कार्यवाही 1.15 बजे और राज्यसभा की 2.15 बजे शुरू होगी। यह नए संसद भवन में कार्यवाही का पहला दिन होगा। पुरानी संसद में आखिरी दिन एक नाम बार-बार जुबान पर आया। वह नाम था पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित सत्ता पक्ष और विपक्ष के कई सांसदों ने उनके नाम का जिक्र किया। संसद के विशेष सत्र के पहले दिन की कार्यवाही के दौरान अटल जी को याद किया जाना यूं नहीं था। पूर्व प्रधानमंत्री उन चंद नेताओं में रहे जिनके प्रशंसक सिर्फ उनकी पार्टी तक सीमित नहीं थे। अपने खास अंदाज के कारण वह अपनी पार्टी में जितने लोकप्रिय थे, दूसरे दल के नेता भी उन्हें उतना ही सम्मान देते थे। लोकसभा में 'संविधान सभा से शुरू हुई 75 सालों की संसदीय यात्रा' विषय पर बोलते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कई बार अटल जी का नाम लिया। अटल की ऐतिहासिक स्पीच को याद करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी ने इसी सदन में कहा था कि सरकारें आएंगी-जाएंगी। पार्टियां बनेंगी-बिगड़ेंगी। लेकिन, यह देश रहना चाहिए।

संसदीय यात्रा का पुनः स्मरण करते हुए आगे बढ़ें : पीएम

NEW DELHI : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को लोक सभा में कहा कि देश की 75 वर्षों की संसदीय यात्रा का पुनः स्मरण करने के लिए और नए सदन में जाने से पहले उन प्रेरक पलों को, इतिहास की महत्वपूर्ण घड़ी को याद करते हुए आगे बढ़ने का ये अवसर है। लोकसभा में प्रधानमंत्री ने कहा कि ये सही है कि इस इमारत के निर्माण का निर्णय विदेशी शासकों का था लेकिन ये बात हम कभी नहीं भूल सकते हैं कि इस भवन के निर्माण में देशवासियों का परिश्रम, पसीना और पैसा लगा था। उन्होंने कहा कि हम भले ही नए भवन में जाएंगे लेकिन ये पुराना भवन भी आने वाली पीढ़ियों को हमेशा प्रेरणा देता रहेगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस सदन से विदाई लेना बहुत ही भावुक पल है। हम जब इस सदन को छोड़कर जा रहे हैं तो हमारा मन बहुत सारी भावनाओं और अनेक यादों से भरा हुआ है। जब मैंने पहली बार एक सांसद के रूप में इस भवन में प्रवेश किया तो सहज रूप से मैंने इस सदन के द्वार पर अपना शीश झुकाकर, इस लोकतंत्र के मंदिर को श्रद्धाभाव से नमन किया था। लोकसभा में प्रधानमंत्री ने कहा कि यह 75 साल की संसदीय यात्रा को याद करते हुए आगे बढ़ने का समय है। करीब-करीब 7,500 से अधिक जनप्रतिनिधि अब तक दोनों सदनों में अपना योगदान दे चुके हैं। इस कालखंड में करीब 600 महिला सांसदों ने दोनों सदनों की गरिमा को बढ़ाया है।

संसद को संबोधित करते पीएम मोदी।

संसद में नेहरू की आधी रात को की गई गूंज हमें प्रेरित करती रहेगी : मोदी

प्रधानमंत्री ने कहा कि इस संसद में पंडित जवाहर लाल नेहरू की आधी रात को की गई गूंज हमें प्रेरित करती रहेगी और यह वही संसद है, जहां अटल जी ने कहा था सरकारें आएंगी, जाएंगी; पार्टियां बनेंगी, बिगड़ेंगी; मगर ये देश रहना चाहिए। इस देश में दो प्रधानमंत्री ऐसे रहे (मोरारजी देसाई और वीपी सिंह) जिन्होंने कांग्रेस में अपना जीवन खपाया और एंटी कांग्रेस सरकार का नेतृत्व कर रहे थे। ये भी इसकी विशेषता थी। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश की मुक्ति का आंदोलन और उसका समर्थन भी इसी सदन ने इंदिरा गांधी के नेतृत्व में किया था।इसी सदन ने इमरजेंसी में लोकतंत्र पर होता हुआ हमला भी देखा था और इसी सदन ने भारत के लोगों की ताकत का एहसास कराते हुए लोकतंत्र की वापसी भी देखी थी।

आजाद भारत के बड़े फैसलों की गवाह रही संसद : मल्लिकार्जुन

NEW DELHI : राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि हमारी संसद विगत 75 वर्षों में जो देश में बड़े फैसले हुए हैं, उसकी गवाह रही है। खड़गे ने सोमवार को संसद के विशेष सत्र के दौरान राज्यसभा में "75 वर्ष की संसदीय यात्रा" विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारी संसदीय व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए बाबा साहेब, पंडित नेहरू और सरदार पटेल सहित अन्य महापुरुषों ने अहम भूमिका निभाई है। हमें उनके योगदान को हमेशा याद रखना होगा। इन महापुरुषों ने हमारे लोकतंत्र की नींव को मजबूत किया है। खड़गे ने अपने शुरूआती संबोधन में सभापति से अनुरोध किया कि आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह और राघव चड्ढा को सदन में वापस बुला लें। खड़गे ने कहा कि आज हम अहम विषय पर चर्चा कर रहे हैं, इसलिए उन्हें भी अपनी बात रखने का मौका दें। खड़गे ने अपने भाषण की शुरूआत में केन्द्र सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि "बदलना है तो अब हालात बदलो, ऐसे नाम बदलने से क्या होता है?, देना है तो युवाओं को रोजगार दो, सबको बेरोजगार करके क्या होता है?, दिल को थोड़ा बड़ा करके देखो, लोगों को मारने से क्या होता है?, कुछ कर नहीं सकते तो कुर्सी छोड़ दो, बात-बात पर डराने से क्या होता है?, अपनी हुक्मरानी पर तुम्हें गुरूर है, लोगों को डराने-धमकाने से क्या होता है?"

संसद को संबोधित करते मल्लिकार्जुन खड़गे।

विपक्षी नेताओं को जांच एजेंसियों से डराया जा रहा : खड़गे

खड़गे ने पंडित नेहरू की पहली कैबिनेट का हवाला देते हुए कहा कि उन्होंने बाबा साहेब और श्यामा प्रसाद मुखर्जी सहित पांच ऐसे लोगों को अपनी कैबिनेट में जगह दी, जो समान विचार के लोग नहीं थे। लेकिन आज के समय में सत्ता पक्ष विपक्ष को देखना तक नहीं चाहती है। खड़गे ने कहा कि नेहरू ने कहा था कि देश में मजबूत विपक्ष का होना बहुत जरूरी है। मजबूत विपक्ष की अनुपस्थिति का अर्थ है कि व्यवस्था में महत्वपूर्ण खामियां हैं। लेकिन वर्तमान सरकार लगातार विपक्ष को कमजोर कर रही है। विपक्षी नेताओं को जांच एजेंसियों से डराया जा रहा है। खड़गे ने कहा कि संविधान निमार्ताओं ने हमें जो संविधान दिया है, उसने हमें आज भी एकजुट कर रखा है। इसी संविधान ने राष्ट्र के लिए एक सशक्त ढांचा तैयार किया है।

जी-20 के सफल आयोजन से भारत का दुनिया में बढ़ा कद : जगदीप धनखड़

संसद को संबोधित करते धनखड़।

NEW DELHI : राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने जी-20 के सफल आयोजन के लिए देशवासियों को बधाई देते हुए आज कहा कि इससे भारत का विश्व में सम्मान बढ़ा है। इस शिखर सम्मेलन के परिणाम परिवर्तनकारी हैं और आने वाले दशकों में वैश्विक व्यवस्था को नया आकार देने में योगदान देंगे। धनखड़ ने सोमवार को संसद के विशेष सत्र के दौरान राज्यसभा को संबोधित करते हुए कहा कि जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान नई दिल्ली के राजघाट पर विश्व नेताओं ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी। यह एक अद्भुत दृश्य था। दुनिया के नेता शांति और अहिंसा के सार्वभौमिक आदर्शों का समर्थन करने वहां पहुंचे थे। धनखड़ ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने जी-20 समिट के दौरान अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में सुधारों को लेकर आवाज उठाई।

BRIEF NEWS

नाबालिग से दुष्कर्म मामले में चार आरोपी गिरफ्तार

RANCHI : रांची के तमाड़ थाना क्षेत्र में एक नाबालिग लड़की के साथ दुष्कर्म करने के मामले में पुलिस ने चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार चारों आरोपी नाबालिग हैं। प्राथमिकी के अनुसार नाबालिग लड़की अपने दादी के साथ सुबह शौच के लिए गयी थी। इसी दौरान चार नाबालिग लड़के वहां पहुंचे और जबरन लड़की को कुछ दूर ले जाकर जान मारने की धमकी देकर दुष्कर्म किया। इसी बीच किसी को आते देख आरोपित वहां से भाग गए। ग्रामीण एसपी मनीष टोप्पो ने सोमवार को बताया कि मामले में पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए चारों आरोपित नाबालिगों को गिरफ्तार कर लिया है। मामले में पूछताछ की जा रही है।

आदित्य-एल1 ने वैज्ञानिक डेटा एकत्र करना शुरू किया

NEW DELHI : सूर्य के अध्ययन के लिए लॉन्च किए गए आदित्य एल-1 ने वैज्ञानिक डेटा भेजना शुरू कर दिया है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने सोमवार को बताया कि आदित्य-एल1 ने वैज्ञानिक डेटा एकत्र करना शुरू कर दिया है। अंतरिक्ष यान में लगे एसटीईपीएस उपकरण के सेंसर ने पृथ्वी से 50,000 किमी से अधिक दूरी पर सुपर-थर्मल और ऊर्जावान आयनस और इलेक्ट्रॉनस को मापना शुरू कर दिया है। इसरो के मुताबिक यह डेटा वैज्ञानिकों को पृथ्वी के आसपास के कणों के व्यवहार का विश्लेषण करने में मदद करता है। यह आंकड़ा ऊर्जावान कण वातावरण में भिन्नता को प्रदर्शित करता है, जो भेजे गए उपकरणों की किसी एक इकाई द्वारा एकत्र किया गया है।

केरल समेत नौ राज्यों में निपाह वायरस का खतरा

NEW DELHI : केरल में पिछले 24 घंटों में निपाह से संक्रमित कोई मामला सामने नहीं आया है। इससे संक्रमित नौ साल के बच्चा वेंटिलेटर से बाहर आ गया है। केरल की स्वास्थ्य मंत्री वीना जॉर्ज के मुताबिक बच्चे की सेहत में अब सुधार हो रहा है। उन्होंने बताया कि इस निपाह वायरस का खतरा केरल समेत देश के नौ राज्यों में है। इस पर आईसीएमआर और डब्ल्यूएचओ द्वारा किए अध्ययन में यह बात सामने आई है।

सड़क हादसे में पति, पत्नी व बेटी की मौत, बाल-बाल बचा मासूम

अपाची से टकराने के बाद गिरी बाईक, ट्रेलर ने लिया अपने चपेट में

हादसे के बाद घटनास्थल पर जुटी भीड़ ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RAMGARH : देखते ही देखते एक छह वर्षीय बालक अनुराग की दुनिया उजड़ गयी। चंद मिनटों में ही अनुराग कुमार ने अपने माता, पिता और बहन को खो दिया। जानकारी के अनुसार रामगढ़ जिले के केदला लइयो निवासी प्रवीण रविदास अपनी ससुराल पूरबडीह गोला से अपनी पत्नी अनिता देवी, पुत्र अनुराग कुमार एवं पुत्री दिशा कुमारी को लेकर बाइक से वापस अपना घर जा रहा था। जैसे ही चितरपुर मेन रोड स्थित च्वाइस गारमेंट्स के समीप पहुंचा। वैसे ही एक अपाची बाइक से टकराने के बाद वह पत्नी और पुत्री के साथ दायीं ओर गिर गया। इस बीच विपरीत दिशा से आ रहा ट्रेलर तीनों को रौंदते हुए आगे निकल गया। इससे तीनों की घटनास्थल पर ही मौत हो गयी। घटना की सूचना मिलते ही रजरप्पा थाना प्रभारी हरिनंदन सिंह सदलबल मौके पर पहुंचे। जहां तीनों मृतक के शवों को कब्जे में कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। इसके साथ ही पुलिस सड़क जाम हटा कर दुर्घटनाग्रस्त बाइक को जब्त कर थाना ले गयी। उधर, घटना के बाद भाग रही ट्रेलर को गोला थाना गेट के समीप पकड़ लिया गया। घटना के बाद ग्रामीणों ने शव उठाने का विरोध किया और सड़क जाम करने की कोशिश की। लोगों का कहना है कि रामगढ़-बोकर मार्ग के चितरपुर मेन रोड में कई जगह सड़क खराब है।

ED समन मामले में CM हेमंत सोरेन को नहीं मिली राहत, SC ने कहा- HC जाएं

एजेंसी ने मुख्यमंत्री को भेजा चौथा समन, 23 सितंबर को पूछताछ के लिए बुलाया

CRIME REPORTER RANCHI : जमीन घोटाला मामले में ईडी की पूछताछ से राहत के लिए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सुप्रीम कोर्ट का रुख किया था। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को राहत नहीं दी। उन्हें इस मामले में हाईकोर्ट जाने का निर्देश दिया गया है। अब मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन इस मामले को लेकर हाईकोर्ट में अपील करेंगे और ईडी की कार्रवाई पर रोक की मांग करेंगे। सुप्रीम कोर्ट में इस मामले की सुनवाई करते हुए जस्टिस अनिरुद्ध बोस और जस्टिस बेला माधुर्य त्रिवेदी की पीठ कहा, हम इस पर अभी विचार नहीं करेंगे। जस्टिस बोस ने कहा कि मुकदमे की सुनवाई हाईकोर्ट से शुरू होनी चाहिए। लिहाजा आप झारखंड हाईकोर्ट जाइए। ध्यान रहे कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने ईडी की पूछताछ के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट का रुख किया था। ईडी के दूसरे समन के बाद सीएम सुप्रीम कोर्ट पहुंचे थे। इस बीच हाईकोर्ट ने उन्हें अबतक कुल मिलाकर चार समन जारी कर दिया है। सीएम को चौथा समन भेजकर 23 सितंबर को हिनू स्थित ईडी के क्षेत्रीय कार्यालय आने का आदेश दिया गया है। दूसरे समन के बाद ही मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सुप्रीम कोर्ट का रुख कर लिया था। सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका की पहली सुनवाई 15 सितंबर को हुई थी और सोमवार का दिन दिया गया था। पहली सुनवाई में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने लिखित आवेदन देकर बताया कि उनके वकील की तबीयत खराब है। ऐसे में कोई दूसरी तारीख दी जाए। जिसके बाद अदालत ने 18 सितंबर की तारीख मुकर्रर की। सीएम हेमंत सोरेन ने ईडी की ओर से जारी समन को चुनौती दी है। उन्होंने 23 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट में रिट पिटीशन दायर कर ईडी द्वारा जारी किए गए समन को चुनौती दी है।

क्या है पूरा मामला

दरअसल, मनी लॉन्ड्रिंग मामले में समन जारी होने के बाद ही सीएम हेमंत सोरेन ने ईडी से समन वापस लेने को कहा था। उन्होंने कहा था कि हमने पहले ही अपनी संपत्ति की जानकारी दे दी हैं। अगर वह गुम हो गया है तो वे फिर से इसे उपलब्ध करा सकते हैं। गौरतलब है कि इससे पूर्व अवैध खनन मामले में ईडी ने सीएम हेमंत सोरेन को पूछताछ के लिए समन जारी किया था। उस दौरान वे ईडी के समक्ष उपस्थित हुए थे और ईडी के सभी प्रश्नों का जवाब दिया था। पूछताछ के दौरान संपत्ति से जुड़े दस्तावेज भी ईडी को उपलब्ध कराए थे।

20 सितंबर से करेंगे रेल चक्का जाम, मुरी, गोमो, नीमडीह व घाघरा रेलवे स्टेशनों पर पड़ेगा असर

कुड़मी समाज एक बार फिर आर-पार के मूड में

PHOTON NEWS RANCHI : कुड़मी को अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने की मांग को लेकर एक साल में तीसरी बार कुड़मी विकास मोर्चा 20 सितंबर से रेल टेक रोको आंदोलन करेगा। मालूम हो कि इससे पहले कुड़मी समाज 20 सितंबर 2022 व पांच अप्रैल 2023 को पांच दिवसीय रेल रोको आंदोलन कर चुका है। आंदोलन को सफल बनाने के लिए सोमवार को होटल गंगा आश्रम में प्रेस वार्ता की गयी। मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष शीतल ओहदार ने कहा कि कुड़मी, महतो को अनुसूचित जनजाति की सूची में शामिल करने एवं कुरमाली भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर 20 सितंबर को झारखंड में मुरी, गोमो, नीमडीह व घाघरा रेलवे स्टेशनों तथा पश्चिम बंगाल के खेमासुली व कुस्तौर रेलवे स्टेशन तथा ओड़िशा में हरिचंदनपुर, जराइकेला व धनपुर रेलवे स्टेशनों अनिश्चितकालीन रेल टेका आंदोलन शुरू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि संसद के इसी सत्र में कुड़मियो को एसटी में शामिल करने का बिल लाया जाए, नहीं तो इस बार जब तक केंद्र सरकार द्वारा लिखित नहीं दिया जाएगा, तब तक नहीं हटेंगे रेलवे ट्रैक से कुड़मी समाज के लोग। रेलवे में सफर कर रहे यात्रियों से भी अपील की है कि वे इस आंदोलन का समर्थन करें। यात्रियों को आने वाली परेशानियों के लिए कुरमी विकास मोर्चा की तरफ से माफी भी मांगी है। शीतल ओहदार ने कहा कि कुड़मी समाज ने नई दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन कर पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह को भी ज्ञापन सौंपा था। झारखंड में जब रघुवर दास मुख्यमंत्री थे, उन्हें 42 विधायकों का हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन सौंपा गया था। उसमें मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का भी हस्ताक्षर शामिल था। ओहदार ने कहा कि केंद्रीय जनजातीय मंत्री अर्जुन मुंडा कुड़मी समाज के साथ धोखाधड़ी कर रहे हैं।

प्रेस कांफ्रेंस कर जानकारी देते कुड़मी समुदाय के लोग।

कुड़मी सांसद सदन में उठाएं हमारी मांग

मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष शीतल ओहदार ने कहा कि 18 से 22 सितंबर तक चलने वाली संसद का विशेष सत्र में कुड़मी महतो को केंद्र सरकार अनुसूचित जनजाति का दर्जा दे। कुड़मी समाज के सांसदों को भी कहा कि कुड़मी महतो को एसटी की सूची में शामिल करने की मांग को जोरदार तरीके से विशेष सत्र में उठाएं। उन्होंने कहा कि सारे दस्तावेज होने के बावजूद कुड़मी जनजाति को अनुसूचित जनजाति के सूची से बाहर रखा गया है। जिसके कारण आज यह जनजाति अन्य सभी जनजातियों से रोजगार शिक्षा के साथ-साथ राजनैतिक भागीदारी में अंतिम पायदान पर चला गया है। आदिवासी कुड़मी समाज के केंद्रीय प्रवक्ता हरमोहन महतो ने कहा कि कुड़मी आदिकाल से आदिवासी था, है और आगे भी रहेगा। कहा कि 1913 तक मुंडा, मुंडारी, संथाली आदि के साथ कुड़मी भी आदिम जनजाति (प्रीमिटिव ट्राइब्स) की सूची में शामिल थी। 6 सितंबर 1950 को जब लोकसभा में जनजाति की सूची प्रस्तुत की गई, तो उसमें कुड़मी नहीं था।

साहिबगंज में नदी में डूबने से तीन चचेरी बहनों की मौत

SAHIBGANJ : साहिबगंज जिला अंतर्गत बरहेट थाना क्षेत्र अंतर्गत गुमानी नदी के खैरवा घाट पर नहाने के दौरान तीन चचेरी बहनों की डूबकर मौत हो गयी है। मिली जानकारी के अनुसार रांगा थाना क्षेत्र के मोदीकोला निवासी मनताशा परवीन (10 वर्ष), तालझारी थाना क्षेत्र के तालझारी निवासी सीमा खातून (11 वर्ष), बरहेट थाना क्षेत्र के खैरवा निवासी समीरन खातून (12 वर्ष) अपने परिजनों के साथ शुक्रवार को खैरवा गांव नीचे टोला निवासी रेहान अंसारी के शादी समारोह में आयी हुई थी। सोमवार को जब बहूभोज कार्यक्रम चल रहा था, इसी दौरान दोपहर करीब 12 बजे वे तीनों अपने परिजनों को बिना बताये गुमानी नदी में नहाने चली गयीं। इस दौरान गहरे पानी में चले जाने से एक-दूसरे को बचाने के क्रम में तीनों की मौत हो गयी।

कुख्यात अपराधी गेंदा सिंह सभी केस में बरी

साक्ष्य तक नहीं जुटा पाई पुलिस

CRIME REPORTER RANCHI : बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार में बंद कुख्यात अपराधी गेंदा सिंह सभी केस में बरी हो गया। रांची पुलिस उसके खिलाफ कोई भी साक्ष्य नहीं जुटा पाई। न ही कोई उसके खिलाफ कोर्ट में गवाही दी। गौरतलब है कि बीते चार अगस्त को रांची डीसी ने कुख्यात गैंगस्टर गेंदा सिंह सहित आधा दर्जन से अधिक अपराधियों पर सीसीए लगाने का आदेश दिया था। जिन अपराधियों पर सीसीए लगाने की अनुशंसा की गई थी, उनमें राशिद अंसारी, शेख अंसारी उर्फ बघेला, रंजीत साव, फरहान अंसारी उर्फ चरकु मैना और अमित कुमार उर्फ सोनू शर्मा शामिल था। सभी पर सीसीए के तहत कार्रवाई करते हुए यह निर्देश भी जारी कर दिया गया है कि किसी भी हाल में इन्हें जेल से बाहर नहीं निकलने दिया जाए। सभी अपराधियों पर हत्या, रंगदारी, जमीन कारोबारी और बिल्डरों द्वारा रंगदारी नहीं देने पर हत्या या उन पर जानलेवा हमला करने का आरोप है। रांची के हटिया इलाके का रहने वाला गेंदा सिंह कुख्यात अपराधी है। गेंदा सिंह अपने बड़े भाई लखन सिंह के साथ मिलकर अपने गिरोह का संचालन किया करता है। रांची के तुपुदाना इलाके में गेंदा सिंह का आतंक है। साल 2015 में तुपुदाना चौक पर जमीन कारोबारी राकेश राम के निजी बॉडीगार्ड मनोहर झा और ड्राइवर राजेंद्र राम की हत्या कर गेंदा सिंह ने अपराध की दुनिया में कदम रखा था। गेंदा पिछले कई सालों से जेल में बंद है।

BRIEF NEWS

गिरिडीह में गांजा के साथ दो तस्कर गिरफ्तार

GIRIDIH : नशीले पदार्थों के खिलाफ गिरिडीह पुलिस की कारवाई लगातार जारी है। इसी क्रम में सोमवार को गुप्त सूचना के आधार पर डीएसपी संजय राणा के नेतृत्व में पचम्बा थाना पुलिस ने पचम्बा थाना ले हाई स्कूल के समीप से गांजा के दो कारोबारियों को लाखों रुपए मूल्य के गांजा के साथ गिरफ्तार किया। डीएसपी के नेतृत्व में किए गए छापेमारी में पचम्बा थाना पुलिस ने हाई स्कूल के समीप से अमित साहू के घर से तीन किलो 300 ग्राम गांजा जब्त किया। जबकि अमित साहू के पड़ोसी सुजल साहू के घर के कमरे से एक किलो 400 ग्राम गांजा जब्त किया गया।

कार्य रोक लगाने व धमकी देने के मामले में छह दोषी करार, दो साल की सजा

DUMKA : पैतृक जमीन पर निर्माण कार्य रोकने एवं धमकी देने के आरोपितों को न्यायिक दंडाधिकारी, प्रथम श्रेणी परिधि शर्मा के न्यायालय ने सोमवार को दोषी करार देते हुए दो साल की सजा सुनायी है। साथ ही जुमार्ना भी लगाया है। सजा रानेश्वर थाना क्षेत्र के आसनबनी गांव निवासी गट्टू कनानिया, उनके भतीजे मिट्ठू कनानिया, रंजीत कनानिया, विनय कनानिया, टिंकू कनानिया एवं बब्लू दत्ता को सुनाया है। न्यायालय ने भादवी की धारा 341 में एक माह सजा और 500 रुपये जुमार्ना किया। जुमार्ना की रकम नहीं देने पर सात दिन अतिरिक्त सजा भुगतने का आदेश सुनाया। धारा 323 में एक साल की सजा और एक हजार जुमार्ना किया। जुमार्ने की राशि नहीं देने पर तीन माह अतिरिक्त सजा काटनी होगी। धारा 506 में दो साल की सजा और 10 हजार जुमार्ना किया। जुमार्ने की राशि भुगतान नहीं करने पर तीन माह अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी। सभी सजा साथ-साथ चलेगी।

लोहरदगा में अवैध हथियार के साथ युवक गिरफ्तार

LOHARDAGA : लोहरदगा पुलिस ने सेरंगदाग थाना क्षेत्र में अवैध हथियार लेकर घूम रहे एक अपराधी मो. साहेब भट को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। एसपी हरीश बिन जमां ने सोमवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि उन्हें गुप्त सूचना मिली थी कि सेरेंगदाग थाना क्षेत्र के बिडनी में एक अज्ञात व्यक्ति हथियार लेकर घूम रहा है जो अपराधिक घटना को अंजाम देने की योजना बना रहा है। गुप्त सूचना के आधार पर एसपी हरीश बिन जमां ने सेरंगदाग थाना प्रभारी एवं सैट 76 सशस्त्र बल का एक विशेष टीम गठित कर अज्ञात व्यक्ति की गिरफ्तारी के लिए टीम का गठन किया। गठित टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए गुमला जिला के गौसनगर, थाना खड़ियापाड़ा निवासी मो. साहेब भट् (26) को बिडनी से एक देशी पिस्तौल के साथ गिरफ्तार किया। एसपी ने बताया कि मो. साहेब भट् आपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है। इसपर गुमला जिला में आठ मामला दर्ज हैं। गिरफ्तार युवक के पास से पुलिस ने एक देशी पिस्तौल बरामद किया है।

तरहसी ब्लॉक के ट्रांसफार्मर से लगी करंट, भैंस की मौत, युवक गंभीर

PALAMU : तरहसी प्रखंड सह अंचल कार्यालय के ट्रांसफार्मर से सोमवार की शाम एक फिर करंट लगा। इस बार एक भैंस की मौत हो गई, जबकि बचाने में भैंस मालिक बुरी तरह झुलस गया। उसे बेहतर इलाज के लिए एमआरएमसीएच मेदिनीनगर रेफर किया गया है। इलाज कर उसे ठीक करने की कोशिश की जा रही है। जख्मी युवक की पहचान तरहसी निवासी राहुल कुमार साव (30) के रूप में हुई है। भैंस की मौत से राहुल को 50 से 60 हजार का आर्थिक नुकसान हुआ है। प्रखंड सह अंचल कार्यालय के ट्रांसफार्मर से पूर्व में कई बार करंट लग चुका है। आवारा कुते और कई मवेशियों की मौत हो चुकी है। बावजूद प्रखंड प्रशासन इस समस्या का समाधान करने में अबतक सक्रियता नहीं दिखाया है। इससे स्थानीय लोगों में भारी आक्रोश देखा जा रहा है। बताया जाता है कि राहुल कुमार साव की भैंस चरते हुए प्रखंड सह अंचल कार्यालय के लगे ट्रांसफार्मर के पास चली गई। हल्की बारिश होने के कारण ट्रांसफार्मर के नीचे जलजमाव हो गया था। जैसे ही भैंस ट्रांसफार्मर के नजदीक गई, उसे जोरदार करंट लगा, जिससे उसकी मौत हो गई।

भूमि अधिग्रहण का पैसा गलत खाते में भेजना दो क्लकों को पड़ा भारी

DC ने दो उच्च वर्गीय लिपिकों की अनिवार्य सेवानिवृत्ति का दिया आदेश

PHOTON NEWS RAMGARH : भूमि अधिग्रहण के दौरान गलत व्यक्तियों को मुआवजे की रकम भेजना दो कर्मचारियों को भारी पड़ गया। सोमवार को डीसी चंदन कुमार ने दो कर्मचारियों को अनिवार्य रूप से सेवा निवृत्ति का आदेश जारी कर दिया है। नवंबर 2017 में राष्ट्रीय राजमार्ग 33 सड़क चौड़ीकरण अंतर्गत अधिग्रहित मौजा जोड़ाकरम में रैयत कार्तिक मांझी, बुधो मांझी, खड़े मांझी इत्यादि के अधिग्रहित भूमि के विरुद्ध फर्जी तरीके से किसी अन्य लाभुक के खाते में मुआवजा की राशि का भुगतान किया गया था। संबंधित मामले में दोषी सिद्ध हुए तत्कालीन जिला भू अर्जन कार्यालय में पदस्थापित दो उच्च वर्गीय लिपिक केशव प्रसाद एवं संजीव कुमार सिन्हा को अनिवार्य सेवा निवृत्ति देने का आदेश उपायुक्त चंदन कुमार ने दिया है।

उपायुक्त चंदन कुमार। ● फोटोन न्यूज

जांच में सामने आया है कि कार्तिक मांझी की जगह पर सहदेव नाम के व्यक्ति, बुधो मांझी की जगह पर किसी अन्य गांव के बुधन मांझी एवं खड़े मांझी की जगह पर मंगरा मांझी(उर्फ खड़े मांझी) के खाते में मुआवजे राशि का भुगतान किया गया। जबकि खड़े मांझी द्वारा दिए गए शपथ पत्र में साफ-साफ दशार्या गया है कि खड़े मांझी के द्वारा अंगूठे का प्रयोग किया गया है। जबकि मंगरा मांझी द्वारा खाते के दस्तावेजों में हस्ताक्षर किया गया है। उपरोक्त मामला न केवल काफी गंभीर प्रवृत्ति का है बल्कि अनुसूचित जनजाति के रैयत लाभुकों के 2 करोड़ रुपए से ज्यादा की राशि का हस्तांतरण फर्जी रैयत लाभुक खड़े कर उनके खाते में किया गया है। जिस पर झारखंड सरकारी सेवक नियमावली 2016 के भाग ग, कंडिका 14,(क) के अनुरूप दोनों उच्च वर्गीय लिपिकों की अनिवार्य सेवानिवृत्ति का दंड अधिरोपित किया है।

जांच में यह भी पाया गया कि केशव प्रसाद एवं संजीव कुमार सिन्हा के अलावा उच्च वर्गीय लिपिक प्रवीण कुमार सिन्हा जिन पर कि मामले में जून 2022 में ही दोष सिद्ध हो चुका था। उन पर कोई कार्रवाई नहीं की गई बल्कि जुलाई 2023 तक उनकी सेवानिवृत्ति का इंतजार किया गया। जिसमें समाहरणालय के कर्मियों व अधिकारियों की मिली भगत की संभावना को देखते हुए उपायुक्त ने दोषी सिद्ध होने के बावजूद लगभग एक वर्ष तक प्रवीण कुमार सिन्हा पर कोई कार्रवाई नहीं किए जाने पर स्पष्टीकरण पूछा है।

आठ वर्षीय अब्दुस की अपहरण के बाद कर दी गयी हत्या, शव बरामद

PHOTON NEWS KODERMA : कोडरमा थाना क्षेत्र के जलवाबाद से लापता हुए आठ वर्षीय अब्दुस की अपहरण के बाद हत्या कर दी गई। उसका शव रविवार को एक सुनसान घर से बरामद किया गया। कोडरमा थाना क्षेत्र के जलवाबाद निवासी पत्रकार आफताब आलम के भांजा आठ वर्ष के अब्दुस समद उर्फ अलसमद की जघन्य हत्या में शामिल अपराधियों की अबतक पहचान नहीं हो पायी है। हालांकि मामले में कुछ लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है, पर अबतक कोई नतीजा नहीं निकल पाया है। पूरे कोडरमा में यह मामला चर्चा का विषय बना है, वहीं लोगों में बड़ा सवाल भी है कि इस मासूम से आखिर क्या दुश्मनी जिसके कारण उसकी हत्या कर दी गयी।

उल्लेखनीय है कि 14 सितंबर की शाम से अब्दुस समद लापता था। जिसको लेकर उसके पिता मो रिजवान ने कोडरमा थाना में कांड संख्या 169/ 23 सनहा दर्ज कराया गया था। इसके बाद 17 सितंबर को अब्दुस समद का शव जलवाबाद मदीना मस्जिद के पीछे एक बंद पड़े मकान से बरामद किया गया था। मामले में झुमरीतिलैया स्थित कोडरमा स्टेशन से एक महिला समय दो लोगों को पकड़ा भी गया, जिन्होंने बातों को इधर-उधर घुमाया। अपहरण के बाद बच्चे को कभी जहानाबाद तो कभी बोकारो भेजने की बात कही, पर यह बात झूठी निकली।

इधर एसपी अनुदीप सिंह ने सोमवार को बताया कि मामले को लेकर कोडरमा थाना प्रभारी, डोमचांच थाना प्रभारी, कुछ सब इंस्पेक्टर, टेक्निकल सेल समेत अन्य पुलिस कर्मियों को मिलाकर एसआईटी का गठन किया गया है। एसआईटी संदेह के आधार पर कुछ लोगों को हिरासत में लेकर

एबीवीपी की मनमानी के खिलाफ आइसा ने दर्ज किया प्रतिरोध

PHOTON NEWS PALAMU : डालटनगंज के छः मुहान पर आइसा ने सोमवार की शाम राष्ट्रीय प्रतिवाद के आह्वान पर प्रतिरोध दर्ज किया। बैनर और पोस्टर के साथ कार्यकर्ता नजर आए। इसमें प्रतिरोध सरीखे नारे लिखे गए थे। मौके पर नुक्कड़ सभा की गई। इस दौरान वक्ताओं ने कहा कि दिल्ली विश्वविद्याल में एबीवीपी की मनमानी लगातार बढ़ती जा रही है। विश्वविद्याल प्रशासन एवं केंद्र सरकार ने संघी गुंडे को पाल रखे हैं। भाजपा की मनमानी और बुलडोजर राज का नतीजा है कि एबीवीपी के लोग आइसा के कार्यकर्ताओं पर हमला कर दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रसंघ चुनाव को हिसंक रूप से प्रभावित करना चाहते हैं।

भाजपा सरकार का वन नेशन वन इलेक्शन लाने का यही मकसद है कि चुनाव में सिर्फ एक दल रहे है। बाकी दलों को डरा धमकाकर, सरकारी तंत्रों एवं गुंडों का प्रयोग कर चुनावी राजनीति से उखड़ फेंके।

मंदिर से चोरी गए मुकुट सासाराम से बरामद, खरीददार और चोर गिरफ्तार

PHOTON NEWS PALAMU : मेदिनीनगर शहर थाना क्षेत्र के शिवाला रोड स्थित विष्णु मंदिर के गर्भगृह से चोरी गए भगवान के मुकुट को बरामद कर लिया गया है। हालांकि लड्डू गोपाल की मूर्ति बरामद नहीं हुई है। पुलिस ने इस सिलसिले में खरीददार और एक चोर को गिरफ्तार किया है। मुख्य सरगना फरार है। लड्डू गोपाल की मूर्ति उसी के पास रहने की जानकारी दी गयी है।

मीडिया को जानकारी देते डीएसपी सुरजीत कुमार व अन्य। ● फोटोन न्यूज

गिरफ्तार आरोपियों में चोर पोखराहाखुर्द के मो. सुहैल और खरीददार बिहार के रोहतास जिले के सासाराम के उपेन्द्र कुमार सेठ पिता सत्यनारायण सेठ शामिल है। चोरों के पास से 237 ग्राम चांदी के दो मुकुट क्षतिग्रस्त स्थिति में बरामद किये गये हैं। एक मोटरसाइकिल और एक मोबाइल फोन भी बरामद हुआ है।

सोमवार को डीएसपी सुरजीत कुमार ने बताया कि 11-12 सितंबर की रात शिवाला रोड स्थित विष्णु मंदिर में चोरी हुई थी। पुजारी सुनील कुमार चौबे ने मामला दर्ज कराया था। अनुसंधान के लिए एसआइटी का गठन किया गया था। अलग अलग क्षेत्रों में छापामारी की गयी। इसी क्रम में एक अपराधी गिरफ्तार हुआ। उसकी निशानदेही पर बिहार के सासाराम में भी कार्रवाई की गयी। मुकुट के खरीददार उपेन्द्र कुमार सेठ को यहां से गिरफ्तार किया गया। इसमें पुलिस अधीक्षक कार्यालय का तकनीकी शाखा का भी भरपूर सहयोग मिला।

मुकुट को गलाने के लिए क्षतिग्रस्त कर दिया गया था। इस चोरी कांड को दो लोगों ने अंजाम दिया था। एक गिरफ्तार हो गया है, जबकि मुख्य सरगना और सीसीटीवी कैमरे में चोरी करते दिखने वाला फरार है। लड्डू गोपाल की मूर्ति उसी के पास रहने की जानकारी गिरफ्तार चोर ने दी है। उसका आपराधिक इतिहास रहा है। गढ़वा जिले में मंदिरों से चोरी के मामले में उसकी संलिप्तता रही है।

डीएसपी ने कहा कि उपेन्द्र सेठ चोरी के आभूषण एवं अन्य सामान खरीदता था। उन्होंने कहा कि मूर्ति को भी बेचने की कोशिश की गयी थी, लेकिन खरीददार ने लेने से इनकार कर दिया।

विधायक आवास पर हवलदार के साथ मारपीट, एक गिरफ्तार

PHOTON NEWS KODERMA : स्थानीय विधायक और राज्य की पूर्व शिक्षा मंत्री डॉ नीरा यादव के कोडरमा स्थित आवास पर तैनात हवलदार के साथ सोमवार की सुबह मारपीट की गई। इस संबंध में कोडरमा थाना में तीन लोगों के खिलाफ नामजद प्राथमिक दर्ज कराई गई है।

विधायक डॉ नीरा यादव का आवास। ● फोटोन न्यूज

प्राथमिकी में हवलदार अवध किशोर दांगी ने बताया है कि सोमवार की सुबह 7 बजे वह ड्यूटी पर तैनात था। इसी बीच तीन युवक विकास कुमार निवासी जहानाबाद, करण कुमार निवासी रजौली और सत्येंद्र कुमार निवासी जलवाबाद घूमते हुए आवास के पास आए। विकास कुमार ने मेन गेट के शटर पर हाथ से मारा। जब उससे पूछा कि क्या बात है, तब उसने गाली गलौज करते हुए कहा कि दरवाजा खोलता है कि नहीं। मैं दूसरे दरवाजे से बाहर निकला और फिर पूछा कि क्या बात है, तो वह मारपीट करने लगा। उसने मेरी वर्दी फाड़ दी और सरकारी रायफल को भी छिनने का प्रयास किया। शोरगुल के बाद आवास में मौजूद दो अन्य गार्ड नीचे आए जिन पर भी विकास ने हमला किया। इस दौरान दो फरार हो गए। विकास कुमार द्वारा पूरे घटनाक्रम को अंजाम दिया गया और कोडरमा थाना की पुलिस के आने तक उसे पकड़ कर रखा गया। पुलिस ने विकास को गिरफ्तार किया है, जिससे अभी पूछताछ की जा रही है।

रांची एसएसपी से मिला महानगर दुर्गा पूजा समिति का प्रतिनिधिमण्डल, किया अभिनंदन

PHOTON NEWS RANCHI : रांची महानगर श्री दुर्गा पूजा समिति का एक प्रतिनिधिमण्डल समिति के मुख्य संयोजक सह अध्यक्ष डॉ. अजीत सहाय के नेतृत्व में रांची के नवनियुक्त वरीय आरक्षी अधीक्षक चंदन कुमार सिन्हा से रांची समाहरणालय स्थित उनके कार्यालय में जाकर मिला और उन्हें चुनरी एवं पुष्प गुच्छ देकर उनका भव्य स्वागत किया।

वरीय आरक्षी अधीक्षक को चूनरी ओढ़ाकर सम्मानित करते समिति के लोग। ● फोटोन न्यूज

उक्त अवसर पर प्रतिनिधिमण्डल की ओर से समिति के अध्यक्ष डॉ. अजीत सहाय ने दुर्गा पूजा से संबंधित विस्तृत जानकारी दी एवं आग्रह किया कि दुर्गा पूजा निमित जो भी सुविधाएं मिलती रही है वह सभी सुविधाएं इस वर्ष भी मुहैया कराया जाए, जिसमें सुरक्षा एवं यातायात व्यवस्था के साथ साथ मूर्ति विसर्जन हेतु वाहनों कि आवश्यकता प्रथम दृष्टया अति आवश्यक है ताकि सभी पूजा आयोजक समय से विसर्जन शोभायात्रा संपन्न करा सकें।

उपरोक्त भेंट में महानगर समिति द्वारा आग्रह पूर्वक आगामी दुर्गा पूजा की सफलता हेतू महानगर श्री दुर्गा पूजा समिति के प्रधान कार्यालय में रांची के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के सभी पूजा पंडाल के आयोजकों के साथ बैठक कर दुर्गा पूजा को एतिहासिक रूप से सफल बनाने हेतु आमंत्रित किया। प्रतिनिधिमण्डल में मुख्य रूप से रांची महानगर श्री दुर्गा पूजा समिति के अध्यक्ष डॉ. अजीत सहाय, श्री महावीर मंडल के अध्यक्ष जयसिंह यादव, चंचल चटर्जी, प्रदीप रॉय बाबू, राजकिशोर, राजन वर्मा, रविंद्र वर्मा, संजय सिन्हा गोपाल, राणा रंधीर, रमेश सिंह, अमरनाथ साहू, जगदीश वर्मा, बादल सिंह, जिला ग्रामीण दुर्गा पूजा के अध्यक्ष तपेश्वर केसरी, वीरेंद्र साहू सहित अन्य गणमान्य लोग शामिल थे। उपरोक्त जानकारी महानगर समिति के प्रदीप रॉय बाबू ने दी।

पलामू में 24 घंटे के दौरान आसमानी कहर से नाबालिग समेत चार की मौत

PHOTON NEWS PALAMU : जिले में पिछले 24 घंटे के दौरान आसमानी कहर से नाबालिग समेत चार की मौत हो गई। दो की मौत जिले के नौडीहा बाजार थाना क्षेत्र में, जबकि एक की हुसैनाबाद एवं एक की मौत चैनपुर थाना क्षेत्र में हुई है। तीन शव का पोस्टमार्टम एमआरएमसीएच मेदिनीनगर में किया गया, जबकि एक शव का अंत्यपरीक्षण हुसैनाबाद अनुमंडलीय अस्पताल में हुआ।

छत्तरपुर अनुमंडल अंतर्गत नौड़ीहा बाजार प्रखंड के विशुनपुर गांव के हबरुआ निवासी शिवकुमार राम की पत्नी गनौरा देवी (40) अपने खेत में घास काट रही थी। उसी क्रम में करीब तीन बजे अचानक गर्जन के साथ बारिश होने लगी। महिला घास उठा कर पास में महुआ के पेड़ के नीचे जाकर छिप गई। उसी दौरान व्रजपात हुआ और महिला को अपनी चपेट में ले लिया।

गांव के लोग आनन फानन में महिला के इलाज के लिए छत्तरपुर अनुमंडलीय अस्पताल ले गए, जहां इलाज के दौरान चिकित्सकों ने महिला को मृत घोषित कर दिया। दूसरी घटना नौडीहा बाजार प्रखंड के शाहपुर पंचायत के अमावडीह में हुई। यहां के निवासी संजय यादव का पुत्र पिंटू कुमार (12) ने अपनी गाय को घर के पास खेत में घास चरा रहा था, इस क्रम में व्रजपात हुआ और घटनास्थल पर ही उसकी मौत हो गयी। पंचायत के मुखिया जितेंद्र कुमार भारती ने घटना की खबर सुनते ही घटना स्थल पर पहुंचे एवं अंचल अधिकारी और थाना प्रभारी की तत्काल सूचना दी। सूचना मिलते ही थाना प्रभारी तत्काल शव अंतिम परीक्षण के सदर अस्पताल मेदिनीनगर भेज दिया।

हुसैनाबाद अनुमंडल क्षेत्र अंतर्गत प्रखंड मुख्यालय से लगभग 25 किलोमीटर दूर अवस्थित महुडंड पंचायत के ग्राम केमो प्रतापपुर निवासी दिनेश परहिया (32) की मौत वज्रपात की चपेट में आने से हो गई। यह घटना 17 सितंबर रविवार की शाम छह बजे की है, जब अपने घर पर था, उस समय हल्की बारिश हो रही थी, तभी अचानक बिजली गिरी और दिनेश परहिया की वज्रपात की चपेट में आने से मौत हो गई। इस संदर्भ में उसके बड़े भाई सुरेश परहिया ने हुसैनाबाद थाना को सूचित किया, जिसके बाद सोमवार की अहले सुबह दिनेश परहिया के शव का पोस्टमार्टम किया गया।

दिनेश परहिया की मौत की खबर से महुडंड पंचायत में शोक की लहर व्याप्त है, वहीं मुखिया पति सह समाजसेवी शिव शंकर यादव ने पीड़ित परिवार के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करते हुए उन्हें हरसंभव सरकारी मदद दिलाने का आश्वासन दिलाया।

चौथी घटना जिला मुख्यालय मेदिनीनगर से सटे चैनपुर थाना क्षेत्र के बहेरा गांव में हुई। यहां वज्रपात होने से रमेश कुमार सिंह का (22) पुत्र नीरज कुमार सिंह की मौत हो गई।

बीज विक्रेताओं का 15 दिवसीय CERTIFICATE COURSE प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

नर्सरी आमदनी का मुख्य स्रोत, किसान ज्यादा से ज्यादा तैयार करें नर्सरी : डॉ हेमंत पांडेय

PHOTON NEWS LOHARDAGA : लोहरदगा स्थित कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) में बीज विक्रेताओं का 15 दिवसीय सर्टिफिकेट कोर्स प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन हो गया। कार्यक्रम के अंतिम दिन केवीके के मुख्य वैज्ञानिक डॉ हेमंत कुमार पांडेय, वैज्ञानिक डॉ एलिश्मा खाखा, उद्यान विभाग के सहायक प्रहलाद कुमार ने प्रशिक्षणार्थियों को कृषि को लेकर महत्वपूर्ण बिंदुओं पर जानकारी दी।

प्रशिक्षु को सर्टिफिकेट देते कृषि वैज्ञानिक। ● फोटोन न्यूज

डॉ हेमन्त पांडेय ने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। इसके लिए परंपरागत खेती से लेकर प्राकृतिक खेती दोनों को एक साथ बढ़ावा दिया जा रहा है। इसी प्रयास में ऑर्गेनिक फार्मिंग भी है। ऐसी खेती पर जोर दिया जा रहा है, जिससे किसानों की आमदनी बढ़े। उन्होंने नर्सरी तैयार करने एवं कृषि को बढ़ावा देने पर जोर देते हुए कहा कि किसान ज्यादा से ज्यादा नर्सरी तैयार करें। नर्सरी आमदनी का मुख्य स्रोत है।

डॉ एलिश्मा ने कहा कि किसान मिट्टी जांच एवं बीजों का उपचार करने के बाद मौसम के अनुरूप ही खेती करें। इससे पैदावार भी ज्यादा होगी। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार हमने आजकल खेती करने का ट्रेंड अपनाया है, इससे आज हमारे जमीन की उर्वरा शक्ति कम होती जा रही है। अधिक उपज के लालच में हम रासायनिक खाद का उपयोग कर रहे हैं, जो आने वाले दिनों के लिए घातक है। उन्होंने कहा कि जमीन धीरे-धीरे बंजर होती जा रही है। इसका एक मात्र कारण है कि हम जैविक विधि से पारंपरिक खेती को भूल चुके हैं। इसलिए हमें जैविक खेती को बढ़ावा देने का जरूरत है।

उद्यान सहायक प्रहलाद कुमार ने कहा कि उद्यान विभाग के सहयोग से लोहरदगा जिला में स्ट्रॉबेरी एवं ड्रैगन फ्रूट की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पारंपरिक खेती के अलावा किसान छोटे-छोटे जगहों पर स्ट्रॉबेरी एवं ड्रैगन फ्रूट की खेती कर अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते है। उन्होंने कहा खेती से संबंधित तकनीकी सहयोग के लिए किसान विभाग से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

काम दिलाने के नाम पर युवक से नगदी, बाइक व मोबाइल की ठगी

PHOTON NEWS PALAMU : काम दिलाने का झांसा देकर एक ठग ने युवक से मोटरसाइकिल, मोबाइल फोन और पांच हजार रुपए ठग लिया। युवक ने भी अनजान व्यक्ति पर भरोसा कर उसे सब सौंप दिया। जब ठग वापस नहीं लौटा तब उसे ठगे जाने का अहसास हुआ और शहर थाना में अज्ञात ठग के खिलाफ सोमवार को एफआईआर दर्ज करायी। ठगी का शिकार होने वाला युवक पंकज राम पलामू जिले के लेस्लीगंज थाना क्षेत्र के अखोरी पतरा गांव का रहने वाला है।

उसके गांव में एक व्यक्ति खुद को ठेकेदार बताते हुए पहुंचा। उसने पंकज को ट्रैक्टर चालक की नौकरी देने की बात कही। ठग ने उससे कहा कि इस काम के लिए ड्राइविंग लाइसेंस की जरूरत होगी। लाइसेंस बनवाने में आठ हजार रुपए खर्च होंगे। पांच हजार रुपए युवक से मांगे और खुद तीन हजार रुपए खर्च वहन करने की बात कही। युवक उसकी बातों में आ गया और अपनी शादी में दहेज में मिली अपाची मोटरसाइकिल जेएच 03एक्स3419 पर ठग को बैठाकर मेदिनीनगर काम करने आ गया।

साहित्य समाज चौक के पास एसबीआई एटीएम के पास जब दोनों पहुंचे तो ठग ने मोटरसाइकिल रुकवायी और फोन करने के लिए पहले युवक से फोन मांगा, फिर उससे ड्राइविंग लाइसेंस बनवाने के लिए पांच हजार रुपए लिये और कागजात के फोटो कॉपी कराने की बात कह कर उसका मोटरसाइकिल लेकर फरार हो गया। .युवक ठग का घंटों इंतजार करता रहा। जब वह नहीं लौटा तब युवक थाना पहुंचा और पुलिस को सारी बात बताई।

BRIEF NEWS

सीआईडी डीजी आपराधिक मामलों को लेकर आज करेंगे समीक्षा बैठक

RANCHI : सीआईडी डीजी अनुराग गुप्ता मंगलवार को सभी क्षेत्रीय डीएसपी और इंस्पेक्टर के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से समीक्षा बैठक करेंगे। इस दौरान राज्य के प्रत्येक जिले के अपराध की समीक्षा और संगठित आपराधिक गिरोह के अपराधियों को चिन्हित करना और उस पर हो रही कार्रवाई की समीक्षा करेंगे। जानकारी के अनुसार बैठक में इसके अलावा जेल में बंद अपराधियों के बारे में सूचनाएं एकत्रित करना और हर माह जेल से बाहर निकलने वाले अपराधियों की सूची बनाना, जिलों से कांडों के निष्पादन और अनुसंधान की स्थिति के संबंध में जानकारी प्राप्त करना, महिला और बच्चों के ऊपर हो रहे अपराधों से संबंधित कांडों से अवगत कराना, दो गुटों के बीच आपसी गैंगवार और रंगदारी को लेकर आपसी टकराव की संभावना के बारे में जानकारी प्राप्त करना और मानव तस्करी के संबंध में जिले की स्थिति और हो रही कार्रवाई के बारे में चर्चा की जाएगी।

पुलिसकर्मियों को जैप-10 में मिलेगी ट्रेनिंग

RANCHI : समस्याओं से परेशान हवलदार स्तर के पुलिसकर्मियों की जैप- 10 में ट्रेनिंग होगी। इससे संबंधित आदेश सोमवार को आईजी ट्रेनिंग ने जारी कर दिया है। जारी आदेश में कहा गया है कि हवलदार से एएसआई के पद पर प्रोन्नति के लिए 1500 हवलदारों को 12 सप्ताह की ट्रेनिंग कराने का निर्देश दिया गया है। इस सूची में 23 ऐसे हवलदार हैं, जिन्होंने खुद का पारिवारिक और चिकित्सीय समस्याओं के कारण वर्तमान में आदेशित प्रशिक्षण संस्थान से किसी अन्य प्रशिक्षण संस्थान में योगदान कर प्रशिक्षण पूर्ण करने का अनुरोध किया है। इसे लेकर इन सभी 23 हवलदार को जैप-10 ट्रेनिंग सेंटर में ट्रेनिंग पूरा करने का आदेश दिया जाता है। जैप-10 ट्रेनिंग के लिए इन पुलिसकर्मियों अजीत कुमार सिंह,प्रमोद कुमार साव, रामबली मंडल, मेरी एलिसवा, खुर्शीद आलम, कनक सिंह, प्रेमानंद महतो, संतोष कुमार यादव, दुबराज हांसदा, अशोक कुमार दुबे, कमेलश शर्मा, उदय प्रताप सिंह,मंजू देवी, पुनेश कुमार, सुबोध कुमार यादव, संजय कुमार सिंह, हसन खान, शिव नारायण यादव, हितेंद्र उपाध्याय, लक्ष्मी लामा, शत्रुघ्न चौधरी, सुरेन्द्र बैठा और कमेश महतो के नाम शामिल हैं।

फेडरेशन ऑफ झारखंड चेंबर ऑफ कॉमर्स का चुनाव 23 को, मतदान 24 को

RANCHI : फेडरेशन ऑफ झारखंड चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के सत्र 2023-24 के लिए मतदान 24 सितंबर को रांची के मोरहाबादी स्थित बिरसा मुंडा फुटबॉल मैदान में आयोजित होगा। इस वर्ष कुल 39 प्रत्याशियों के बीच कार्यकारिणी समिति का चुनाव होगा। इसके साथ साउथ और नॉर्थ छोटानागपुर प्रमंडल क्षेत्रीय उपाध्यक्ष का चुनाव भी होगा। इन दो प्रमंडल में दो-दो प्रत्याशी मैदान में हैं। सभी प्रत्याशियों को सीरियल नंबर अलॉट कर दिया गया है। इसके अलावा बाकी बचे चार प्रमंडल कोयलांचल, कोल्हान, पलामू और संताल परगना प्रमंडल में 1-1 प्रत्याशी होने के कारण उन्हें निर्विरोध चयनित किया गया, जिसमें पलामू से आकाश आनंद, कोयलांचल से प्रदीप कुमार अग्रवाल, कोल्हान से नितिन प्रकाश और संताल परगना से प्रितम गाड़ोदिया को उपाध्यक्ष चुना गया। इसकी औपचारिक घोषणा आमसभा में की जाएगी।

atomy
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

देवघर के तत्कालीन DC मंजूनाथ भजंत्री के खिलाफ पीड़क कार्रवाई पर रोक जारी

निशिकांत दुबे की याचिका पर झारखंड हाईकार्ट में हुई बहस, अगली सुनवाई 24 नवंबर को

SPECIAL REPORTER RANCHI : झारखंड हाई कोर्ट में सांसद निशिकांत दुबे को प्लेन से दिल्ली जाने के क्रम में देवघर में रोकने के खिलाफ दिल्ली में दर्ज जीरो एफआईआर को निरस्त करने को लेकर देवघर के तत्कालीन डीसी व आईएएस मंजूनाथ भजंत्री की याचिका पर सुनवाई हुई। मामले में राज्य सरकार एवं प्रतिवादी की ओर से जवाब दाखिल करने के लिए समय की मांग की गई। कोर्ट ने मामले की सुनवाई की। कोर्ट ने याचिकाकर्ता मंजूनाथ भजंत्री के खिलाफ पीड़क कार्रवाई पर रोक अगली सुनवाई तक जारी रखी है। सोमवार को हाई कोर्ट के न्यायाधीश एस के द्विवेदी की कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई 24 नवंबर निर्धारित की। प्रतिवादी निशिकांत दुबे की ओर से पार्थ जालान और अमित सिन्हा ने पैरवी की। पिछली सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार की ओर से बताया गया था कि दिल्ली में दर्ज कराई गई जीरो एफआईआर झारखंड पुलिस को सौंप दी गई है।

पूर्व की सुनवाई में कोर्ट को बताया गया था कि निशिकांत दुबे ने आरोप लगाया है कि 31 अगस्त 2022 को शाम में जब वह प्लेन से दिल्ली जा रहे थे तो तत्कालीन देवघर उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री के कहने पर सुरक्षाकर्मियों ने देवघर एयरपोर्ट पर उन्हें रोका और जान से मारने की धमकी भी दी। उनके सरकारी कार्य में बाधा डालने का भी निशिकांत दुबे ने आरोप लगाया है। याचिकाकर्ता का कहना था कि उनके खिलाफ लगाए गए सारे आरोप निराधार हैं इसलिए इसे संबंधित जीरो एफआईआर को रद किया जाए।

अभी जेल में ही रहेंगे कारोबारी विष्णु अग्रवाल, ईडी कोर्ट ने खारिज की बेल

RANCHI : रांची लैंड स्कैम मामले में जेल में बंद आरोपी कारोबारी विष्णु अग्रवाल को अब जमानत नहीं मिलेगी। ईडी कोर्ट ने उसकी जमानत याचिका खारिज कर दी है। आज ईडी कोर्ट की ओर से कारोबारी विष्णु अग्रवाल की जमानत याचिका पर फैसला सुनाया गया। बीते बुधवार को ईडी कोर्ट में दोनों पक्षों की सुनवाई पूरी हो गई थी, इसके बाद कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रख लिया था। विष्णु अग्रवाल ने ईडी कोर्ट से स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए जमानत देने की गुजारिश की थी। न्यूक्लियस मॉल के मालिक विष्णु अग्रवाल को 31 जुलाई को गिरफ्तार किया गया। वे इसी दिन ईडी के सामने पूछताछ के लिए हाजिर हुए थे। इस दौरान अधिकारियों के सवालों का जवाब देने के बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इस मामले के वे 13वें आरोपी हैं, जिनकी गिरफ्तारी हुई है। गिरफ्तारी के दूसरे दिन उन्हें कोर्ट में पेश करने के बाद न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया था। इसके बाद ईडी रिमांड पर लेकर पूछताछ भी कर चुकी है। रांची के चेशायर होम रोड स्थिति 1 एकड़ जमीन और सिरमटोली स्थिति सेना की जमीन की मनी लॉन्ड्रिंग कर खरीददारी करने का आरोप है। ईडी ने रिमांड नोट में इस बात का जिक्र किया है कि चेशायर होम रोड की जमीन के कागजात फर्जी तरीके कोलकाता स्थित रजिस्ट्री ऑफिस में तैयार किए गये थे। जमीन की खरीददारी में मनी लॉन्ड्रिंग भी हुई है। फिलहाल, खराब स्वास्थ्य की वजह से कारोबारी विष्णु अग्रवाल रिम्स के ट्रामा सेंटर में कई दिनों से भर्ती हैं। इसी आधार पर उन्होंने जामनत के लिए अर्जी लगाई थी। जिसे आज खारिज कर दिया गया है। इस मामले में अब तक एक दर्जन से अधिक आरोपियों की गिरफ्तारी हो चुकी है।

शिबू सोरेन लोकपाल मामले में 29 को अगली सुनवाई

RANCHI : दिल्ली हाईकोर्ट में झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) अध्यक्ष और झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन से जुड़े लोकपाल मामले सुनवाई हुई। दिल्ली हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस सुब्रमण्यम प्रसाद की अदालत में शिबू सोरेन की याचिका पर अब 29 सितंबर को सुनवाई होगी। सोमवार को यह मामला सुनवाई के लिए सूचीबद्ध था लेकिन समय के अभाव के कारण सुनवाई नहीं हो पायी। शिबू सोरेन की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल और अधिवक्ता प्रज्ञा सिंह बघेल पक्ष रख रहे हैं। वहीं लोकपाल की ओर से एसजीआई (सॉलिसिटर जेनरल ऑफ इंडिया) तुषार मेहता पक्ष रख रहे हैं। पूर्व की सुनवाई में अदालत ने डीए (आय से अधिक संपति) मामले में शिबू सोरेन के खिलाफ लोकपाल के सामने कार्यवाही पर रोक लगा दी थी। जिसे कोर्ट ने अगली सुनवाई तक (29 सितंबर) तक विस्तार दिया है। शिबू सोरेन ने अधिकार क्षेत्र के आधार पर सीबीआई की प्रारंभिक जांच की कार्यवाही और आदेश को चुनौती दी है।

मनी लाउंड्रिंग केसः वीरेंद्र राम, नीरज मित्तल और राम प्रकाश भाटिया को बेल देने से कोर्ट का इंकार

CRIME REPORTER RANCHI : सरकारी टेंडर में कमीशन के जरिये करोड़ों रुपये की अवैध कमाई करने और उस कमाई को वैध बनाने के लिए मनी लाउंड्रिंग करने के आरोपी निलंबित चीफ इंजीनियर वीरेंद्र राम उनके सहयोगी नीरज मित्तल और राम प्रकाश भाटिया की जमानत अर्जी खारिज कर दी गई है। रांची पीएमएलए (प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट) की स्पेशल कोर्ट ने 15 सितंबर (शुक्रवार) की सुनवाई के बाद सभी आरोपियों की बेल पर ईडी और बचाव पक्ष की बहस पूरी होने के बाद अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था।

अमन को नहीं मिली बेल

RANCHI : गैंगस्टर अमन श्रीवास्तव की जमानत अर्जी पर रांची एटीएस (एंटी टेररिस्ट स्क्वॉड) की स्पेशल कोर्ट में सुनवाई हुई। सोमवार को हुई सुनवाई के दौरान कोर्ट ने अमन को बेल देने से इनकार करते हुए उसकी जमानत अर्जी खारिज कर दी है। गैंगस्टर अमन श्रीवास्तव को एटीएस की टीम ने मुंबई से गिरफ्तार किया था। जिसके बाद उसे बिरसा मुंडा केंद्रीय कारा में न्यायिक हिरासत में रखा गया है। अमन श्रीवास्तव की ओर से अधिवक्ता अनिल कंठ और अधिवक्ता अश्विनी प्रिया ने बहस की। इस मामले में अमन श्रीवास्तव को उसके गैंग के दो सदस्यों के बयान के आधार पर आरोपी बनाया गया था। गैंग के दोनों सदस्यों को एटीएस ने व्यवसाइयों से रंगदारी के रूप में वसूले गए लाखों रुपयों के साथ गिरफ्तार किया था। जिसके बाद अमन श्रीवास्तव के खिलाफ कांड संख्या 10/2023 दर्ज की गई है।

वकील ने दर्ज कराई FIR

RANCHI : रांची सिविल कोर्ट के एक अधिवक्ता ने कोतवाली थाना में प्राथमिकी दर्ज करवाई है। अधिवक्ता अमरेन्द्र ओझा ने अपनी प्राथमिकी में आरोप लगाया है कि उनपर सिविल कोर्ट परिसर में जानलेवा हमला किया गया है और यह हमला किसी और ने नहीं बल्कि सिविल कोर्ट के ही एक अधिवक्ता ने किया है। अमरेन्द्र ओझा द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत में कहा गया है कि वह 4 अगस्त को प्रैक्टिस के लिए सिविल कोर्ट पहुंचे तो देखा कि अधिवक्ता नईमुद्दीन उर्फ नूरी और उनकी पत्नी के बीच गाली-गलौज और हाथापाई हो रही थी। जिसके बाद वह बीच बचाव करने गए। इसा दौरान अधिवक्ता नूरी ने 8-10 लोगों के साथ मिलकर उनपर जानलेवा हमला कर दिया। अधिवक्ता अमरेन्द्र ओझा ने घटना के करीब 40 दिनों बाद प्राथमिकी के लिये आवेदन दिया है और कोतवाली थाना ने प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

मंत्री बादल पत्रलेख ने सुनी लोगों की समस्याएं दिये कई दिशा-निर्देश

RANCHI : प्रदेश कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में सोमवार को जन सुनवाई कार्यक्रम के तहत कांग्रेस भवन में राज्य के कृषि मंत्री बादल पत्रलेख ने राज्य के विभिन्न जिलों से आये लोगों की समस्याओं को सुना। मंत्री ने लोगों की समस्याओं के निराकरण के लिए पदाधिकारियों को दूरभाष के माध्यम से कई दिशा- निर्देश दिये। साथ ही लोगों के आवेदनों पर संज्ञान लेते हुए विशेष टिप्पणी के साथ लिखित रूप से भी संबंधित पदाधिकारियों को निर्देश देने का कार्य किया। जन-सुनवाई कार्यक्रम में रांची, रामगढ़, पलामू, गिरिडीह, दुमका लातेहार, बोकारो जिला के विभिन्न प्रखंडों से लोग अपनी शिकायत लेकर पहुंचे। जनसमस्या में मुख्य रूप से कोल्ड स्टोरेज निर्माण, तालाब, डीप बोरिंग, पेंशन योजना, सुखाड़, सब्जी बाजार निर्माण संबंधित मामलों के निराकरण के लिए कृषि मंत्री से आग्रह किया गया।

पूर्व डीसी छवि रंजन की कोर्ट से गुजारिश

लैंड स्कैम के दूसरे केस में ना लिया जाए हिरासत में

CRIME REPORTER RANCHI : निलंबित आईएएस और रांची के पूर्व डीसी छवि रंजन ने ईडी कोर्ट में सोमवार को गुहार लगायी है। रंजन के अधिवक्ता अभिषेक चौधरी ने कोर्ट में याचिका दायर की है कि जमीन से जुड़े दूसरे केस में उन्हें न्यायिक हिरासत में ना लिया जाए। इसके लिए ईडी के विशेष न्यायाधीश दिनेश राय की अदालत में याचिका दाखिल की गयी है। ईडी जमीन घोटाले से जुड़े दो मामलों की जांच कर रही है। दोनों ही मामलों में छवि रंजन को अभियुक्त बनाया गया है। इसके बाद अब ईडी छवि रंजन को

ज्यूडिशियल रिमांड पर लेना चाहती है, लेकिन छवि रंजन ने कोर्ट में याचिका दाखिल कर कोर्ट से यह गुहार लगाई है कि उन्हें दूसरे मामले में न्यायिक हिरासत में न लिया जाए। छवि रंजन की याचिका पर अदालत में 22 सितम्बर को सुनवाई होगी।

शहर को जाम की समस्या से निजात दिलाने के लिए पुलिस ने बांटे पर्चे

सड़क पर सामान और फुटपाथ पर दुकान ना लगाने की अपील

CRIME REPORTER RANCHI : रांची पुलिस की ओर से शहर को जाम की समस्या से निजात दिलाने के लिए सोमवार को शहर के सभी क्षेत्रों में पंपलेट का वितरण किया गया। एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा के निर्देश पर लोगों के बीच पंफलेट का वितरण किया गया।

सभी थाना प्रभारियों की ओर से सड़क जाम की समस्या में सुधार लाने के लिए रांची पुलिस के जरिये छपा हुआ अनुरोध पंफलेट सड़क के किनारे स्थित दुकानदारों, ठेला-खोमचा एवं अन्य स्ट्रीट वेंडर को बांटना शुरू कर दिया गया है। रांची शहर के सभी थाना की ओर से पंफलेट बांटने का अभियान चलाया जा रहा है। इससे पूर्व पुलिस ने रांचीवासियों से अपील कि थी कि वे अपनी दुकान का सामान सड़क और फुटपाथ पर ना लगाएं। दुकानों का सामान सड़क पर लगाने से निगम क्षेत्र में जाम लगता है। शहर में फ्लाईओवर के निर्माण के कारण ट्रैफिक व्यवस्था पर बोझ बढ़ा है। ऐसे में आम जनता को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ठेले, खोमचे वाले अथवा अन्य स्ट्रीट वेंडर आवागमन को बाधित नहीं करें। सभी नागरिकों से अपील है कि एंबुलेंस की आवाज सुनने पर उसे आगे जाने का रास्ता दें। ऐसा करने पर कई लोगों की जान बच सकती है। पुलिस ने लोगों से अपील की है कि वे अपने वाहनों को जहां-तहां नहीं लगाएं। इन सभी कार्यों का अनुपालन सुनिश्चित करवाने के लिए 20 सितम्बर से विशेष अभियान चलाया जाएगा।

गोलीकांड का आरोपी जमीन की पैरवी लेकर पहुंचा एसएसपी ऑफिस, पुलिस ने भेजा जेल

CRIME REPORTER RANCHI : मार्च 2023 में नामकुम थाना क्षेत्र अंतर्गत केतारी बगान स्थित जमीन के विवाद हुए गोलीकांड के नामजद आरोपी अशोक पासवान एवं रंजीत भुटकूमार उर्फ रंजीत पाहन नाम बदलकर जमीन की पैरवी के लिए वरीय पुलिस अधीक्षक के कार्यालय पहुंचे। शक होने पर एसएसपी के निर्देश पर कोतवाली पुलिस के सहयोग से नामकुम पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। दोनों पर कई धाराओं के तहत मामले दर्ज हैं। जानकारी के अनुसार 17 मार्च को केतारी बगान स्थित शिव मंदिर के समीप स्थित जमीन पर दावेदारी को लेकर दो पक्षों में मारपीट एवं अवैध हथियार से फायरिंग की गई थी। जिसमें पूर्व में दोनों ओर के दर्जनों आरोपियों को गिरफतार कर पुलिस ने जेल भेजा था। वहीं, घटना के बाद से अशोक पासवान पिता परमेश्वर पासवान, अयोधयापुरी, चुटिया एवं रंजीत भुटकूमार उर्फ रंजीत पाहन पिता स्व कमल भुटकूमार सामलौंग नामकुम फरार चल रहे थे। दोनों एक अन्य युवक के साथ नाम बदलकर एसएसपी से जमीन की पैरवी कराने पहुंचे थे।

आरोपियों को गिरफ्तार कर पैदल कोर्ट जे लाती पुलिस ● फोटोन न्यूज

कोर्ट जाते समय पुलिस की गाड़ी हुई खराब

गिरफ्तार दोनों आरोपियों को पुलिस कोर्ट लेकर निकलीं परंतु कुछ दूर जाने के बाद गाड़ी खराब हो गई। जिसके बाद दोनों आरोपियों को 100 मीटर पैदल घुमाकर पुलिस ने दूसरे वाहन से कोर्ट भेजा। पुलिस के द्वारा भूमाफियाओं पर की गई। इस कार्रवाई की चर्चा पूरे क्षेत्र में है। कार्रवाई की सराहना करते हुए कहा कि इससे भूमाफियाओं एवं जमीन दलालों में भय का माहौल बनेगा।

एसएसपी के निर्देश पर तीनों को कोतवाली थाना लाया गया। जहां से एक युवक चकमा देकर फरार हो गया।

उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा ने की भू-अर्जन से संबंधित मामलों की समीक्षा

रैयतों को मुआवजा का भुगतान करने का दिया निर्देश

PHOTON NEWS RANCHI : उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा ने सोमवार को भू-अर्जन से संबंधित मामलों की समीक्षात्मक बैठक आयोजित की। बैठक के दौरान उपायुक्त में अधिकारियों को कई दिशा निर्देश दिए। उपायुक्त ने एनएच-23 गुमला पलामू परियोजना में अवशेष 18 करोड़ रुपये का भुगतान के लिए अतिरिक्त भू-अर्जन पदाधिकारी सह अंचल अधिकारी बेड़ो को निर्देश दिया। इसके पीआईयू गुमला के परियोजना निदेशक भू-अर्जन कार्यालय से समन्वय बना कर रैयतों को मुआवजा भुगतान कराना सुनिश्चित कराने को कहा।

अधिकारियों के साथ भू-अर्जन से संबंधित मामलों की समीक्षात्मक बैठक करते रांची डीसी।

उपायुक्त ने मौजा बारीडीह स्थित कल्याण विभाग की ओर से संचालित आवासीय बालिका विद्यालय को मौजा जरिया में स्थान्तरित करने के लिए जमीन हस्तांतरण के लिए संबंधित विभाग को सूचना देते हुए विद्यालय का निर्माण कार्य आरंभ कराने का निर्देश परियोजना निदेशक गुमला को दिया।

उपायुक्त ने भारत माला परियोजना (ओरमांझी से गोला सेक्शन) के अवशेष 66 करोड़ रुपये का मुआवजा भुगतान पूर्व घोषित आवार्ड के आधार पर ही करने का निर्देश दिया । संरचना के मामले में उन्हीं रैयत्तो को भुगतान करने का आदेश दिया गया कि जो उस सड़क निर्माण में किसी प्रकार का बाधा उत्पन्न नहीं कर रहें हैं।

इसके अलावा उपायुक्त ने अरगोड़ा मोड़ से कटहल मोड़ सड़क चौडीकरण, सीरम टोली फ्लाई ओवर, कांटा टोली फ्लाई ओवर और अन्य दूसरे सड़क के लिए अधिग्रहित भूमि का मुआवजा भुगतान में तेजी लाने के लिए संबंधित अंचल अधिकारी के साथ बैठक करने के लिए अपर समाहर्त्ता रांची को निर्देश दिया। उपायुक्त ने पथ निर्माण विभाग (ग्रामीण एवं शहरी) के परियोजनाओं में अधिग्रहित भूमि में मुआवजा भुगतान के लिए, पथ निर्माण विभाग (ग्रामीण एवं शहरी) के सहायक अभियंता एवं कार्यपालक अभियंता को योजना में आने वाली कठिनाइयों को प्रस्तुत करने का निर्देश दिया ।

राज्य में अभी और होगी बारिश, यलो अलर्ट जारी

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड में 18 सितंबर से लेकर 21 सितंबर तक के लिए येलो अलर्ट जारी किया गया है। इस दौरान राज्य में कई स्थानों पर हल्के से मध्यम दर्जे की बारिश हो सकती है। मौसम विभाग ने अगले एक से दो दिनो में तापमान में भी दो से तीन डिग्री की गिरावट होने की संभावना जाहिर की है। इस दौरान मौसम विभाग ने वज्रपात से सावधान रहने की अपील की है। आज मौसम विभाग ने सामान्यत : बादल छाए रहने और एक दो बार हल्के से मध्यम दर्जे की बारिश की संभावना जाहिर की है। मौसम विभाग ने अधिकतम तापमान 30 डिग्री और न्यूनतम तापमान 23 डिग्री के आसपास होने का भी अनुमान लगाया है। इसी तरह का अनुमान मौसम विभाग ने 21 सितंबर तक के लिए जारी किया है। मौसम विभाग के अनुसार किसानों को इससे राहत मिलने की संभावना है। मौसम विभाग के वैज्ञानिक अभिषेक आनंद ने कहा, मानसून के विदाई के वक्त राज्य के विभिन्न हिस्सों में होने वाली बारिश से किसानों को बड़ी राहत मिल सकती है।बारिश की कमी की भी काफी हद तक भरपाई हो रही है। मौसम विभाग के अनुसार राज्य में 21 सितंबर तक बारिश की संभावना है। अगले पांच दिनों तक राज्य में मौसम को लेकर किसी बड़े बदलाव की संभावना जाहिर नहीं की गयी है। 17 से 18 सितंबर तक राज्य के कई हिस्सों में हल्के से मध्यम दर्जे की बारिश हो सकती है। 19 सितंबर को भी मौसम का मिजाज ऐसा ही रहेगा और 21 सितंबर तक मौसम का मिजाज ऐसा बना रह सकता है। बंगाल की खाड़ी में साइक्लोनिक सकुर्लेशन और एक मानसून टर्फ है जिस कारण बारिश हो रही है।

BRIEF NEWS

ब्राह्मणी नदी में लापता हुए विजय गुप्ता का शव बरामद

ROURKELA : राउरकेला के ब्राह्मणी नदीं के पुराने ब्रिज से शुक्रवार की शाम नदी में कूदकर लापता हुए युवक का शव सोमवार को बरामद कर लिया गया है। लापता युवक विजय गुप्ता का शव रविवार की दोपहर बणई थाना क्षेत्र से नदी में तैरते हुए बरामद किया गया। ज्ञात हो कि विजय शुक्रवार की शाम अपने स्कूटी से ब्राह्मणी पुल पर पहुंचा था। इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता, उसने नदी में छलांग लगा दी। फायर टीम ने तलाश की लेकिन विजय नहीं मिला। बणई के पास ब्राह्मणी नदी में शव तैरता हुआ मिला। फायर ब्रिगेड ने शव बरामद किया तो पता चला कि वह विजय गुप्ता का है।

हाइवा की चपेट में आने से बाइक सवार की मौत, सड़क जाम

SUNDARGARH : हेमगीर थाना अंतर्गत गर्जनबहाल बिजली सब स्टेशन के पास कोयला लदे हाइवा के चपेट में आने से बाइक सवार डुडुका निवासी अजय भोई (35 वर्षीय) की मौत हो गई। घटना के समय हाइवा कुलडा खदान से कोयला लेकर कनिका साइडिंग जा रहा था। अजय अपनी बाइक से डुडुका की ओर जा रहा था। तभी हाइवा से उसकी बाइक की टक्कर हो गई। दुर्घटना के बाद लोगों ने सड़क जाम कर 25 लाख रुपये मुआवजे और नौकरी की मांग करने लगे। पूर्व विधायक व भाजयुमो नेता योगेश कुमार सिंह की उपस्थिति में हेमगीर थाना प्रभारी जगदीश बारा, बालिंगा पुलिस चौकी अधिकारी अधिकारी चित्तगुप्त चोंपिया, डुडुका के सरपंच जयकृष्ण माझी, डीपीएस कंपनी के अधिकारी मनोज राउल ने चर्चा की और तीन लाख रुपये मुआवजा देने व मृतक की पत्नी रश्मिता भोई को तुलिंगा सैनिक माइंस में नौकरी देने का लिखित वादा किया था। जिसके बाद में सड़क जाम हटा लिया गया।

मां समलेश्वरी चैरिटेबल ट्रस्ट 20 को मनाएगा नुउखाई उत्सव

ROURKELA : मां समलेश्वरी चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से पवित्र नुनाखाई या नबन्ना 20 सितंबर को मनाया जाएगा। इस अवसर पर, हनुमान बाटिका में मां समलेश्वरी के मंदिर में एक विशेष पूजा का आयोजन किया जाएगा। सामाजिक कार्यकर्ता पद्मिनी मणिगराही, सदस्य अनुश्री दास और आरएसपी के सेवानिवृत्त वरिष्ठ अधिकारी अजीत मोहन पुजारी ने यह जानकारी प्रेस क्रांफ्रेंस में दी। उन्होंने नुउखाई उत्सव कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। नृत्य और गीत के साथ पंचवद्य प्रदर्शन आकर्षण में से एक होगा।

अहिराबंध जगन्नाथ मंदिर के पश्चिमी द्वार का उद्घाटन

ROURKELA : विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर राउरकेला के प्राचीन देवपीठ अहिराबंध जगन्नाथ मंदिर के पश्चिमी द्वार का उद्घाटन किया गया है। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में रघुनाथपाली के विधायक सुब्रत तराई, राउरकेला के अतिरिक्त जिला पाल एवं आरएमसी आयुक्त डॉ. शुभांकर महापात्र,आयपा समिति के अध्यक्ष रंजन शशि, श्री श्री जगन्नाथ बैद्यनाथ महाप्रभु मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष गिरिजा शंकर द्विवेदी, आयापा समिति के कई सदस्य, अहिराबंध के मुख्य उपासक जगन्नाथ। इस अवसर पर ट्रस्ट बोर्ड के सभी सदस्य उपस्थित थे।

एयरपोर्ट में भगवान विश्वकर्मा का हुआ पूजा

ROURKELA : राउरकेला हवाई अड्डा में भगवान विश्वकर्मा का पूजा अर्चना रविवार को हुई। एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया के अधिकारी हेमंत कुमार, एयर ट्रैफिक कंट्रोलर अभिषेक और उनकी टीम साथ में मौसम विभाग के अधिकारी ने पूजा अर्चना की। इस दौरान एलाइंस एयर के प्रमुख राहुल कुमार सिंह और उनकी टीम, अग्निशमन के अधिकारी, एयरपोर्ट सुरक्षा के सुरक्षा प्रमुख और उनकी सुरक्षा टीम स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया के अधिकारी सम्मिलित हुए।

एक माह के अंदर शुरू होगा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण कार्य : NIRAL PURTI

विधायक ने प्रखंड स्तरीय स्वास्थ्य मेले का किया उद्घाटन, स्टाल का किया निरीक्षण

PHOTON NEWS CHAIBASA : एक माह के अंदर ही मझगांव स्वास्थय उपकेंद्र में नया भवन का निर्माण शुरू किया जाएगा। जिससे प्रखंड के लोगों को बेहतर स्वास्थ सुविधा मिल सके। यह बातें मझगांव प्रखंड में आयोजित प्रखंड स्वास्थ्य मेला का उद्घाटन करते हुए मझगांव विधानसभा के विधायक निरल पूर्ति ने कही।

फीता काटकर मेले का उद्घाटन करते विधायक व अन्य। ● फोटोन न्यूज

विधायक ने कहा कि मझगांव सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का भवन काफी जर्जर हो चुका था। इसको संज्ञान में लेते हुए सरकार के पास बात पहुंचा कर इसका निर्माण कार्य का शुरूआत किया जा रहा है। जल्द ही प्रखंड के लोगों को बेहतर स्वास्थ सुविधा का लाभ मिलने वाली है। स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने एंबुलेंस की मांग की है इसको देखते हुए संबंधित पदाधिकारी से बात कर एंबुलेंस की सुविधा मझगांव में दी जाएगी।

विधायक ने कहा कि प्रखंड में सुविधा का अभाव है, इसके बावजूद हम बेहतर इलाज कैसे कर सकें इस पर हमें फोकस करना है। झारखंड सरकार भी इसके लिए संकल्पित है कि आम जनता को ज्यादा से ज्यादा लाभ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में मिल सके। इसके लिए सुविधा भी दी जा रही है। सभी प्रखंडों में नया सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बनाया जा रहा है। जिसमें सभी सुविधा मौजूद होगी।

उन्होंने कहा तिक मझगांव सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भी जल्द ही नये भवन का निर्माण किया जाएगा। इसका शिलान्यास मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने गुवा शहीद दिवस में कर चुके हैं। एक माह के अंदर ही भवन का भूमि पूजन भी मेरे द्वारा किया जाएगा इसके बाद निर्माण कार्य शुरू होगा। इसलिए आने वाले भविष्य में आप सभी को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में ही खून जांच, एक्सरे, अल्ट्रासाउंड समेत अन्य सुविधा मिलेगी। मरीजों की सुविधा के लिए ही हेमंत सोरेन सरकार प्रखंड प्रखंड में स्वास्थ्य मेला आयोजित कर सुविधा देने का प्रयास कर रही है। इसका लाभ हम सभी को लेना चाहिए। मैं चिकित्सकों से भी अनुरोध करता हूं कि स्वास्थ विभाग से मिलने वाले सभी योजना के बारे ग्रामीणों को जानकारी दें। जिससे बीमार व्यक्ति स्वास्थ विभाग से सुविधा के लाभ ले सके।

इसके बाद विधायक के द्वारा स्वास्थ्य मेला में लगे स्टाल का निरीक्षण किया। स्टाल में भी विधायक ने ज्यादा से ज्यादा लोगों को स्वस्थ संबंधी योजना के बारे में जानकारी देने का निर्देश दिया। इस मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी जोसेफ कांडुलना, प्रखंड चिकित्सा पदाधिकारी डॉक्टर सनातन चातार, जिला परिषद सदस्य पूनम जेराई, जिला परिषद सदस्य लंकेश्वर तामसोई, प्रखंड प्रमुख सरस्वती चातार, गोकुल पोलाई, मो. मोजाहिद, धनुरजय तिरिया, राजेश पिंगुवा, रितेश तामसोय, मासूम रजा, दिलवर हुसैन समेत अन्य मौजूद थे।

हिंदू आस्था के साथ खिलवाड़ बर्दास्त नहीं, अपनी हद में रहे कंपनी : बन्ना

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : टाटा कंपनी द्वारा कदमा में एलाइड दुर्गा पूजा समिति, एन1 टाइप में मां दुर्गा की पूजा बेदी तोड़ दिया गया। इस खबर की जानकारी जैसे ही स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता को मिली वे भड़क गए, तुरंत अपने पुराने आंदोलनकारी रूप में वे घटना स्थल पर पहुंचे और कंपनी के अधिकारियों को फटकार लगाया, तुरंत काम रुकवा कर भड़के स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता ने कंपनी द्वारा बनाई जा रहीं दीवार को खुद से तोड़ दिया। उसके बाद स्वयं नारियल फोड़ कर बेदी की पूजा अर्चना की।

बेदी की पूजा करते मंत्री बन्ना गुप्ता। ● फोटोन न्यूज

उन्होंने अधिकारियों को स्पष्ट करते हुए कहा कि माँ दुर्गा की पूजा यही होगी। अपनी हद में रहे कंपनी। उन्होंने कहा कि कंपनी आस्था के साथ खिलवाड़ न करें नहीं तो स्वयं आंदोलन करेंगे। उन्होंने कहा कि इसकी शिकायत कंपनी के उच्च अधिकारियों से करेंगे।

उन्होंने घोषणा कि है कि मंगलवार से वे अपने निजी कोष से माँ की बेदी का निर्माण कराएंगे और स्वयं भी कारसेवा करेंगे।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने विप्र फाउंडेशन के कार्यों को सराहा

PHOTON NEWS ROURKELA : दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन में महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से विप्र फॉउंडेशन के प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। उन्हें संस्था के विभिन्न सेवा कार्यों के बारे में अवगत कराया। जयपुर में निमार्णाधीन सेंटर फॉर एक्सीलेंस एंड रिसर्च श्री परशुराम ज्ञानपीठ, अरुणाचल प्रदेश में भगवान परशुराम जी की दिव्य मूर्ति प्रतिष्ठा प्रकल्प, उदयपुर के स्वामी आत्मानंद सरस्वती विप्र लेक सिटी कॉलेज, सूरत के विप्र गौरव भवन, कोलकाता के केसर कुंज, वैद्य पंडित रामनारायण शर्मा विप्र उच्च शिक्षा सहयोग योजना, लालसोट की आदि शंकर ई-लाइब्रेरी, चंदादेवी गायत्रीदेवी कन्या विवाह शगुन योजना सहित विप्र फाउंडेशन की शिक्षा, संस्कार और रोजगारमूलक गतिविधियों को राष्ट्रपति जी ने बड़े मनोयोग से सुना और सराहना की। ओडिशा के महेन्द्रगिरि पर्वत पर स्थित परशुराम विश्राम स्थल सहित देश के विभिन्न भागों में स्थित परशुराम तीर्थ के उन्नयन हेतु विप्र फाउंडेशन ने राष्ट्रपति जी से सहयोग और आशीर्वाद की अपील की।

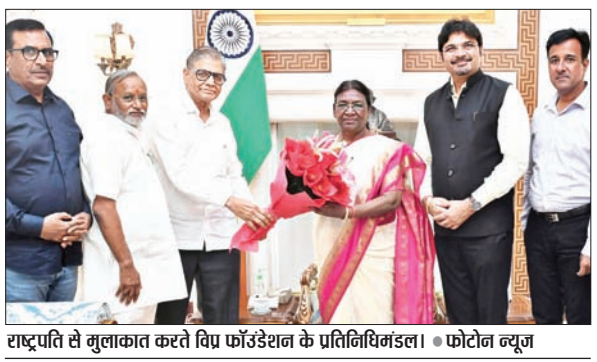

राष्ट्रपति से मुलाकात करते विप्र फॉउंडेशन के प्रतिनिधिमंडल। ● फोटोन न्यूज

राष्ट्रपति भवन पहुंचे इस प्रतिनिधि मंडल में विप्र फॉउंडेशन के संरक्षक जगदीश मिश्रा , राष्ट्रीय संगठन महामंत्री डॉ सुनील शर्मा, ओडिशा प्रांतीय कार्यकारी महेश शर्मा, कमल शर्मा, गजानंद शर्मा शामिल थे।

विधायक ने दोकट्टा में किया नए ट्रांसफॉर्मर का उद्घाटन

लोगों की सामूहिक समस्याओं का समाधान प्राथमिकता के आधार पर होगा : दीपक बिरुवा

PHOTON NEWS CHAIBASA : टोंटो प्रखंड के दोकट्टा टोला कमारबासा ऊपर टोली में नये ट्रांसफार्मर का उद्घाटन चाईबासा सदर के विधायक दीपक बिरुवा ने फीता काटकर किया। दोकट्टा के इस टोला के लोग विगत कई दिनों से कमारबासा ऊपर टोली में विगत दिनों बज्रपात से ट्रांसफार्मर जल गया था। जिससे ग्रामीण बिजली की कमी का दंश झेल रहे थे। विधायक के प्रयास से जले ट्रांसफार्मर के स्थान पर नया ट्रांसफार्मर लगाया गया। इसपर ग्रामीणों ने धन्यवाद देते हुए विधायक के प्रति आभार प्रकट किया।

ट्रांसफार्मर का उद्घाटन करते विधायक दीपक बिरुवा व अन्य। ● फोटोन न्यूज

ट्रांसफार्मर उद्घाटन के पश्चात विधायक ने ग्रामीणों के संग बैठक कर उनकी समस्याएं सुनी व समस्याओं के समाधान का भरोसा दिया। इस दौरान विभिन्न गांवों टोलों के लोगों ने सड़क, पेयजल व बिजली के संबंध में समस्याएं रखते हुए उनका समाधान करने की मांग की। दोकट्टा गांव के टोला मुंडा बस्ती व स्कूल बस्ती के ग्रामीणों ने नल जल योजना के तहत संचालित निर्माण कार्यों में अनियमितता बरते जाने की शिकायत करते हुए उन्हें दुरुस्त कराने की मांग रखी। इसके अलावा दोकट्टा गांव के बीच से होकर चलगी व सालीकुटी गांव जाने वाली कच्ची जर्जर सड़क को पक्कीकरण करने की मांग रखी। इसके अलावा दोकट्टा गांव में एक ट्रांसफार्मर खराब पड़ी है। जिस कारण लोग अंधेरे में रहने को विवश है। ग्रामीणों ने खराब पड़े ट्रांसफार्मर को दुरुस्त कर बिजली मुहैया कराने की मांग रखी।

विधायक ने ग्रामीणों की समस्याओं से अवगत होने के बाद संबंधित विभाग के अधिकारियों से संपर्क कर समस्याओं का समाधान समय पर करने आश्वासन दिया। विधायक ने कहा कि वे लोगों की सामूहिक समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर समाधान

राउरकेला में व्रजपात से 3 युवकों की मौत, 4 घायल

PHOTON NEWS ROURKELA : शहर और आसपास के इलाके विश्वकर्मा पूजा के उत्सवी माहौल के दौरान एक दुखद घटना हुई है। रविवार को ब्राहम्णी तरंग थाना गर्जन पंचायत के बिरुआल गांव में फुटबॉल मैच चल रहा था । कुछ लोगों ने बारिश से बचने के लिए एक पेड़ के नीचे शरण ली। अचानक आकाशीय बिजली गिरने से 3 युवकों की मौके पर ही मौत हो गई और 4 अन्य घायल हो गए।

मृतकों की पहचान बणई इलाके के सुनीत ओराम, लाठीकटा इलाके के विशाल बिलुंग और शांति प्रसाद लाकड़ा के रूप में की गई है। इस घटना की खबर से क्षेत्र में शोक छा गया। बिजली और तूफान के दौरान पेड़ों के नीचे रहना हमेशा सुरक्षित नहीं होता है। इस संबंध में लगातार जागरूकता और जानकारी के बावजूद, गलतियों की पुनरावृत्ति से नुकसान हो रहा है।

टाटा मोटर्स प्लांट में हुआ बोनस समझौता, कर्मचारियों को मिलेगा 10.1% वार्षिक बोनस

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : टाटा मोटर्स जमशेदपुर प्लांट में सोमवार को बोनस समझौता किया गया जिसके तहत कर्मचारियों को 10.1 प्रतिशत वार्षिक बोनस का लाभ दिया जायेगा। अब तक हुए समझौते में कर्मचारियों के स्थायीकरण की संख्या सर्वाधिक है जिसके तहत 355 बाइ सिक्स (अस्थायी) कर्मचारियों को स्थायी किया जायेगा। स्थायी होने वालों में टाटा मोटर्स अस्पताल की पांच नर्सें भी शामिल हैं। स्थायी होने वाले कर्मचारियों की सूची दुगार्पूजा के पहले जारी कर दी जायेगी। वित्तीय वर्ष 2018-19 में 12.9 बोनस और 306 बाइ सिक्स कर्मचारी स्थायी हुए थे। इस बार कर्मचारियों को औसतन 43, 485 रुपये व अधिकतम 57,900 रुपये मिलेंगे। वहीं सुपर एन्यूएशन के तहत करीब 200 कर्मचारियों को 13,030 रुपये अनुदान मिलेगा। बोनस का लाभ टाटा मोटर्स के 5,600 स्थायी कर्मियों को मिलेगा। 3100 बाइ सिक्स कर्मचारियों को 8.33 प्रतिशत बोनस मिलेगा। बोनस की राशि कर्मचारियों के बैंक अकाउंट में अक्तूबर महीने में भेज दी जायेगी।

समझौते पर प्रबंधन की ओर से वाइस प्रेसिडेंट ऑपरेशन विशाल बादशाह, प्लांट हेड रवींद्र कुलकर्णी, एचआर हेड मोहन गड़ा, आइआर हेड सौमिक राय ने साइन किया। यूनियन की ओर से अध्यक्ष गुरमीत सिंह, महामंत्री आरके सिंह, कार्यकारी अध्यक्ष अनिल कुमार शर्मा, कार्यकारी अध्यक्ष एचएस सैनी, ज्वाइंट जनरल सेक्रेटरी अजय भगत, बीके शर्मा, उपाध्यक्ष आरआर दुबे, अशोक उपाध्याय, प्रकाश विश्वकर्मा, मनोज कुमार, प्रवीण कुमार, पीके मोहंती, अमित सिंह, पवन कुमार, सचिव सिंटू कुमार, पीके दास, एमके सिंह, रवि जायसवाल, अरविंद कुमार, चंद्रकांत यादव, केपी शर्मा, मनोज शर्मा, कोषाध्यक्ष एसएन सिंह ने हस्ताक्षर किये।

एसआइ शशि भूषण राय 15 हजार रुपये घूस लेते रंगेहाथ गिरफ्तार

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : बागबेड़ा थाने में पदस्थापित एसआइ शशि भूषण राय को भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) जमशेदपुर की टीम ने 15 हजार रुपये घूस लेते रंगेहाथ गिरफ्तार कर लिया। सोमवार की सुबह करीब 11.30 बजे की गयी छापेमारी में आरोपी के पास से रिश्वत के रुपये बरामद किये गये। टीम आरोपी एसआइ को लेकर उसके घर पहुंची जहां कई दस्तावेजों की जांच की गयी। प्रक्रिया पूरी होने के बाद आरोपी को एसीबी थाना, सोनारी लाया गया।

एसआइ शशि भूषण राय पर जमीन विवाद के केस से नाम हटाने के बदले शिकायतकर्ता से 20 हजार रुपये की रिश्वत मांगे जाने का अरोप हैं।

कुछ ऐसा है पूरा मामला : बागबेड़ा निवासी राजू सिंह ने 15 सितंबर को इस मामले की एसीबी से शिकायत कर बताया था कि जमीन विवाद में बेवजह उसका नाम दर्ज किया गया है। अब नाम हटाने के लिए एसआइ शशि भूषण राय 20 हजार रुपये की मांग कर रहा है।

टीम ने राजू को रुपये देकर एसआइ शशि भूषण के पास भेजा। सोमवार को 15 हजार रुपये देने के बाद की बात हुई थी। शेष पांच हजार रुपये का भुगतान मंगलवार को किया जाना था। इससे पहले ही टीम ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। शशि भूषण कुछ माह बाद रिटायर होने वाला था।

पश्चिमी सिंहभूम जिला क्रिकेट संघ प्रबंधन समिति की बैठक संपन्न

SR RUNGTA B DIVISION लीग 11 अक्टूबर से

PHOTON NEWS CHAIBASA : पश्चिमी सिंहभूम जिला क्रिकेट संघ के कार्यकारिणी समिति की बैठक स्थानीय बिरसा मुंडा क्रिकेट स्टेडियम के एसआर रूंगटा पैवलियन में रविवार को हुई। बैठक की अध्यक्षता संघ के अध्यक्ष मुकुंद रुंगटा ने की। सत्र 2023-24 की इस पहली बैठक में सर्वप्रथम पिछले बैठक की कार्यवाही को संपुष्ट किया गया। तत्पश्चात वित्तीय वर्ष 2022-23 के अंकेक्षित आय-व्यय के लेखा जोखा को अनुमोदित किया गया। संघ के महासचिव ने सदस्यों को बताया कि गत वित्तीय वर्ष में संघ को विभिन्न मदों में लगभग 25.5 लाख रुपये प्राप्त हुए, जबकि उसकी तुलना में 20.8 लाख रुपये खर्च हुए। इस प्रकार जिला क्रिकेट संघ को लगभग 4.7 लाख रुपये की बचत हुई है।

बैठक में शामिल प्रबंधन समिति के सदस्य। ● फोटोन न्यूज

प्रबंधन समिति ने व्यापक विचार विमर्श के बाद आगामी सत्र के क्रिकेट कैलेंडर को भी सर्वसम्मति से हरी झंडी दे दी। जिला क्रिकेट संघ द्वारा जारी कैलेंडर के अनुसार नए क्रिकेट सत्र की शुरूआत एसआर रूंगटा बी डिविजन लीग से होगा। यह प्रतियोगिता 11 अक्टूबर से प्रारंभ होकर 30 नवंबर को समाप्त होगा। 1 दिसंबर से एसआर रुंगटा ए डिवीजन लीग की शुरूआत होगी। जिसका फाइनल मैच पूर्व की भांति स्वर्गीय सीताराम रूंगटा के जन्मदिवस के अवसर पर 27 दिसंबर को होगा।

जिला क्रिकेट संघ के महासचिव असीम कुमार सिंह ने बताया कि जिला क्रिकेट संघ से निबंधित फ्रेंडस क्लब चाईबासा के 50 वर्ष पूरे होने के अवसर पर एक आमंत्रण टी-20 क्रिकेट प्रतियोगिता संबंधित क्लब द्वारा कराए जाने का प्रस्ताव जिला क्रिकेट संघ ने स्वीकार किया है। अतः इस बार एसआर रूंगटा ए डिवीजन लीग की समाप्ति के बाद 28 दिसम्बर से 15 जनवरी तक टी-20 क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन होगा। 17 जनवरी से 15 फरवरी तक एके जैन जिला नॉक आउट क्रिकेट प्रतियोगिता एवं 17 फरवरी से 4 मार्च तक बीएल नेवटिया टी-20 क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित किए जाएंगे। 11 मार्च से 30 अप्रैल तक मैदान को जेएससीए के द्वारा आयोजित अंतर जिला क्रिकेट प्रतियोगिता के लिए आरक्षित रखा गया है। ज्ञान चंद जैन अंतर स्कूल क्रिकेट प्रतियोगिता इस बार 1 मई से 15 मई के बीच आयोजित होंगे। जबकि 17 मई से प्रारंभ होकर 5 जून को समाप्त होनेवाले कार्यक्रम के साथ सत्र 2023-24 का समापन होगा।

एसआर रूंगटा पैवलियन के बाहर व अंदर लगेंगे हाई रिजोल्युशन सीसीटीबी कैमरे

जिला क्रिकेट संघ की प्रबंधन समिति में सदस्यों के आग्रह पर अध्यक्ष मुकुंद रुंगटा ने स्टेडियम में हाई रिजोलुशन का सीसीटीबी कैमरा लगवाने की स्वीकृति प्रदान की है। जिला क्रिकेट संघ के महासचिव ने बताया कि सीसीटीबी कैमरा एसआर रूंगटा पैविलियन के बाहर और अंदर दोनों छोर पर तथा पैविलियन के प्रत्येक फ्लोर पर लगाए जाएंगे। उन्होंने बताया कि इससे न केवल बिरसा मुंडा क्रिकेट स्टेडियम की सुरक्षा में वृद्धि होगी बल्कि मैच के दरम्यान मैदान के अंदर खिलाड़ियों के गलत व्यवहार को भी रिकार्ड किया जा सकेगा। जिला क्रिकेट संघ की बैठक में संघ के अध्यक्ष मुकुंद रुंगटा के अलावे दोनों उपाध्यक्ष बनवारी लाल नेवटिया एवं सुशील कुमार सिंघानिया, अवैतनिक महासचिव असीम कुमार सिंह, कोषाध्यक्ष सुप्रियो फौजदार, तीनों संयुक्त सचिव ओम प्रकाश गुप्ता, अनूप बर्मन, फैज अहमद तथा कार्यकारिणी समिति के सदस्य जितेंद्र चौबे, राज कुमार मूंधड़ा, आलम अंसारी, जय प्रकाश तथा गत वर्ष एसआर रूंगटा ए डिवीजन लीग की चैंपियन टीम यंग झारखंड क्रिकेट क्लब चाईबासा के सचिव श्याम किशोर प्रसाद उपस्थित थे।

उरांव समाज का फुटबाल एवं खेलकूद प्रतियोगिता 28 एवं 29 दिसंबर को

पुस्तक का विमोचन करते अतिथि व अन्य। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS CHAIBASA : स्थानीय कुडुख सामुदायिक भवन पुलहातु में रविवार को उरांव समाज खेल एवं सांस्कृतिक संस्थान की एक बैठक संघ के अध्यक्ष संचू तिर्की की अध्यक्षता में हुई। बैठक का मुख्य रूप से करमा त्योहार के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाले दो दिवसीय फुटबॉल एवं खेलकूद प्रतियोगिता पर अंतिम निर्णय लिया गया। यह आयोजन 28 व 29 दिसंबर को स्थानीय सिंहभूम स्पोर्ट्स एसोसिएशन ग्राउंड में किया जाएगा। जिसमें मुख्य अतिथि पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर एवं विशिष्ट अतिथि विधायक दीपक बिरूवा शामिल होंगे। बैठक में सर्व समिति से लॉटरी के माध्यम से टाइसीट भी बनाया गया। आयोजन के सफल संचालन के लिए उपसमिति का भी गठन किया गया। उप समिति में महिलाओं की भूमिका अहम होगी।

करमा-धर्मा की कहानी एवं करम गीत पुस्तक के तृतीय संस्करण का विमोचन : इस अवसर पर कर्मा त्योहार से संबंधित करमा-धर्मा की कहानी एवं करम गीत पुस्तक के तृतीय संस्करण का भी विमोचन किया गया। आदिवासी उरांव समाज संघ के अध्यक्ष संचू तिर्की, सचिव अनिल लकड़ा, बाबूलाल बरहा, सहदेव किसपोट्टा, लक्ष्मण बरहा एवं अन्य पदाधिकारी तथा महिला सदस्यों के द्वारा संयुक्त रूप से पुस्तक का विधिवत विमोचन किया गया।

7 करोड़ के लिए हुई थी नीलेश मुखिया की हत्या, करीबी ने ही रची साजिश

पटना। बिहार में सबसे अधिक चर्चा में रहे नीलेश मुखिया मर्डर केस में बड़ा खुलासा हुआ है। पटना पुलिस का कहना है कि 7 करोड़ की जमीन के लिए वार्ड पार्षद पति नीलेश मुखिया की हत्या करवाई गई थी।

यह हत्या किसी और ने नहीं बल्कि उनके ही करीबियों ने करवाई है। पटना पुलिस ने कुर्की के बाद बड़ी कार्रवाई करते हुए तीन और अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है। तीनों आरोपियों में दीघा इलाके के अजय राय उर्फ विशाल, उसका चाचा उदय कुमार और संतोष कुमार शामिल है।

पुलिस ने इनके पास से पिस्टल, मैग्जीन, 4 कारतूस और एक क्रेटा कार बरामद किए। पटना पुलिस ने जो खुलासे किए वह काफी चौंकाने वाले थे। पटना एसएसपी राजीव मिश्रा ने बताया है कि अजय राय और नीलेश राय अच्छे दोस्त थे। दोनों जमीन का कारोबार करते थे। अटल पठ पर करीब 7 करोड़ मूल्य के 7 कट्ठा जमीन के लिए दोनों के बीच मनमुटाव हो गया। इसके बाद अजय, उदय और संतोष नीलेश मुखिया के विरोधी पप्पू और धप्पू राय से जा मिले। इसके बाद इनलोगों ने मिलकर हत्या की साजिश रची। पटना पुलिस के अनुसार, अजय राय के खिलाफ करीब दर्जन भर केस दर्ज हैं। अजय राय नीलेश मुखिया को अपने रास्ते से हटाना चाहता था। इसलिए वह उसके विरोधियों से जा मिला।

इसके बाद उसकी हत्या के लिए शूटर हायर किए गए। इन शूटरों को 25 लाख रुपये देने की बात तय हुई। लेकिन अजय राय ने अपने दोस्तों की मदद लेकर पटना सिटी से इमरान से संपर्क किया। इसके बाद साढ़े 5 लाख की सुपारी देकर शूटर से नीलेश मुखिया की हत्या करवा दी। एसएसपी ने बताया कि इस मामले में शामिल अन्य आरोपियों की तलाश में छापेमारी चल रही है। कुछ लोगों से पूछताछ चल रही है।

थानेदार थाने से बेच रहा था शराब

वैशाली। शराबबंदी वाले बिहार में थाने से ही शराब बेची जा रही है। बेचने वाला कोई और नहीं खुद थानेदार और सिपाही हैं। इसका खुलासा शनिवार की रात 3 बजे पटना से वैशाली के सराय थाना पहुंची उत्पाद विभाग की टीम ने किया। थाना परिसर में खड़ी पिकअप में शराब लोड किया जा रहा था। वहां टीम ने शराब तस्करों के साथ साथ पुलिसकर्मियों को रंगे हाथ पकड़ लिया। यह शराब मालखाने से निकाली गई थी। मामले की जांच खुद एसपी कर रहे हैं। फिलहाल एसपी ने सराय थानाध्यक्ष बिदुर कुमार, मालखाना प्रभारी मुनेश्वर कुमार, संतरी सुरेश कुमार, थाना पहरा पर उपस्थित चौकीदार रामेश्वर राम को निलंबित कर दिया है। अब इनपर केस भी दर्ज किया जाएगा। चारों पुलिसकर्मियों से नगर थाने में पूछताछ की जा रही। है। थाना क्षेत्र से जब्त 3728.220 लीटर शराब को नष्ट करना था। शनिवार को 2782.590 लीटर शराब को नष्ट किया गया था। बाकी 945.630 लीटर विदेशी शराब को पुलिस वालों ने सुरक्षित रख लिया और उसे मालखाने में रख दिया। फिर पुलिसकर्मियों ने तस्करों से सौदा किया। आधी रात बाद थाने में तस्कर पिकअप लेकर शराब लोड करने पहुंचा। मालखाने से निकालकर शराब वाहन में लोड किया जाने लगा। इसी दौरान पटना से पहुंची उत्पाद विभाग की टीम ने पूरा प्लान फेल कर दिया। एसपी रवि रंजन ने बताया कि शराब का विनष्टीकरण क्यों नहीं हुआ? इसपर पूछताछ की जाएगी। फिलहाल सराय थानाध्यक्ष का प्रभार मुख्यालय हेड क्वार्टर डीएसपी देवेंद्र प्रसाद को सौंपा गया है। जब्त शराब और पिकअप की जिम्मेदारी इन्हीं को दी गई है।

औरंगाबादः वज्रपात से 6 लोगों की मौत

औरंगाबाद । बारिश का कहर देखने को मिला। 6 लोगों की मौत हो गई, जिसमें मनीष कुमार (12), प्रिंस कुमार (16), रोहित कुमार (15), सिधेश्वर यादव (55), हरेंद्र सिंह (30) और युगल राम (60) शामिल हैं। वहीं तीन लोग बलेंद्र यादव, जीरामणि देवी और मुसाफिर राम घायल हो गए। वज्रपात की पहली घटना रफीगंज थाना क्षेत्र शारदा बिगहा गांव में हुई। जहां वज्रपात की चपेट में आकर पिंटू यादव के बेटे मनीष कुमार (12) की मौत हो गई। मनीष खेत की तरफ जा रहा था और बारिश होने के कारण पेड़ के नीचे छिप गया, लेकिन तेज आवाज के साथ बिजली कड़की और पेड़ पर ही आ गिरी। इसके चपेट में मनीष आ गया। सूचना पर पहुंचे परिजन उसे उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए जहां चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। वज्रपात की दूसरी घटना बन्देया थाना क्षेत्र के बक्सर और प्रतापपुर गांव की है, जहां दो किशोर और एक अधेड़ की मौत हो गई। बक्सर गांव में रंजीत पासवान के बेटे प्रिंस कुमार (16), रवि रंजन ठाकुर के बेटे रोहित कुमार (15) और प्रतापपुर गांव के सिधेश्वर यादव (55) की मौत वज्रपात की चपेट में आने से हो गई। सभी अपने अपने गांव स्थित बधार में भैंस चरा रहे थे और तेज आवाज के साथ आई वज्रपात ने उनकी जान ले ली।\ वज्रपात की तीसरी घटना देव थाना क्षेत्र के बारा गांव की है, जहां एक युवा किसान की मौत हो गई और एक व्यक्ति जख्मी हो गया। मृतक की पहचान गांव के ही राजकुमार सिंह के पुत्र हरेंद्र सिंह (30) के रूप में की गई है। हरेंद्र सिंह अपने घर का इकलौते संतान था। वो अपने पीछे एक तीन वर्ष और एक डेढ़ वर्षीय पुत्र को छोड़ गया है। रविवार की शाम बारिश को देखते हुए हरेंद्र गांव के ही ग्रामीण बलेंद्र यादव के साथ बधार की तरफ चर रहे मवेशियों को लाने गए, जैसे ही वे बधार की तरफ बढ़े अचानक तेज गति से बिजली कड़की और वे वज्रपात की चपेट में आ गए। साथ में रहे बलेंद्र यादव थोड़ी दूर होने के कारण इस हादसे से बाल बाल बच गए, जिनका इलाज सदर अस्पताल में चल रहा है। वज्रपात की चौथी घटना माली थाना क्षेत्र के सोरी गांव में घटी, जहां वज्रपात की चपेट में आने से किसान युगल राम (60) की मौत हो गई और एक महिला समेत दो लोग घायल हो गए।घायलों की पहचान जीरामणि देवी और मुसाफिर राम के रूप में की गई है, जिनका इलाज सदर अस्पताल में कराया जा रहा है। बताया जाता है कि युगल राम अपने धान की खेत में सोहनी कर रहे थे, तभी बिजली कड़की और वो वज्रपात की चपेट में आ गए। घटना स्थल पर ही उनकी मौत हो गई। वज्रपात से हुई मौत के बाद स्थानीय पुलिस ने शवों को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम की करवाई में जुट गई है। वहीं नगर थाना की पुलिस ने बारा गांव निवासी हरेंद्र सिंह की मौत के बाद उनके शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया है।

संक्षिप्त डायरी

बक्सर में युवाओं के लिए रोजगार का अवसरः अहमदाबाद में 15 से 18 हजार की मिलेगी नौकरी

बक्सर । बेरोजगार युवाओं को के लिए एक दिवसीय रोजगार शिविर का आयोजन किया गया है। यह शिविर 18 सितंबर को यानी आज सोमवार को बिहार सरकार, श्रम संसाधन विभाग, जिला नियोजनालय, बक्सर के तत्वाधान में संयुक्त श्रम भवन, बक्सर जो औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, बक्सर के परिसर में अवस्थित है में लगेगा।18 वर्ष से ऊपर उम्र वाले इच्छुक युवा अपना शैक्षणिक प्रमाण पत्र लेकर सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक पंहुच सकते है। जिला नियोजनालय,पाधाधिकारी अनीश तिवारी द्वारा बताया गया की युवाओं को रोजगार देने के लिए स्किलडेस्क प्रा0 लि0 के कम्पनी के द्वारा भाग लिया जायेगा। जिसमें अलग अलग कम्पनी के द्वारा टाटा मोटर, बजाज ऑटो प्रा0 लि0 कंपनियों में काम करने का ऑफर और रोजगार दिया जायेगा इस शिवर में जिसकी उम्र सीमा का 18 साल या इससे ऊपर है भाग ले सकते है। जानकारी देते हुए बताया गया की नियोक्ता द्वारा आई0टी0आई0, डिप्लोमा योग्यताधारी युवक एवं युवतियों को ट्रेनी के पद पर नियुक्ति की जायेगी। इस रोजगार में नियोक्ता के द्वारा कुल 50 पदों की रिक्तियाँ दर्शाई गई है। युवाओं रोजगार 15000-18000 महीना का मिलेगा। जिसका कार्य स्थल अहमदाबाद है जिला नियोजन पदाधिकारी बक्सर ने कहा है की इच्छुक आवेदकों से अपील किया है कि वे दिनांक 18 सितंबर को जिला नियोजनालय बक्सर में सुबह 10:00 बजे से शाम 04:00 बजे तक सभी शैक्षणिक प्रमाण पत्रों जैसे आधार कार्ड, बायोडाटा एवं मैट्रिक के साथ जिला नियोजनालय बक्सर में आकर अवसर का लाभ उठा सकते हैं। कार्य स्थल पर ही एन0सी0एस0 पर निःशुल्क निबंधन किया जायेगा।

कंटेनर से टकराई बीजेपी सांसद सतीश चंद्र दुबे की कार

पटना । बीजेपी सांसद सतीश चंद्र दुबे की कार कंटेनर से टकरा गई। हादसा सोमवार सुबह गांधी सेतु पर हुआ। सासंद का प्राइवेट अस्पताल में इलाज चल रहा है। ड्राइवर और बॉडीगार्ड भी गंभीर रूप से घायल हैं। सिर और शरीर के दूसरे भाग में सीरियस इंजरी हैं। जानकारी के अनुसार हाजीपुर से पटना आने के दौरान गांधी सेतु के पिलर नंबर-46 के 200 मीटर के पास 10 चक्का ट्रक में सांसद के ड्राइवर ने पीछे से टक्कर मार दी। लग्जरी कार की रफ्तार इतनी तेज थी कि गाड़ी का अगला हिस्सा पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। इस दौरान सांसद सतीश चंद्र दुबे, समेत चार घायल हो गए। घटना के बाद साथ चल रहे स्कॉर्ट टीम ने सभी को कार से बाहर निकाला, जिसमें एक ड्राइवर, दो बॉडी गार्ड को सिर समेत अन्य कई हिस्सों में गंभीर चोट आई हैं। तीन लोगों को ढटउल्ल में भर्ती कराया गया है और सांसद का मेदांता अस्पताल में इलाज किया जा रहा है। जानकारी के अनुसार सांसद की स्थिति में सुधार है। एक बॉडीगार्ड का पैर फ्रैक्चर हो गया है। सभी का इलाज जारी है।

बिहार में बन सकता है एक और नया गठबंधन!

I.N.D.I.A-NDA का जिन्हें नहीं मिला सहारा, वो पार्टियां हो सकती हैं एकजुट

पटना। बिहार की राजनीति में 2024 लोकसभा चुनाव से पहले एक नया फ्रंट बनाने की तैयारी है। यह नया फ्रंट I.N.D.I.A और NDA से अलग हो सकता है। इसमें पप्पू यादव की पार्टी जाप, मायावती की पार्टी बसपा, ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम और मुकेश सहनी की पार्टी वीआईपी शामिल हो सकती है। हालांकि, बसपा सुप्रीमो मायावती ने साफ कर दिया है कि उनकी पार्टी अकेले चुनाव लड़ेगी।

बसपा के प्रदेश अध्यक्ष शंकर महतो ने कहा- छोटी-छोटी पार्टियां हमारे साथ अगर आना चाहती है तो इस पर फैसला बहन मायावती करेंगी। गठबंधन का हमारा अनुभव ठीक नहीं है। जब-जब गठबंधन हुए हैं तो हमारा वोट ट्रांसफर हो जाता है। लेकिन गठबंधन में शामिल पार्टियों के वोट ट्रांसफर नहीं हो पाते हैं। इसलिए अंतिम फैसला मायावती जी का होगा। पप्पू यादव की पार्टी जाप के प्रदेश अध्यक्ष राघवेंद्र सिंह कहते हैं- बीजेपी की सरकार को रोकना है। इसे लेकर हम कोशिश कर रहे हैं। हमारी वैचारिक पृष्ठभूमि और राजनीतिक विचारधारा इंडिया गठबंधन के काफी करीब है। इसलिए हमारी पार्टी के कार्यकर्ता भी चाहते हैं कि इंडिया गठबंधन के साथ जाएं। उन्होंने कहा कि पिछले दिनों पार्टी का मंथन शिविर का आयोजन किया गया था। इसमें फैसला लिया गया कि पार्टी लोकसभा में 12 सीट और विधानसभा में 100 सीट पर चुनाव लड़ेगी।

इसे लेकर छोटी पार्टियों के नेता हमारे संपर्क में हैं। एआईएमआईएम, बसपा, वीआईपी के नेताओं से हमारी बात हो रही है। हम लोग अभी महागठबंधन के निर्णय का इंतजार कर रहे हैं। एआईएमआईएम के प्रदेश अध्यक्ष अख्तरुल ईमान कहते हैं कि हम नहीं चाहते फिरकापरस्त ताकतें गद्दी पर विराजमान हों। चाहे वह बिहार की बात हो या केन्द्र की बात। बीजेपी को गद्दी से उतारने के लिए एक संतुलित गठबंधन की जरूरत है। इंडिया गठबंधन जो बनाया है, उसमें दलितों और मुस्लिमों को नजरअंदाज किया गया है। हम लोग शुरू से कह रहे है कि बीजेपी को गद्दी से उतारने के लिए मिलकर काम करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि इंडिया गठबंधन वाले हमें अपने साथ लेने को तैयार नहीं है। अब हमारी मजबूरी हो गई है कि बिहार में छोटी पार्टियों का गठबंधन बनाया जाए। राष्ट्रीय स्तर पर हमारे नेता भी बात कर रहे हैं। मुकेश सहनी की पार्टी वीआईपी के प्रवक्ता देव ज्योति कहते हैं कि हमारे नेता को दूल्हा नहीं बनना है। वीआईपी पार्टी निषाद आरक्षण की लड़ाई लड़ रही है।

नरेंद्र मोदी आरक्षण की मांग को पूरा करते हैं तो हम भी नरेंद्र मोदी जिंदाबाद करेंगे। क्या बिहार में छोटी पार्टियां एकजुट होकर नया फ्रंट बनाएगी? इस सवाल पर वे कहते हैं कि इसका फैसला हमारे नेता मुकेश सहनी करेंगे। इसके लिए वही अधिकृत हैं।

सीएम नीतीश के बाद ललन सिंह ने गृह मंत्री अमित शाह पर बोला

पटना। गृह मंत्री अमित शाह के बिहार दौरे के बाद शुरू हुआ सियासी घमासान थमने का नाम नहीं ले रहा है। सीएम नीतीश कुमार के बाद अब अमित शाह पर जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह ने हमला बोला है। ललन सिंह ने रविवार को पटना एयरपोर्ट पर मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि वह (अमित शाह) नकली भविष्यवक्ता हैं।

झंझारपुर की जनसभा का जिक्र करते हुए ललन सिंह ने कहा कि आपने देखा नहीं कि वह जनता से चार बार ताली बजवा रहे थे, फिर भी कितना लोग ताली बजा रहे था। यह लोग केवल देश को बांटने का काम करते हैं। जनता सब देख रही है। 2024 के चुनाव में जवाब दे देगी। दरअसल, ललन सिंह ने संसद के विशेष सत्र में भाग लेने दिल्ली जा रहे थे। एयरपोर्ट पर

मीडिया से बातचीत करते हुए उन्होंने गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा पर निशाना साधा। हालांकि, इससे पहले सीएम नीतीश कुमार ने भी गृह मंत्री शाह पर जमकर हमला बोला था। मीडिया से बातचीत के दौरान उन्होंने कहा था कि मैं इन लोगों के किसी बात पर ध्यान नहीं देता हूं। वह (अमित शाह) आते हैं अंड-बंड नहीं बोलते रहते हैं। उनको बिहार का कोई ज्ञान है। बिहार में कितना विकास हुआ है, कितना काम हो रहा है, इसकी उनको जानकारी है? उनको बिहार की या देश की कोई जानकारी है? इन लोगों को ऐसे ही बोलने की आदत है।

अंड बंड बोलते रहते हैं। उनलोगों का कोई वैल्यू ही नहीं है। एनडीए परेशान है। पूरा विपक्ष एकजुट हो रहा है, इसलिए वह घबराहट में हैं। शनिवार को झंझारपुर में जनसभा को संबोधित करते हुए अमित शाह ने कहा था कि लालू और नीतीश की जोड़ी तेल और पानी जैसी है। मैं नीतीश जी से कहता हूं तेल और पानी में तेल का कुछ नहीं होता बल्कि पानी मैला हो जाता है। आपने प्रधानमंत्री बनने के लिए जो गठबंधन किया है वह आपको हाशिये पर ला देगा। दरभंगा एम्स पर गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि नीतीश कुमार ने कारण ही साढ़े 12 करोड़ की लागत से बनने वाले एम्स का काम रुक गया। मैं नीतीश कुमार से कहा हूं कि एक बार एम्स के लिए जो जमीन आपने दिया है उससे झुककर थोड़ा छूने की कोशिश कीजिए।

गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि लालू-नीतीश की सरकार में अपराधी एक्टिव हो गए हैं। जंगलराज बढ़ता ही जा रहा है। इसका एक ही समाधान है कि बिहार और देश में भाजपा की सरकार बनाना।

कावेरी जल विवाद के सुलझने के आसार कम

कावेरी जल बंटवारा विवाद के सुप्रीम कोर्ट से भी हल नहीं निकलने के बाद कर्नाटक-तमिलनाडु में रार बढ़ गई है। कर्नाटक ने तल्खी भरे लहजे में पानी देने से साफ इनकार कर दिया है। अब सवाल यह है कि यह मामला आखिरकार कब सुलझेगा। दोनों ही राज्य इसे लेकर 141 साल से आपस में लड़-भिड़ रहे हैं। भविष्य में पानी को लेकर समूचे देश में किस तरह के हालात उत्पन्न होने वाले हैं, यह उसकी भी ताजा तस्वीर है। ये विवाद सभी को गंभीर होकर सोचने पर विवश करता है। पानी का ये झगड़ा हमें चेताता है कि पानी के महत्व को समझ लें। वरना, आने वाले समय में देश के कोने-कोने में पानी को लेकर हालात भयानक होने वाले हैं। दो राज्यों के मध्य कावेरी जल विवाद दशकों से नासूर बना हुआ है। दरअसल, नया विवाद ये है कि कावेरी जल विनिमयन समिति ने कर्नाटक सरकार को जब से तमिलनाडु को रोजाना पांच हजार क्यूसेक पानी देने को कहा है, तभी से दोनों राज्यों में तगड़ा विवाद छिड़ा है। दोनों तरफ जमकर राजनीतिक तू-तू, मैं-मैं हो रही हैं। कर्नाटक अपने रुख पर अडिग है। साफ कह दिया है कि हम एक बूंद पानी नहीं छोड़ेंगे। कावेरी जल विवाद वर्षों पुराना है। सभी जानते हैं कि कावेरी एक अंतरराज्यीय नदी है जो कर्नाटक-तमिलनाडु के समीप से बहती है। नदी का एक भाग केरल राज्य से टच करता है। पड़ोसी राज्य पूरी तरह से उसी के जल पर निर्भर है। चाहे खेतों की सिंचाई हो, या व्यक्तिगत इस्तेमाल में प्रयोग करना हो। सभी की पूर्ति इसी नदी के पानी से होती है। ये नदी महासागर में मिलने से पहले कराइकाल से होकर गुजरती है जो पांडिचेरी का हिस्सा है, इसलिए इस नदी के जल बंटवारे को लेकर हमेशा विवाद रहता है। बीते कुछ दशकों से नदी का पानी भी कम हुआ है। कम होने का सिलसिला लगातार जारी भी है। बहरहाल, पानी का विवाद तमिलनाडु और कर्नाटक के बीच है, क्योंकि दोनों राज्यों की सीमाएं आपस में मिलती हैं। सूखे के कारण तमिलनाडु पानी की कमी से जूझ रहा है। तभी उन्होंने इस बाबत कावेरी जल विनिमयन समिति से सिफारिश की, कि पड़ोसी राज्य कर्नाटक उन्हें प्रतिदिन की जरूरत के हिसाब से 24 क्यूसेक पानी दे। उनकी अर्जी सुनने के बाद कावेरी जल विनियमन समिति ने कर्नाटक सरकार को आदेशित किया कि पानी मुहैया कराएं। लेकिन कर्नाटक की सरकार ने पानी देने से साफ इनकार कर दिया। इस इनकार का तर्क देते हुए सरकार ने कहा कि उसके पास खुद पर्याप्त पानी नहीं है। उनका प्रदेश भी कम बारिश के चलते सूखे की मार झेल रहा है। इसके बाद दोनों राज्यों में रार और बढ़ गई। कर्नाटक ने इस मसले को लेकर दिल्ली में अपने शीर्ष नेताओं को अवगत करवा हस्तक्षेप की मांग की है। कर्नाटक सरकार की एक टीम दिल्ली पहुंची हुई है। जो अपने नेताओं और कानूनी विशेषज्ञों से रायशुमारी कर रही है। कावेरी जल विवाद आजादी से पहले का है। चाहे केंद्र सरकारें रही हों, या राज्य की सरकारें, किसी ने इसका स्थायी समाधान तलाशने की कोशिश नहीं की। सन् 1924 में अंग्रेजों के शासनकाल के दौरान मद्रास प्रेसिडेंसी और मैसूर राज के बीच समझौता हुआ था। तब, इस समझौते में केरल और पुडुचेरी भी शामिल थे। आजादी के करीब दो-तीन दशकों तक तो सब ठीक रहा, लेकिन जैसे- जैसे पर्यावरण में बदलाव हुआ। बारिश कम होने लगी और पानी की मांग बढ़ती गई। उसके साथ ही ये विवाद भी गहराता गया। मामला सुप्रीम कोर्ट में भी पहुंचा, लेकिन फिर भी मसले का हल नहीं निकला। इससे पहले भी तमिलनाडु सरकार दो मर्तबा कर्नाटक के जलाशयों से प्रतिदिन 24,000 क्यूसेक पानी छोड़ने की मांग को लेकर सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटा चुकी है। प्रत्येक बार कर्नाटक सरकार ने तमिलनाडु की याचिका का जम कर विरोध किया। बाकायदा अपना हलफनामा पेश किया, जिसमें दलीलें दीं कि उनके यहां भी पानी की बहुत कमी है। इस विवाद के निस्तारण के लिए केंद्र सरकार को आगे आना होगा। उन्हें कोई ऐसी जलनीति बनानी होगी जिससे विवाद का हल निकल सके। वरना, ये झगड़ा कभी बड़ा रूप धारण कर सकता है। हालांकि केंद्र ने तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक और पुडुचेरी के बीच उनकी जल-बंटवारे क्षमताओं के संबंध में विवादों पर मध्यस्थता करने के लिए बीते 2 जून, 1990 को कावेरी जल विवाद न्यायाधिकरण का गठन किया था। लेकिन वह विवाद निपटाने में असफल रही। केंद्र को इसके आगे सोचना होगा। ये ऐसा विवाद बन गया है जो चुनाव में राजनीतिक दल अपने मेनिफेस्टो में भी अंकित करने लगे हैं। कायदे से देखें तो कावेरी जल दोनों राज्यों के लोगों के लिए सिंचाई और पीने के पानी की जरूरतों को पूरा करने सहित आजीविका का प्रमुख स्रोत है। हालांकि, डीएमके नेताओं का कहना है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किसी भी नदी, निचले राज्य या क्षेत्रों को पानी देने से इनकार नहीं कर सकते। पर, उनका ये तर्क कोई सुनने को राजी नहीं है। कर्नाटक पिछले कुछ महीनों में सूखे का सामना कर रहा है। इसलिए मुश्किल है कि कर्नाटक सरकार ह्यकावेरी जल विनियमन समितिह्न की सिफारिश माने। न मानने का एक कारण ये भी है। चुनाव में उन्होंने कावेरी का मुद्दा उठाया था, प्रदेश की जनता से भरपूर पानी देने का वादा किया था। इस लिहाज से वह तमिलों को शायद ही पानी दें।

आचार्य शंकर: राष्ट्रीय एकता एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रवर्तक

ANALYSIS

✍ वीरेन्द्र सिंह परिहार

पांच वर्ष की आयु तक शंकर ने समस्त लौकिक साहित्य पढ़ लिया। पांच वर्ष की आयु में शंकर का उपनयन संस्कार हुआ तथा बालक शंकर वेदाध्ययन के निमित्त गुरुकुल गये। जितनी तीव्रता से शंकर ने लौकिक विद्या प्राप्त की थी, उतनी ही शीघ्रता से उन्होंने वेदों और वेदांगों का अध्ययन कर लिया। अपनी बुद्धि की विलक्षणता के चलते छोटी ही उम्र में बाल-बोध संग्रह नाम का एक ग्रन्थ भी रच डाला। उन्होंने अनुभव किया कि हम सब एक हैं और यही सत्य है। आठ वर्ष की अवस्था तक गुरुकुल में रहने और समस्त वेद-शास्त्रों में पारंगत होने के चलते शंकर को आचार्य की उपाधि दी गई और वह शंकराचार्य हो गये। घर लौटने पर उन्हें ऐसा महसूस होने लगा कि घर-बार छोड़ कर सच्चे हिन्दू धर्म के उत्थान के लिए काम करना चाहिए, क्योंकि देश में इतने मत-मतांतर फैले हुए थे कि लोग सच्चे वैदिक धर्म को भूल गये थे। अपनी माता को प्रणाम करके गुरु की खोज में शंकराचार्य निकल पड़े। उसी समय उन्होंने अच्युताष्टक नाम की भक्तिभाव से परिपूर्ण कविता की रचना की। नर्मदा किनारे पहुंच कर अमरकांत आश्रम में उन्होंने विधिवत संन्यास धर्म की दीक्षा गोविन्दपाद से ली और गोविन्दपाद ने शंकराचार्य को समस्त शास्त्रों का अध्ययन बड़ी योग्यता से कराया। इसके बाद गोविन्दपाद शंकराचार्य को लेकर बदरिकाश्रम चले गये जहां शंकर ने चार वर्ष बिताये।

जगतगुरु श्री शंकराचार्य का जन्म उस समय हुआ था, जब बौद्ध धर्म पतनात्मक स्थिति की ओर जा रहा था, धर्म के नाम पर अनाचार फैल रहा था। विडम्बना यह कि अनेक वर्षों तक राजाश्रय प्राप्त होने के चलते बौद्धों को सत्ता का स्वाद लग चुका था। विदेशियों ने ढलती हुई बौद्ध सत्ता का उन्नायक बनकर भारत में प्रवेश किया और बौद्धों ने बिना सोचे-समझे उनका सहयोग किया। लेकिन प्रखर राष्ट्रीयता का पोषक हिन्दू समाज इसे सहन न कर सका, जिसके चलते कुमारिल भट्ट द्वारा प्रज्ज्वलित चिंगारी शंकराचार्य के रूप में दावानल बनकर प्रगट हुई- जिसने सभी झाड़-झंखाड़ को भस्मीभूत कर दिया, जिसके चलते देश एवं धर्म की रक्षा हुई। पुत्र की प्राप्ति पर भगवान शंकर का वरदान मानकर उनके पिता शिवगुरु ने उनका नाम शंकर रखा। शंकर की असाधारण बुद्धि को देखते हुए शिवगुरु ने तीन वर्ष की उम्र में ही उनका अक्षराभ्यास आरंभ करा दिया। पांच वर्ष की आयु तक शंकर ने समस्त लौकिक साहित्य पढ़ लिया। पांच वर्ष की आयु में शंकर का उपनयन संस्कार हुआ तथा बालक शंकर वेदाध्ययन के निमित्त गुरुकुल गये। जितनी तीव्रता से शंकर ने लौकिक विद्या प्राप्त की थी, उतनी ही शीघ्रता से उन्होंने वेदों और वेदांगों का अध्ययन कर लिया। अपनी बुद्धि की विलक्षणता के चलते छोटी ही उम्र में बाल-बोध संग्रह नाम का एक ग्रन्थ भी रच डाला। उन्होंने अनुभव किया कि हम सब एक हैं और यही सत्य है। आठ वर्ष की अवस्था तक गुरुकुल में रहने और समस्त वेद-शास्त्रों में पारंगत होने के चलते शंकर को आचार्य की उपाधि दी गई और वह शंकराचार्य हो गये। घर लौटने पर उन्हें ऐसा महसूस होने लगा कि

घर-बार छोड़ कर सच्चे हिन्दू धर्म के उत्थान के लिए काम करना चाहिए, क्योंकि देश में इतने मत-मतांतर फैले हुए थे कि लोग सच्चे वैदिक धर्म को भूल गये थे। अपनी माता को प्रणाम करके गुरु की खोज में शंकराचार्य निकल पड़े। उसी समय उन्होंने अच्युताष्टक नाम की भक्तिभाव से परिपूर्ण कविता की रचना की। नर्मदा किनारे पहुंच कर अमरकांत आश्रम में उन्होंने विधिवत संन्यास धर्म की दीक्षा गोविन्दपाद से ली और गोविन्दपाद ने शंकराचार्य को समस्त शास्त्रों का अध्ययन बड़ी योग्यता से कराया। इसके बाद गोविन्दपाद शंकराचार्य को लेकर बदरिकाश्रम चले गये जहां शंकर ने चार वर्ष बिताये। वहां रह कर शंकराचार्य ने गोविन्दपाद के गुरु गौड़पाद की आज्ञा तथा उन्हीं के तत्वावधान में अनेक ग्रन्थों की रचना की। उन्होंने परम गुरु से आज्ञा लेकर उनकी मुंडकोपनिषद- कारिका पर भाष्य लिखने के साथ वेदान्त-प्रस्थानत्रयी पर भी भाष्य लिखा। वेदान्तसूत्र पर तो उनका भाष्य अद्वितीय है ही। इस कार्य को समाप्त कर शंकराचार्य ने देश भ्रमणार्थ गुरु से आज्ञा प्राप्त की और हाथ में भगवा ध्वज, दण्ड और कमण्ड लेकर धर्म यात्रा पर निकल पड़े। इसी बीच उनका संबंधी अग्नि शर्मा वहां पहुंच गया। उसने बहुत-सा धन निकाल कर शंकराचार्य के सामने रखा और बताया कि यह तुम्हारी मां द्वारा भेजा गया है और वह अंतिम सांसें गिन रही हैं। उस धन से शंकराचार्य ने बदरिकाश्रम में श्री बद्रीनाथ का मंदिर बनवाया। तेरह हजार फीट की ऊंचाई पर हिमालय की उपत्यका में आज भी वह मंदिर खड़ा है और इसके साथ वह विशाल राष्ट्र भी खड़ा है जिसकी नींव शंकर ने इस मंदिर के माध्यम से डाली थी। शंकराचार्य ने निश्चित किया कि सम्पूर्ण भारतवर्ष में आंदोलन करने के पूर्व साथ देने वाले साथी तैयार करने होंगे। इसके लिए उन्होंने गोविन्दपाद के शिष्यों के साथ काशी में डेरा डाल दिया। उनकी धारणा स्पष्ट थी कि देश में राजनीतिक एकता के मूल में सांस्कृतिक एकता होनी चाहिए। काशी में अब उनकी शिष्य मण्डली इतनी बड़ी हो गई थी कि स्थान-स्थान पर अपने शिष्यों को छोड़ कर वे सम्पूर्ण भारत में एक ही विचारधारा उत्पन्न कर सकते थे। फलतः वह दिग्विजय के निमित्त निकल पड़े। हिन्दू धर्म में समन्वय की दृष्टि से वह बताते कि सम्पूर्ण देवी-देवता एक ही परम्ब्रम्ह के भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं, जो वैष्णव है वह शैव भी है और शक्ति भी है। एक की पूजा और दूसरे का विरोध-भला यह कैसे चल सकता है? कोई छोटा और बडा नहीं होता। स्थान-स्थान पर उन्होंने पंचायतन की पूजा करने को कहा, हां अपने इष्टदेव को मध्य में रखने की सबको छूट थी। इसके पश्चात शंकराचार्य दक्षिण की ओर बढ़े, क्योंकि वे सम्पूर्ण भारत को एकात्मता का अनुभव कराना चाहते थे, सम्पूर्ण जन सामान्य को अद्वैत (हम सब एक हैं) का पाठ पढ़ाना चाहते थे। वह कांची पहुंचे जो दक्षिण की काशी कही जाती है। वह ऐसा स्थायी प्रबंध करना चाहते थे कि देश के जन-समाज में एकत्व की भावना युगों-युगों तक बनी रहे। अतः उन्होंने समाज को स्फूर्ति देने वाले उसके जीवन-स्त्रोत स्वरूप प्रत्येक की श्रद्धा के केन्द्र मठ की स्थापना का विचार किया। कहते हैं कि कांची में ही उन्होंने अपना पहला मठ स्थापित किया था, किन्तु उनका स्थापित श्रृंगेरी मठ ही सबसे अधिक विख्यात है। सुरेश्वाचार्य को उन्होंने श्रृंगेरी का सबसे पहला मठाधीश नियुक्त किया और उत्तर में जोशी मठ का आचार्य दक्षिण का ब्राह्मण नियुक्त किया। जीवन के एक-एक क्षेत्र में उन्होंने भारत की एकता को बनाये रखने के लिए वृहद सावधानी से प्रयास किया था, तभी तो चैतन्यमय भारत का आज भी अभिव्यक्त और अविछिन्न स्वरूप हमारा आराध्य बना हुआ है। आगे चलकर वह जगन्नाथपुरी में मठ की स्थापना की और वहां से चल कर काशी होते हुए एकत्व का संदेश सुनाते हुए द्वारिकापुरी जाकर मठ की स्थापना की। महात्मा बुद्ध को विष्णु का अवतार बताकर लाखों बौद्धों को राष्ट्र की मुख्यधारा में खड़ा कर दिया। इतना ही नहीं वह कश्मीर, प्रागज्योतिषपुर पहुंच कर वाममार्गियों से देश को सावधान किया और वैदिक धर्म की पताका फहराई। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शब्दों में- आचार्य शंकर के सिद्धांतों और प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप भारतवर्ष एक ओर तो रूढ़िवादी कर्मकाण्ड और दूसरी ओर नास्तिकतावादी जड़वाद के गर्त में गिरने से बच गया। आचार्य शंकर ने जिस तरह से भारतवर्ष का उद्धार किया, उनके इस एकत्व के सिद्धांत को अपने जीवन में लाकर भारतवर्ष को उन्नत और वैभवशाली बनायें। यही है उनका पुण्य-स्मरण एवं उनकी सच्ची पूजा। 18 सितम्बर को ओंकारेश्वर के मांधाता में आचार्य शंकर सनातन के माध्यम से राष्ट्र की एकता और समरसता का जो योगदान किया गया उसके चलते उनकी 108 फिट ऊँची प्रतिमा का अनावरण किया जा रहा है। जहाँ उनके स्त्रोत के साथ शास्त्रीय संगीत की स्वर लहरियाँ भी वातावरण को संगीतमय बना देंगी।

लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

मुगल कैद से कब मुक्त होंगे बाबा

कई वर्षों बाद काशी में 15 सितम्बर को भगवान विश्वनाथ के दर्शन मुझे हुए। शिवलिंग को स्पर्श करने का पुण्य मिला। संवेदना जगी। जितनी बार काशी गया था, दर्शन के प्रयास में सफल नहीं हुआ। जनरव, अपार भीड़, संकरे प्रवेश-मार्ग, गंदगी अलग। अब ऐसा कुछ भी नहीं। साफ-सुथरा। तिरुपति-तिरुमला से भी अधिक सुरम्य, सुविधाजनक। स्थानीय सांसद नरेन्द्र दामोदरदास मोदी के सौजन्य और प्रयासों से। प्रवेश गेट पर सुरक्षा गार्ड ने मेरी तलाशी ली। जेबी कंघी तक रखवा लिया। कंघी से क्या आपदा आ सकती थी? मैंने तो विरोध-व्यक्त किया कि एक सनातनी आस्थावान होने के नाते, मुझसे क्या खतरा है भोले विश्वनाथ को? संदेह तो सटे हुए औरंगजेबी मस्जिद में मेरे प्रवेश के वक्त हो। तब तलाशी तार्किक होती। कहीं मैं औरंगजेब द्वारा ज्ञानवापी पर अतिक्रमण को डायनामाइट से न उड़ा दूं। इंदिरा गांधी सरकार ने आपातकाल (1975-77) में यही अभियोग चलाया था मुझ पर, जॉर्ज फर्नांडिस तथा अन्य 23 पर। तरुणावस्था से ही मेरी अवधारणा रही, जब-जब मैं कृष्ण जन्मभूमि (मथुरा), राम जन्मभूमि (अयोध्या) और काशी विश्वनाथ देवालय जाता रहा, हर आस्थावान हिन्दू को ये अतिक्रमण सेक्युलर भारत में असह्य हैं। हिन्दू जन कितने क्लीव, कापुरुष, मुखन्नस रहे कि इन अतिक्रमणियों को सदियों से बर्दाश्त करते रहे ? फिर डॉ. राममनोहर लोहिया की बात स्मरण आती रही कि जो राजा-महाराजा जायदाद बचाने की फिराक में अपनी बहन और बेटी को मुगलों के हरम में भेजते रहे, उनसे क्या उम्मीद हो सकती थी? याद आया केसरिया शूरवीर महाराणा प्रताप सिंह सिसोदिया जिसे हल्दीघाटी में हराने जयपुर का युवराज मानसिंह राठौर ही मुगलों का सेनापति बनकर गया था। तेलुगुमणि विजयनगर सम्राट आलिया रामाराया को तालिकोटा (23 जनवरी 1565) की रणभूमि में दक्कन बहमनी सुल्तानों ने धोखे से हराया था। सम्राट की सेना के इस्लामी सैनिक युद्धभूमि में दुश्मनों (सुल्तानों) की फौज में शामिल हो गए थे। विजयनगर साम्राज्य का अंत हो गया। अर्थात हिंदू शासक धोखा खाते रहे। आस्था स्थल खोते रहे। ज्ञानवापी मस्जिद इसी क्रम की एक त्रासदपूर्ण उपज है। काशी विश्वनाथ देवालय पर डॉ. लोहिया की कार्य-योजना का उल्लेख हो। पुणे की मुस्लिम सत्यशोधक मंडल के संस्थापक स्व. हामिद उमर दलवाई और लोहिया का प्रस्ताव था कि मुस्लिम युवजन को सत्याग्रहियों के रूप में प्रशिक्षित किया जाए। वे सब काशी, अयोध्या और मथुरा में आंदोलन चलायें। लक्ष्य था कि इन तीनों हिंदू आस्था केन्द्रों पर पाशविक सैन्य बल के जरिये मुगलों ने अपनी प्रजा की आस्था और धार्मिक अधिकारों का हनन किया था। अतः आजाद भारत की सरकार इतिहास के इस अन्याय का खात्मा कर, बहुसंख्यक प्रजा को न्यायिक रूप से उसके आस्था का अधिकार लौटाए। उनके पूजास्थल वापस दिए जाएं। पर हुआ बिल्कुल उल्टा। जवाहरलाल नेहरू की सरकार ने यथास्थिति बरकरार रखी। एक बार भारत सरकार ने राष्ट्रीय एकीकरण समिति बनाई और उसके सदस्यों को अयोध्या, काशी और मथुरा यात्रा पर भेजा। इन स्थलों को देखते ही उस समिति के सदस्य पूर्णतया विभाजित हो गए। सवाल यही उठा कि जहीरुद्दीन बाबर को अयोध्या में ही मस्जिद निर्माण क्यों सूझी? वह इस मस्जिद को गांव धन्नीपुर में बनवाता जहां आज मोदी और योगी आदित्यनाथ की सरकारें विशाल मस्जिद निर्मित करा रहे हैं। यही अपेक्षा आलमगीर औरंगजेब से भी होती है कि बजाय ज्ञानवापी के, काशी के निकट बंजरडीहा में बड़ा मस्जिद बनवा देता। आगरा के सिकंदरा के पास जहां उसके माता-पिता की कब्र है उसके पास, बजाय ईदगाह के, मस्जिद बनवा देता। सांप्रदायिक विभीषिका का ही अंजाम था कि इस्लामी पाकिस्तान का सृजन और भारत का विभाजन हुआ। इतना सब होने के बाद भी ये तीनों मस्जिदें ऐतिहासिक नाइंसाफी और राजमद में डूबे बादशाहों की नृशंसता के प्रतीकों को स्वाधीन, सेक्युलर भारत कैसे सह पाया? समय रहते मथुरा और काशी में न्याय नहीं हुआ तो वहां भी फैजाबाद जैसा नजारा पेश आ सकता है। समय की यही चेतावनी है। इसीलिए सेक्युलर भारत को सुदृढ़ कराने की प्रक्रिया तेज करनी होनी चाहिए। क्या तर्क है कि भारतवासियों को सिद्ध करना पड़ रहा है कि राम, शिव, कृष्ण पहले आए थे अथवा इस्लाम? ज्ञानवापी के खंडन को अदालत प्रमाणित करेगी यह मंदिर था? वहां की शिल्पकला पर्याप्त प्रमाण नहीं? हिंदू की सौजन्यता और सहनशीलता को कमजोरी माना जाता रहा। यह प्रक्रिया लंबी चली, अब नहीं। भारतवासियों का मूड बदला है, खासकर युवाओं की ऐतिहासिक न्याय के प्रति मांग बढ़ी है। अयोध्या में 6 सितम्बर 1991 में यह भावना समुचित रूप से प्रतिबिंबित हुई थी। अब नेहरू का भारत नहीं रहा जहां हिंदू कोड तो लागू हो गया, समान नागरिक संहिता पर हिचक हो, बवाल उठाया जाए। काशी विश्वनाथ के दर्शन के बाद ऐसे स्फुट विचार उठे। वक्त का तकाजा है कि परिवर्तन हो, राष्ट्रीय सोच में। इतिहास गवाह है कि सत्ता जब अन्याय खत्म नहीं करती तो फ्रांसीसी क्रांति जैसा उथल-पुथल होता है। बड़ा भयावह। जनविद्रोह जो ठहरा। मुझे काशी यात्रा का अवसर मिला जब प्रसिद्ध भाषायी मीडिया संस्था हिंदुस्तान समाचार ने हिंदी दिवस (14 सितंबर 2023 पर) वाराणसी में गंगातट पर राजा चेतसिंह किला के प्रांगण में मनाया। कांचीकामकोटि के जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी विजयेन्द्र सरस्वती का निजी आशीर्वाद मिला। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और बहुभाषी हिंदुस्तान समाचार के निदेशक प्रदीप बाबा मधोक जी (वे स्व. बलराज माधोक के भतीजे हैं) मंचासीन थे।

Social Media Corner

सच के हक में...

अमृतकाल की प्रथम प्रभा का प्रकाश राष्ट्र में एक नया आत्मविश्वास, नई उमंग और नया सामर्थ्य भर रहा है। दुनियाभर में आज भारतवासियों की उपलब्धियों की चर्चा हो रही है।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ट्विटर अकाउंट से)

पिछले कुछ दिनों में धनबाद के कई व्यवसायियों, बुद्धिजीवियों, मीडिया के बंधुओं, सिस्टम के जानकार लोगों से गहन चर्चा हुई। ज्ञात हुआ कि कोयले की राजधानी नाम से मशहूर धनबाद में एक काला साम्राज्य स्थापित हो चुका है। धमकी देना, रंगदारी उठाना और गोली चलाना यहां एक आम बात हो गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार पिछले छः महीने में ऐसे दो सौ से अधिक मामले हुए होंगे, जहां धमकी देने, मार पीट करने, रंगदारी मांगने और बम-गोली चलाने में एफआईआर तक दर्ज नहीं हुआ है. संपूर्ण भय का माहौल है। कई व्यवसायी धनबाद से पलायन कर चुके है और कई पलायन करने की तैयारी कर रहे है। हेमंत सोरेन जी... धनबाद और धनबाद के आस पास की जनता आतंक राज का अंत करने के लिये एक उम्मीद भरी नजर से भाजपा को देख रही है। आपने हमारे प्रदेश में ये जो गुंडाराज स्थापित कर दिया है उसकी सफाई भाजपा ही करेगी। इंतजार करिये।

(पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी के ट्विटर अकाउंट से)

स्वस्थ भारत का संकल्प

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने वर्ष 2018 में आयुष्मान भारत योजना की शुरूआत की थी। इस योजना की शुरूआत राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, 2017 के प्रविधानों के तहत सबको स्वास्थ्य की परिकल्पना को साकार करने के लक्ष्य के साथ की गई थी। आयुष्मान भारत योजना के तहत देश के कोने-कोने में रह रहे लोगों तक व्यापक स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया था। इसके तहत बचाव और जागरूकता से लेकर प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक स्तर तक बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं कैसे सुनिश्चित हों, इसकी पूरी व्यवस्था हेल्थ एंड वेलनेस सेंटरों और प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के माध्यम से की गई। मोदी सरकार का लक्ष्य यह है कि देश के हर कोने में रह रहे जन-जन तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचें। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए ही आयुष्मान भव अभियान लांच किया गया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने 13 सितंबर, 2023 को इस अभियान का शुभारंभ किया। इस अभियान के तहत जन आरोग्य योजना को जन-जन तक ले जाने, हर किसी का आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट आइडी बनाने और विभिन्न स्वास्थ्य सेवाएं देने का लक्ष्य रखा गया है। कई तरह की बीमारियों की पहचान के लिए व्यापक स्क्रीनिंग की भी व्यवस्था की गई है। इनमें टीबी, हाइपरटेंशन, सिकल सेल डिसीज यानी रक्त संबंधी विकार, मधुमेह आदि के लिए गांवों और शहरों में जांच अभियान चलाया जा रहा है। आयुष्मान भव योजना का मूल लक्ष्य देश के 6.45 लाख गांवों और 2.55 लाख ग्राम पंचायतों तक पहुंचने का है, ताकि लोगों के बीच इस योजना को लेकर जागरूकता आए और वे स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ ले सकें। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की अंत्योदय संकल्पना के अनुकूल इस अभियान को तैयार किया गया है, ताकि स्वास्थ्य योजनाओं का लाभ समाज के हर एक व्यक्ति को मिल पाए। सबको स्वास्थ्य के लक्ष्य को पूरा करने के लिए इस अभियान के तहत सेवा पखवाड़ा मनाया जा रहा है। इसमें अंग दान अभियान चलाना शामिल है। साथ ही स्वच्छता अभियान और रक्तदान अभियान जैसी कई और गतिविधियां चलाई जा रही हैं। इस अभियान के तीन मूल आधार हैं- आयुष्मान आपके द्वार, आयुष्मान सभा और आयुष्मान मेला। इसके तहत समाज केंद्रित सोच के साथ जन-जन तक स्वास्थ्य सेवाओं को पहुंचाने का काम किया जाएगा। आयुष्मान आपके द्वार का यह तीसरा संस्करण है। पहले के दो संस्करणों की सफलताओं को यह आगे बढ़ाएगा। इसके तहत आयुष्मान कार्ड बनाने में और तेजी लाई जाएगी। वहीं आयुष्मान सभा के जरिये गांवों के स्तर पर विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं को लेकर जागरूकता का प्रसार किया जाएगा। आयुष्मान मेला के माध्यम से स्वास्थ्य से संबंधित विभिन्न चिंताओं का समाधान करने का काम किया जाएगा। आयुष्मान आपके द्वार अभियान की शुरूआत पूरे देश में 17 सितंबर से हो गई है और यह इस साल के 31 दिसंबर तक चलेगा। प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तकरीबन 60 करोड़ लाभार्थियों में से अधिक से अधिक लोगों के आयुष्मान कार्ड बनाने का काम इस अभियान के तहत होगा, ताकि कोई भी बेहतरीन स्वास्थ्य सेवाओं से अछूता न रहे। आयुष्मान सभा की शुरूआत राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जन्म-जयंती पर दो अक्टूबर, 2023 से होगी। 31 दिसंबर, 2023 तक चलने वाले इस अभियान के तहत देश भर के गांवों और शहरों में सभाओं का आयोजन होगा। इसके जरिये मुख्य तौर पर जन-जन तक स्वास्थ्य योजनाओं को लेकर जागरूकता का प्रसार किया जाएगा। जनभागीदारी से जनकल्याण की भावना विकसित करते हुए स्वास्थ्य व्यवस्था में जनभागीदारी सुनिश्चित करने का काम भी इसके तहत किया जाएगा।

कृत्रिम गर्भाशय

यह मानव सभ्यता के लिए किसी चमत्कार से कम नहीं है कि वैज्ञानिकों को कृत्रिम गर्भाशय विकसित करने में सफलता मिल गई है। अमेरिका के वैज्ञानिकों ने बाकायदे वीडियो जारी करके दुनिया को दिखा दिया है कि कृत्रिम गर्भाशय का भविष्य उज्ज्वल है। इसके विकास में वैज्ञानिक वर्षों से लगे थे और अब इंसानी शिशुओं को विकसित करने के लिए इस वैज्ञानिक प्रयोग को आधिकारिक मंजूरी का इंतजार है। कृत्रिम गर्भाशय के वीडियो में एक बाल रहित, पीली चमड़ी वाला मेमना तरल पदार्थ से भरे एक बड़े आकार के सैंडविच बैग में स्वस्थ लेटा दिख रहा है। पेंसिल्वेनिया में चिल्ड्रेन हॉस्पिटल ऑफ फिलाडेल्फिया (सीएचओपी) के शोधकताओं ने साल 2017 का भी एक वीडियो जारी किया है। यह चर्चा विगत पांच वर्ष से चल रही है और वैज्ञानिक पशुओं के बाद अब इंसानों में इस तकनीक का प्रयोग करना चाहते हैं। अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफडीए) विनियामक विचार कर रहा है। चर्चा के लिए 19-20 सितंबर को खास बैठक होने वाली है। वैज्ञानिक सोच के साथ निर्णायक विद्वानों की सोच का मिलना जरूरी है, ताकि इस प्रयोग के इंसानों में होने पर नैतिकता या मानवता पर कोई बुरा असर नहीं पड़े। एक बड़ा सवाल यह भी है कि आखिर ऐसे कृत्रिम गर्भाशय की जरूरत क्यों पड़ रही है? सीएचओपी के भ्रूण सर्जन एलन फ्लेक, जो इस अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं, ने कहा है कि यदि यह प्रयोग उतना सफल होता है, जितना हम सोचते हैं तो अधिकांश जोखिम भरे गर्भधारण की समस्या से निपटा जा सकेगा। कमजोर नवजात शिशु जन्म के तुरंत बाद वेंटिलेटर पर पहुंचने के बजाय इसी कृत्रिम गर्भाशय में पहुंचकर नया जीवन पाएंगे, पूर्ण विकसित होकर जन्म लेंगे। यह सच है कि बड़ी संख्या में कमजोर शिशुओं की मौत हो जाती है। कई बार किसी शिशु का जीवन गर्भ के अंदर ही संकट में पड़ जाता है, उसे बचाने में चिकित्सक भी नाकाम हो जाते हैं, इस नाकामी ने ही चिकित्सकों को प्रेरित किया है कि वे कृत्रिम गर्भाशय विकसित करें।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, Jharkhand-835222, and Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. Editor- Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

सरकार अब लैपटॉप-पीसी आयात पर रखेगी नजर!

- 1 नवंबर से इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के आयात पर प्रतिबंध लगाने का किया फैसला

नई दिल्ली ।

सरकार ने लैपटॉप और अन्य आईटी हार्डवेयर के आयात पर नजर रखने तथा उसके बारे में पहले से ही जानकारी हो सिल करने के लिए स्टील आयात निगरानी तंत्र की तरह ही व्यवस्था बना सकती है। सरकार ने 1 नवंबर से लैपटॉप, टैबलेट, पर्सनल कंप्यूटर, सर्वर आदि जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के आयात पर प्रे तिबंध लगाने का फैसला किया है। इसके प्रभावी तरीके से लागू करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय हितधारकों के साथ इसके गुण-दोषों पर गहनता से विचार-विमर्श कर रहा है। बताया जा रहा है कि इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय इस बारे में अंतिम निर्णय लेगा और इसे प्रभावी तरीके से लागू करने की रूपरेखा तय करने में लगा है। मंत्रालय विदेश व्यापार महानिदेशालय के साथ भी इस बारे में इस माह के अंत तक बैठक करेगा। सरकार ने पिछले महीने इस तरह की वस्तुओं का आयात लाइसेंस के जरिये करने के निर्णय के पीछे नागरिकों के सुरक्षा जोखिम को प्राथमिक वजह बताया था। इसके अलावा अगस्त के इस निर्णय के पीछे सरकार का मकसद चीन से आयात घटाना और स्थानीय विनिर्माण को बढ़ावा देना भी है। स्टील आयात निगरानी तंत्र एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है, जिसके तहत देश में बाहर से आने वाले सभी तरह के इस्पात उत्पादों को आयात करने से पहले पंजीकरण कराना होता है। इस व्यवस्था के तहत आयातकों को ऑनलाइन वेब पोर्टल के जरिये पंजीकरण नंबर प्राप्त करने के लिए आयात की वास्तविक तिथि से कम से कम 60 दिन पहले ऑनलाइन सिस्टम में अग्रिम में जानकारी देनी होती है। यह व्यवस्था पिछले 4 साल से लागू है। इस सिस्टम के तहत एक ऑनलाइन प्रक्रिया होगी, जहां आयातक को सीमा शुल्क विभाग को संबंधित उत्पाद के प्रवेश के बिल जमा करने से पंजीकरण कराना होगा। इलेक्ट्रॉनिक्स

उपकरणों के आयात पर बंदिश के निर्णय का उद्योग के साथ-साथ अमेरिका और यूरोपीय संघ जैसे व्यापारिक भागीदारों के विरोध का भी सामना करना पड़ रहा है। उद्योग के प्रतिनिधि सरकार से नई आयात नीति पर पुनर्विचार करने का आग्रह कर रहे हैं। उन्होंने इसे लागू करने की समयसीमा को 1 नवंबर से आगे बढ़ाने की भी मांग की है ताकि उद्योग को इस तरह के बदलाव के लिए तैयारी करने के वास्ते पर्याप्त समय मिल सके।

एसयूवी नेक्सॉन का फेसलिफ्ट मॉडल लॉन्च

कॉम्पैक्ट एसयूवी के बाजार में टाटा का बडा धमाका

नई दिल्ली ।

स्वदेशी कंपनी टाटा ने अपनी सबसे पॉपुलर एसयूवी नेक्सॉन का फेसलिफ्ट मॉडल लॉन्च कर दिया। कंपनी ने इस कार में बड़े बदलाव कर दिए हैं। कार के डिजाइन से लेकर फीचर्स तक सभी कुछ बदल गया है। खास बात ये है कि पहले से ही काफी सेफ मानी जाने वाली और 5 स्टार सेफ्टी रेटिंग वाली नेक्सॉन को अब और भी ज्यादा सुरक्षित बना दिया गया है। कार में कंफर्ट फीचर्स के साथ ही सेफ्टी फीचर्स का भी इजाफा कर दिया गया है। नेक्सॉन के डिजाइन में भी बड़े बदलाव किए गए हैं और टाटा ने इसे कुछ कुछ कर्व जैसा डिजाइन किया है। कार काफी फ्यूचरिस्टिक डिजाइन के साथ लॉन्च की गई है। नेक्सॉन के आईसीई इंजन के साथ ही कंपनी ने नेक्सॉन ईवी का भी फेसलिफ्ट मॉडल लॉन्च कर दिया है। नेक्सॉन ईवी और आईसीई दोनों ही मॉडल्स में कंपनी ने कार के बंपर, लाइट्स और डीआरएल को बदल दिया है। फ्रंट लुक की बात की जाए तो कार के ब्रॉड लुक को कुछ स्लीक किया गया है। कार में नई शेप में डीआरएल और एलईडी हैडलैंप दिए गए हैं। वहीं कार के बंपर का डिजाइन भी बदल गया है। कार को बोनट भी अब नए स्टाइल का दिया गया है। वहीं रियर में कार का टेल गेट अब पहले से अलग दिखेगा। इसमें आपको स्प्रैड डीआरएल और एलईडी टेललैंप देखने को मिलेंगे। इसी के साथ नया स्पाईलर कार को स्पोर्टी लुक दे रहा है। कार में अब आपको 16 इंच के व्हील मिलेंगे। इसके साथ मल्टीपल ड्राव मोड, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, सेंट्रल लॉ किंग, ईएसपी, 6 एयरबैग, बड़ी सनरूफ, एलईडी हैडलैंप, कनेक्टेड एलईडी टेल-लैंप स्ट्रिप, रूफ रेल्स, डुअल-टोन डैशबोर्ड फिनिश, सॉफ्ट-टच डोर पैड, रियर एसी वेंट्स, रेन सेंसिंग वाइपर, ऑटोमैटिक हेडलैम्प, एबीएस, ईबीडी, चाइल्ड आइसोफिक्स सीट, 10.25 इंच का इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, लेदर रैप्ड स्टीयरिंग व्हील, एयर प्यूरीफायर, वायरलेस चार्जर, एक्सप्रेस कूलिंग फंक्शन और वन-टच अप/डाउन ड्राइवर साइड पावर विंडो मिलेंगी। टॉप वेरिएंट में आपको लेदर अपहॉल्े स्ट्री, सबवूफर के साथ साउंड सिस्टम, वेंटिलेटेड सीट्स जैसे कई फीचर्स मिलेंगे।

एप्पल ने भारत में उपलब्ध कराई नई आईफोन 15 श्रृंखला की घड़ियां

नई दिल्ली ।

एप्पल कंपनी ने आईफोन 15 सीरीज की घड़ियां भारत में उपलब्ध करा दी हैं।` मिली जानकारी के अनुसार वॉच सीरीज 9 और एयरपॉड्स प्रो (दूसरी पीढ़ी) के लिए प्री-ऑर्डर अब भारत में उपलब्े ध हैं। ये डिवाइस 22 सितंबर से देश के बाजारों में आ जाएंगे। पहली बार, मेक इन इंडिया आईफोन 15 वैश्विक बिक्री के लिए 22 सितंबर से उपलब्ध होगा। नए उपकरण ऐप्पल इंडिया ऑनलाइन स्टोर, मुंबई और नई दिल्ली में इसके स्वयं के ब्रांडेड खुदरा स्टोर, साथ ही अन्य अधिकृत ऐप्पल खुदरा विक्रेताओं पर उपलब्ध होंगे। 6.1-इंच और 6.7-इंच डिस्प्ले साइज़ में उपलब्ध, आईफोन 15 और आईफोन 15 प्े लस गुलाबी, पीले, हरे, नीले और काले रंग में 128जीबी, 256जीबी और 512जीबी स्टोरेज क्षमता में उपलब्ध हैं। इनकी कीमत क्रमशः 79,900 रुपये और 89,900 रुपये से शुरू होती है। आईफोन 15 प्रो और आईफोन 15 प्रो मैक्े स, 6.1 और 6.7-इंच डिस्प्ले आकार में, काले टाइटेनियम, सफेद टाइटेनियम, नीले टाइटेनियम और प्राकृतिक टाइटेनियम फिनिश में उपलब्ध हैं।

बता दें` कि आईफोन 15 प्रो की कीमत 134,900 रुपये से शुरू होती है और यह 128जीबी, 256जीबी, 512जीबी और 1टीबी स्टोरेज क्षमता में उपलब्ध है। आईफोन 15 प्रो मैक्े स की कीमत 159,900 रुपये से शुरू होती है और यह 256जीबी, 512जीबी और 1टीबी स्टोरेज क्षमता में उपलब्ध है। आकर्षक ईएमआई विकल्प और ट्रेड-इन ऑफर (आपके नए आईफोन के लिए 2,000 रुपये से लेकर 67,800 रुपये तक) उपलब्ध हैं। ऐप्पल वॉच सीरीज़ 9 अब 41 मिमी और 45 मिमी आकार में स्टारलाइट, मिडनाइट, सिल्वर, (प्रोडक्ट) रेड और एक नए गुलाबी एल्यूमीनियम केस के साथ-साथ सोने, चांदी और ग्रेफाइट केस में स्टेनलेस स्टील में प्री-ऑर्डर के लिए उपलब्ध है। ऐप्पल वॉच सीरीज़ 9 की कीमत 41,900 रुपये और ऐप्पल वॉच एसई की कीमत 29,900 रुपये से शुरू होती है। सभी ऐप्पल वॉच सीरीज़ 9 केस स्विमप्रूफ़ और डस्टप्रूफ़ हैं, और इनमें क्रैक-प्रतिरोधी फ्रंट क्रिस्टल हैं। ऐप्पल वॉच अल्े ट्रा 2 की कीमत 89,900 रुपये है।

डॉलर के मुकाबले 13 पैसे टूटकर 83.29 पर बंद हुआ रुपया

नई दिल्ली ।

अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपये में सोमवार को लगातार चौथे कारोबारी सत्र में गिरावट आई और रुपया 13 पैसे और टूटकर 83.29 (अस्थायी) प्रति डॉलर के अपने सर्वकालिक निचले स्तर पर आ गया। कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने और अंतरराष्ट्रीय बाजार में अन्य मुद्राओं की तुलना में डॉलर के मजबूत होने से रुपया कमजोर हुआ है। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि इसके अलावा घरेलू शेयर बाजार में नकारात्मक रुख ने भी निवेशकों की धारणा को प्रभावित किया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 83.09 के भाव पर खुला। कारोबार के दौरान यह 83.09 से लेकर 83.30 प्रति डॉलर के दायरे में रहने के बाद अंत में 83.29 (अस्थायी) प्रति डॉलर पर बंद हुआ। यह पिछले बंद भाव से 13 पैसे की गिरावट को दर्शाता है। पिछले कारोबारी सत्र में शुक्रवार को रुपया 13 पैसे की गिरावट के साथ 83.16 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था।

इस बीच, दुनिया की छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.11 प्रतिशत गिरकर 105.20 रह गया। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड वायदा 0.42 प्रतिशत की बढ़त के साथ 94.32 डॉलर प्रति बैरल के भाव पर पहुंच गया।

एप्पल आईफोन बनाने वाली फॉक्सकॉन भारत में करेगी दोगुना निवेश

नई दिल्ली ।

एप्पल का आईफोन बनाने वाली कंपनी फॉक्सकॉन टेक्नोलाजी ग्रुप भारत में निवेश की योजना बना रही है। एक रिपोर्ट के मुताबिक ताइवान की यह कंपनी भारत में अपने निवेश को दोगुना करने और रोजगार भी बढ़ाकर दोगुना करने की योजना बना रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसा चीन और अमेरिका के बढ़ती तनातनी के कारण हो रहा है। भारत में फॉक्सकॉन के रिप्रेडेंटेटिव वी ली ने एक लिंक्डइन पोस्ट में कहा कि आईफोन बनाने वाली यह कंपनी दक्षिण एशियाई देश में अपने कारोबार की साइज दोगुना करने की योजना बना रही है, साथ ही उन्होंने प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को उनके जन्मदिन की बधाई दी। हालांकि उनकी योजना क्या होगी और कितने रुपए का निवेश और होगा, इसके बारे में अभी तक कोई डिटेल सामने नहीं आई है। ली ने पोस्ट में लिखा कि भारत में रोजगार, एफडीआई और व्यापार के आकार को दोगुना करने का लक्ष्य रखते हुए, हम अगले साल आपको एक बड़ा जन्मदिन का उपहार देने के लिए और भी अधिक मेहनत करेंगे। रिपोर्ट के मुताबिक ताइवानी कंपनी की निवेश योजनाओं में कर्नाटक की राजधानी बेंगलूरु में हवाई अड्डे के करीब 300 एकड़ की साइट शामिल है। उस प्लांट में आईफोन के असेंबलिग होने की संभावना है और इससे लगभग 100,000 लोगों को नौकरियां मिलने की उम्मीद है। बता दें कि फॉक्सकान अपनी प्रमुख इकाई होन हाई प्रिसिजन इंडस्ट्री कंपनी के लिए भी जानी जाती है। भारत में फॉक्सकॉन का विस्तार इस बात की ओर इशारा करता है कि कैसे चीन को कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स के दुनिया के सबसे बड़े उत्पादक के रूप में अपनी स्थिति खोने का खतरा है।

एप्पल और अन्य अमेरिकी ब्रांड यह चाह रहीं हैं कि उनके चीनी सप्लायर भारत और वियतनाम जैसे वैकल्पिक स्थानों पर अब कारोबार शुरू करें।

जुपिटर लाइफलाइन के शेयर 34 फीसदी उछाल के साथ सूचीबद्ध

नई दिल्ली । जुपिटर लाइफलाइन हॉस्पिटल लिमिटेड के शेयर ने सोमवार को बाजार में शानदार शुरुआत की और 735 रुपए के निर्गम मूल्य के मुकाबले करीब 34 प्रतिशत उछाल के साथ सूचीबद्ध हुए। बीएसई बीएसई पर शेयरों ने निर्गम मूल्य से 30.61 प्रतिशत की बढ़त के साथ 960 रुपए पर शुरुआत की। बाद में यह 39.90 प्रतिशत उछलकर 1,028.30 रुपए पर पहुंच गए। एनएसई पर उसने 32.38 प्रतिशत की बढ़त दर्ज करते हुए 973 रुपए प्रति शेयर पर कारोबार शुरू किया। कंपनी का बाजार मूल्यांकन 6,714.62 करोड़ रुपए रहा। जुपिटर लाइफलाइन हॉस्पिटल लिमिटेड के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) को 63.72 गुना अभिदान मिला था। आईपीओ के लिए मूल्य दायरा 695-735 रुपए प्रति शेयर रखा गया है।

एर्दोआन और मस्क ने तुर्किये में टेस्ला का कारखाना लगाने पर की चर्चा

इस्तांबुल । तुर्किये के राष्ट्रपति रजब तैयब एर्दोआन ने इलेक्ट्रिक कार निर्माता टेस्ला के प्रमुख एलन मस्क से न्यूयॉर्क में मुलाकात कर उनसे तुर्किये में एक कारखाना स्थापित करने को लेकर चर्चा की। एर्दोआन संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिस्सा लेने के लिए अमेरिका में हैं। तुर्किये के राष्ट्रपति कार्यालय की ओर से जारी बयान अनुसार मस्क की अंतरिक्ष अन्वेषण कंपनी स्पेसएक्स और तुर्किये के अंतरिक्ष कार्यक्रम के बीच संभावित सहयोग पर भी चर्चा की गई।बयान में कहा गया। एर्दोआन ने मस्क से कहा कि तुर्किये कृत्रिम मेधा और स्पेसएक्स की उपग्रह इंटरनेट सेवा स्टारलिंक पर सहयोग का स्वागत करेगा। वहीं मस्क ने कहा कि स्पेसएक्स तुर्किये में स्टारलिंक की पेशकश के लिए आवश्यक लाइसेंस हासिल करना चाहता है। बैठक में शामिल हुए तुर्किये के उद्योग एवं प्रौद्योगिकी मंत्री मेहमत फातिह कासिर ने कहा कि मस्क ने तुर्किये को टेस्ला निवेश के लिए सबसे महत्वपूर्ण उम्मीदवारों में से एक बताया। उन्होंने बताया कि एर्दोआन और मस्क ने तुर्किये के सशस्त्र हवाई ड्रोन कार्यक्रम पर भी चर्चा की।

एसबीआई अब लोन लेने वालों के घर भेजेगा चॉकलेट

मुंबई । देश के प्रमुख सरकारी बैंक एसबीआई की तरफ से एक खास पहल शुरू की गई है। देश के सार्वजनिक क्षेत्र के सबसे बड़े ऋणदाता भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने कर्जदारों, खासकर खुदरा ग्राहकों से समय पर मासिक किस्त का भुगतान सुनिश्चित करने के लिए एक अनूठी पहल शुरू की है। बैंक ने बताया कि वह मासिक किस्त के भुगतान में चूक वाले संभावित कर्जदारों को चॉकलेट भेज रहा है। बैंक ने बयान में कहा कि भुगतान में चूक की योजना बना रहे कर्जदार बैंक द्वारा याद दिलाने के बाद भी कोई जवाब नहीं देते हैं इसलिए उनके घर पर बिना उन्हें सूचित किए जाना एक अच्छा विकल्प है। गौरतलब है कि ब्याज दरों में बढ़ोतरी के बीच रिटेल लोन डिस्ट्रीब्यूशन भी बढ़ रहा है। ऐसे में यह कदम बेहतर कर्ज वसूली के उद्देश्य से उठाया जा रहा है। एसबीआई का खुदरा ऋण आवंटन जून, 2023 तिमाही में 16.46 फीसदी बढ़कर 12,04,279 करोड़ रुपए हो गया, जो इससे पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में 10,34,111 करोड़ रुपए था। बैंक का कुल लोन खाता 13.9 फीसदी की वृद्धि के साथ 33,03,731 करोड़ रुपए हो गया।

ग्लोबल बाजार के नकारात्मक संकेतों से 11 दिन बाद लाल निशान पर बंद हुआ बाजार

सेंसेक्स और निफ्टी में दिखाई दी गिरावट

मुंबई ।

ग्लोबल बाजार से मिले नकारात्मक रुझानों के बीच हफ्ते के पहले कारोबारी दिन सोमवार को घरेलू शेयर बाजार में 11 दिन की तेजी पर ब्रेक लगा। सोमवार को इंडेक्स सेंसेक्स और निफ्टी में गिरावट देखी गई। सोमवार के कारोबार में बीएसई सेंसेक्स (सेंसेक्स) 241 अंक टूट गया। वहीं, निफ्टी में भी 59 अंकों की गिरावट दिखाई दी। वैश्विक स्तर पर प्रमुख केंद्रीय बैंक के फैसलों से पहले बाजारों में सावधानी बरती गई, जिससे घरेलू बेंचमार्क सूचकांक 0.36 प्रतिशत तक नीचे आ गए। बीएसई मिडकैप और स्मॉलकैप सूचकांकों में क्रमशः 0.27 प्रतिशत और 0.61 प्रतिशत की गिरावट के साथ व्यापक बाजार भी सोमवार को विक्रेताओं की पकड़ में थे। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 241.79 अंक की गिरावट के साथ 67,596.84 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स 67,803.15 की ऊंचाई तक गया और नीचे में 67,532.83 तक आया। वहीं, दूसरी तरफ नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) के निफ्टी में भी 59.05 अंक गिरावट दर्ज की गई। निफ्टी दिन के अंत में 20,133.30 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान निफ्टी 20,195.35 की ऊंचाई तक गया और नीचे में 20,115.70 तक आया। सोमवार के कारोबार में सेंसेक्स के शेयरों में 16 शेयर हरे निशान पर बंद हुए। पावर ग्रिड, टाइटन,महिंद्रा एंड महिंद्रा, एनटीपीसी और बजाज फिनसर्व सेंसेक्स के टॉप 5 गेनर्स रहे। सबसे ज्यादा मुनाफा पावरग्रिड के शेयरों को हुआ।

इसके शेयर 3.01 फीसदी तक चढ़े। वहीं, दूसरी तरफ सेंसेक्स के शेयरों में 14 शेयर लाल निशान पर बंद हुए। एचडीएफसी बैंक, भारतीय एयरटेल, इंफोसिस, अल्ट्राटेक सीमेंट और टाटा स्टील सेंसेक्स के टॉप 5 लूजर्स रहे। सबसे ज्यादा नुकसान एचडीएफ बैंक के शेयरों को हुआ। इसके शेयर करीब 1.98 फीसदी तक गिर गए।

एनएसई तकनीकी समस्याएं दूर करने आईआरआरए मंच करेगा शुरू

नई दिल्ली । नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) तकनीकी गड़बड़ियों या रुकावटों को दूर करने के लिए एक इन्वेस्टर रिस्क रिडक्शन एक्सेस (आईआरआरए) मंच शुरू करने पर विचार कर रहा है ताकि कारोबार करने वाले (ट्रेडिंग) सदस्यों को किसी भी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े। बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने पिछले साल दिसंबर में शेयर बाजारों और समाशोधन निगम को ट्रेडिंग सदस्यों से जुड़ीं प्रणालियों के कारण सेवाओं में व्यवधान होने पर निवेशकों की मदद के लिए एक मंच बनाने के लिए कहा था। नियामक ने उनसे मंच को एक अक्टूबर तक शुरू करने को कहा था। आईआरआरए मंच अपने निवेशकों के लिए इंटरनेट-आधारित ट्रेडिंग (आईबीटी) और वायरलेस टेक्नोलॉजी के माध्यम से प्रतिभूति कारोबार (एसटीडब्ल्यूटी) का उपयोग करने वाले ट्रेडिंग सदस्यों के लिए उपलब्ध होगा। हालांकि, यह एल्गो ट्रेडिंग और संस्थागत ग्राहकों के लिए उपलब्ध नहीं होगा। एनएसई द्वारा जारी परिपत्र के अनुसार आईआरआरए तीन अक्टूबर, 2023 से सभी एक्सचेंजों में ट्रेडिंग सदस्यों के लिए उपलब्ध होगा।

क्रूड 94 डॉलर के पार, कई शहरों में पेट्रोल और डीजल महंगा

- दिल्ली-मुंबई जैसे महानगरों में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं

नई दिल्ली ।

वैश्विक बाजार में क्रूड की कीमतों ने एक बार फिर आसमान छूना शुरू कर दिया है। मवार सुबह क्रूड का भाव 94 डॉलर के पार पहुंच गया। इस बीच सरकारी तेल कंपनियों की ओर से जारी पेट्रोल-डीजल की कीमतों में भी उछाल दिख रहा है। देश के कई शहरों में सोमवार को तेल की कीमतों में तेजी है। हालांकि दिल्ली-मुंबई जैसे महानगरों में तेल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं आया है। सरकारी तेल कंपनियों के अनुसार गौतम बुद्ध नगर (नोएडा-ग्रेटर नोएडा) में पेट्रोल 6 पैसे महंगा होकर 97.00 रुपए लीटर बिक रहा है। डीजल भी 3 पैसे चढ़ा और 90.14 रुपए लीटर पहुंच गया है। गाजियाबाद में पेट्रोल 14 पैसे चढ़कर 96.58 रुपए लीटर हो गया तो डीजल 13 पैसे महंगा होकर 89.75 रुपए लीटर बिक रहा है। राजस्थान की राजधानी जयपुर में पेट्रोल 14 पैसे चढ़ा और 108.45 रुपए लीटर हो गया, जबकि डीजल 8 पैसे महंगा होकर 93.83 रुपए लीटर बिक रहा है। कच्चे तेल कीमतों में लगातार तीसरे उछाल दिख रहा है। ब्रेंट क्रूड का भाव चढ़कर 94.04 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गया है। डब्ल्यूटीआई भी बढ़त के साथ 90.96 डॉलर प्रति बैरल हो गया है। दिल्ली में पेट्रोल 96.65 रुपए

और डीजल 89.82 रुपए प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपए और डीजल 94.27 रुपए लीटर, चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपए और डीजल 94.24 रुपए प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपए और डीजल 92.76 रुपए प्रति लीटर, नोएडा में पेट्रोल 97.00 रुपए और डीजल 90.14 रुपए प्रति लीटर हो गया है। गाजियाबाद में पेट्रोल 96.58 रुपए और डीजल 89.75 रुपए प्रति लीटर हो गया है। जयपुर में पेट्रोल 108.45 रुपए और डीजल 93.83 रुपए प्रति लीटर हो गया है।

डिजायर ने 25 लाख यूनिट की बिक्री की

नईदिल्ली ।

देश का बहुचर्चित और लोकप्रिय ब्रांड मारुति सुजुकी कंपनी है। कंपनी की कई कारों को भारतीय बाजार में खूब पसंद किया जाता है। कंपनी का दावा है कि मारुति सुजुकी डिजायर ने भारत में 25 लाख यूनिट की बिक्री का आंकड़ा हासिल कर लिया है और यह देश में सबसे ज्यादा बिकने वाली सेडान बन गई है। वर्तमान में इसके कंपेरिज़न में डिजायर, हुंडई ऑरा, होंडा अमेज़, टाटा टिगोर जैसी गाड़ियां हैं, लेकिन अब तक कोई भी कार इतना सेल आंकड़े हासिल नही कर पाई है। इसी के साथ इसका मार्केट शेयर 50 प्रतिशत का है। इस मील के पत्थर पर टिप्पणी करते हुए, मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी, विपणन और बिक्री, श्री शशांक श्रीवास्तव ने कहा, ‘‘मारुति सुजुकी सभी क्षेत्रों में वैश्विक गुणवत्ता मानकों के बेंचमार्क उत्पादों की पेशकश करने के लिए प्रतिबद्ध है, जो नवीनतम तकनीक, नवीन सुविधाओं से सुसज्जित हैं। हम ब्रांड डिज़ायर में अपने ग्राहकों के निरंतर विश्वास के लिए विनम्र और आभारी हैं, क्योंकि यह 25 लाख दिलों पर कब्जा करने की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि का जश्न मनाता है।समसामयिक डिज़ाइन। डिज़ायर कंपनी की खूबियों की पुष्टि है क्योंकि ग्राहक इसे अपनी पसंद की सेडान के रूप में पसंद करते हैं।

की ओर अग्रसरः हनीवेल

शिकागो। अमेरिकी प्रौद्योगिकी कंपनी हनीवेल के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था बहुत तेजी से बढ़ रही है और देश टिकाऊ

प्रौद्योगिकियों में अग्रणी बनने की ओर अग्रसर है। हनीवेल ने कहा कि भारत में अब कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहां वास्तव में नवीकरणीय ऊर्जा का स्तर बहुत अधिक है और जीवाश्म ईंधन का स्तर बहुत कम है। मुझे लगता है कि भारत सतत प्रौद्योगिकियों में अग्रणी बनने के लिए तैयार है। नवंबर 2021 में जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (सीओपी 26) के 26वें सत्र में भारत ने 2070 तक शुद्ध शून्य हासिल करने के अपने लक्ष्य की घोषणा की। कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि हनीवेल वर्तमान में हरित हाइड्रोजन के विद्युत अपघटन के लिए इस प्रौद्योगिकी की आपूर्ति के लिए भारत में कई निर्माताओं के साथ चर्चा कर रहा है। वास्तव में हमारे अधिकतर वैज्ञानिक और इंजीनियर भारत में हैं। मैं कह सकता हूं कि हनीवेल द्वारा विकसित करीब हर प्रौद्योगिकी पर भारतीय टीम काम करती है, कुछ रक्षा तथा अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों को छोड़कर इस पर काम किया जा सकता है।

बच्चों की काबिलियत पर ध्यान दें अभिभावक

बच्चों के लिए स्कूल में स्पोर्ट्स खेलना जरूरी होता है क्योंकि यह कई तरह से उन्हें फायदा पहुंचाता है।

बच्चे के स्कूल में जरूर होनी चाहिए स्पोर्ट्स फैसलिटी

सिर्फ काम और खेलकूद नहीं, ऐसे तो बच्चा सुस्त बन जाएगा। स्पोर्ट्स से दूर रहने से इंसान फिट नहीं रह पाता है और स्ट्रेस में रहता है और बोरिंग भी बन जाता है। स्पोर्ट्स सिर्फ एंटरटेनमेंट या मजे के लिए ही नहीं होते हैं बल्कि इससे मेंटल और फिजिकल हेल्थ को भी बहुत फायदे मिलते हैं। इसलिए मेंटली और फिजिकली फिट रहने के लिए आपको स्पोर्ट्स को अपनी आदत में शुमार करना चाहिए। अगर आप भी पेरेंट हैं, तो अपने बच्चे को स्पोर्ट्स में हिस्सा लेने के लिए कहें और स्कूल में भी स्पोर्ट्स पर जोर देने की बात करें।

लीडरशिप स्किल्स आते हैं

स्पोर्ट्स से बच्चे में अपनी टीम का नेतृत्व करने का गुण विकसित होता है। इस प्रक्रिया के दौरान बच्चे में निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है। लीडर बनकर बच्चा अपनी टीम के साथ कोऑर्डिनेट करना और सलाह देना और लेना सीखता है। बच्चे को अपनी कमजोरी और ताकत का भी पता चलता है जिससे वो समय के साथ बेहतर होता जाता है।

फिजिकल ग्रोथ होती है

फिजिकल एक्टिविटी और एक्सरसाइज से बच्चे की मांसपेशियों और हड्डियों के विकास को बढ़ावा मिलता है। स्पोर्ट्स खेलने वाले बच्चे अच्छी डाइट भी लेते हैं जिससे उनकी सेहत और एनर्जी लेवल अच्छा रहता है। हेल्दी आदतों से कोशिकाओं और हार्मोंस का लेवल भी संतुलित रहता है। अगर बच्चा फिजिकली फिट होगा, तो वो अपनी पढ़ाई पर भी अच्छे से ध्यान दे पाएगा।

अच्छी नींद आती है

खेलकूद के बाद बॉडी धीरे-धीरे नींद लाने वाले हार्मोंस को ट्रिगर करता है। ये हार्मोंस शरीर को आराम देते हैं जिससे अच्छी नींद आती है। अगर बच्चा ठीक से सोएगा नहीं, तो उसे स्कूल में सुस्ती आएगी और वो पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाएगा। इसलिए बच्चों के लिए स्पोर्ट्स जरूरी हैं।

आत्मविश्वास बढ़ता है

गेम में बच्चे को अपनी ताकत और क्षमता के बारे में पता चलता है। इससे बच्चा खुद को दूसरों से बेहतर और अलग मानता है। अपनी ताकत को जानकर बच्चे का आत्मविश्वास भी बढ़ता है। जब टूर्नामेंट में बच्चे की तारीफ की जाती है, तो इससे उसका कॉन्फिडेंस बढ़ता है और वो नई चुनौतियों के लिए खुद को तैयार कर पाता है।

टीम में रह कर काम करना

स्पोर्ट्स से बच्चा अपने साथियों के साथ को-ऑर्डिनेट करना सीखता है। एक टीम में अलग-अलग जेंडर, कास्ट, रंग और धर्म के लोग मिलते हैं। यहां बच्चा हर किसी के साथ काम करना और उसका आदर करना सीखता है। उसे कुछ क्रिएटिव और स्मार्ट स्किल्स भी सीखने को मिलते हैं। अब तो आप समझ ही गए होंगे कि स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए स्पोर्ट्स कितना जरूरी है। इसका बच्चों को कई तरह से फायदा मिलता है जैसे कि वो फिजिकली फिट बनते हैं और कई तरह के स्किल्स भी सीखते हैं। अगर स्कूल में स्पोर्ट्स नहीं है तो आप स्कूल के स्टाफ से बात करें या आप बच्चे को स्कूल के बाहर किसी एकेडमी में भी कोई स्पोर्ट्स ज्वॉइन करवा सकते हैं।

माता-पिता बच्चे के जन्म के साथ ही उसके बहुत बड़े अधिकारी बनने के ख्वाब पाल लेते हैं। कई बार तो ये अभिभावक बच्चों की काबिलियत पर भी ध्यान नहीं देते। बड़े अधिकारी का बेटा भी पढ़ाई में बहुत अच्छा होगा, ये जरूरी नहीं है। ऐसे में उस बच्चे से तमाम उम्मीदें बांधना बच्चे के ऊपर कितना बड़ा मानसिक बोझ है!

बच्चों को घर पर छोड़कर आए एक दंपति ने सामने वालों के घर पहुंचते ही कहा कि बच्चे पढ़ने में बिजी हैं, इसलिए खाने पर हम दोनों ही आ गए। बातों ही बातों में उन वैज्ञानिक पति और लेक्चरर पत्नी ने यह भी कह दिया कि आप लोगों ने तो मामूली सरकारी नौकरी की है इसलिए आप लोगों की बात अलग है। लेकिन हम आज जिस मुकाम पर है, उस हिसाब से हमने अपने बच्चों के लिए भी कुछ बेंच मार्क्स तय किए हैं। ताकि वह हमसे भी ज्यादा ऊंचे ओहदे पर पहुंचे!

केस 2

'अरे साब! क्या बात कर रहे हैं, आप तहसीलदार हैं तो रोहित डिप्टी कलेक्टर बनेगा ही। नाक कटवाएगा क्या पिता की'? उधर, तहसीलदार पिता, अपने चापलूस मित्र की बात पर केवल खिसियानी हंसी हंस रहे थे, वे ये नहीं कह पाए कि उनका बेटा अपनी काबिलियत, अपनी रुचि के हिसाब से जो बनना चाहेगा, वही बनेगा। लेकिन बेटा सहम गया। उसे तो सिर्फ उसके आगे आने वाले समय की चिंता थी।

केस 3

'क्यों रोहन, तुम्हारे पापा शहर के इतने बड़े डॉक्टर हैं, और तुम्हें जरा भी नहीं लगता कि अपने पापा की तरह बनो? उनकी तरह क्या, तुम्हें उनसे चार कदम आगे निकलकर दिखाना होगा न'? तुम्हारे दादा होम्योपैथी के डॉक्टर थे और तुम्हारे पापा ने मेडिसिन में नाम कमाया। जरा मन लगाकर पीएमटी की तैयारी करो। रोहन, जिसे मैथ्स, फिजिक्स जैसे विषयों में दिलचस्पी है, पिता के प्रभाव के आगे कुछ बोल नहीं पा रहा था। हां, मगर चिंता में जरूर पड़ गया कि यदि मैं डॉक्टर नहीं बन पाया तो.?

ये किस्सा केवल रोहित या रोहन का नहीं है, बल्कि हमारे समाज के अधिसंख्य बच्चों का है, जिनके माता-पिता बच्चे के जन्म के साथ ही उसके बहुत बड़े अधिकारी बनने के ख्वाब पाल लेते हैं। कई बार

अधिकारी का बेटा भी पढ़ाई में बहुत अच्छा होगा, ये जरूरी नहीं है। ऐसे में उस बच्चे से तमाम उम्मीदें बांधना बच्चे के ऊपर कितना बड़ा मानसिक बोझ है! बच्चा ऐसी इच्छाएं सुनकर ही दहशत में आ जाता है। पढ़ाई के बोझ के साथ-साथ मां-बाप का नाम रोशन करने का बोझ उठाए, न ठीक से पढ़ाई कर पाता है, न ही दिमागी सुकून मिल पाता है उसे। पढ़ाई के समय ये तनाव बच्चों के ऊपर जबर्दस्त तरीके से सवार होता है। इस तनाव के शिकार बच्चे का

तो? जैसी चिंता पर ज्यादा केंद्रित रहता है। नतीजतन, न पढ़ाई हो पाती है, न आराम और न ही अगला पेपर अच्छा हो पाता है।

रिसर्च में भी खुलासा

अमेरिका के मियामी विश्वविद्यालय की एक रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 1970 के बाद से बच्चों के प्रति जिस प्रकार अभिभावकों की अपेक्षाएं बढ़ रही हैं, उनसे बच्चों में तनाव का आंकड़ा आश्चर्यजनक रूप से बढ़ा है। प्रो.जेफरी पी.बोस्को का कहना है कि यह ग्राफ वर्ष 70 से लेकर 2000 के बीच में करीब 17 प्रतिशत तक बढ़ा, जो

रहा है। अभिभावकों में बच्चों को पूरे समय पढ़ाते/पढ़ते देखने की अजीबोगरीब रुचि पैदा हो गई है। अधिकांश अभिभावक स्कूल में भी ये शिकायत करते मिल जाएंगे-क्या करें पढ़ता ही नहीं है, टीवी देखता है। अब यदि बच्चे को हर वक्त पढ़ाई में ही जुटा देखने की चाहत अभिभावक की होगी तो उन्हें क्या लगता है, बच्चे सचमुच पढ़ रहे होंगे? ना, बिल्कुल नहीं। पढ़ाई में मन लगने का भी एक निश्चित

है, पढ़िए, जैसे ही मन उचाट हो, किताब बंद कर दीजिए क्योंकि बिना मन के पढ़ाई होगी ही नहीं। मजे की बात, मां-बाप का, बच्चे को खुद से बेहतर बनाने का दवाब अधिकांशत: लड़कों पर ही होता है। इस दवाब की शिकार फिलहाल लड़कियां नहीं हैं। इसके पीछे वही सोच काम कर रही होती है कि लड़की को तो दूसरे के घर जाना है, सो उनका नाम तो लड़के को ही रोशन करना है, तब पूरा ध्यान लड़के पर ही लगाया जाए।

दसवीं का एक बच्चा, जो शाम की क्लास में आता है, उसे मैथ्स नहीं पढ़ना। सबसे कम नंबर उसके मैथ्स में ही आते हैं जबकि दूसरे

माता-पिता उसे बहुत बड़ा इंजीनियर बनाना चाहते हैं और बच्चा अभी से तनाव में है कि यदि उसे किसी भी प्रकार से मैथ्स दिला दी गई, तो वह कैसे पढ़ेगा?

बच्चों की मानसिकता समझें

पिछले दिनों अखबारों में कई समाचार आए बच्चों द्वारा आत्महत्या किए जाने के। सामान्य तौर पर हमारी प्रतिक्रिया होती है-' अरे! पेपर अच्छा नहीं हुआ था तो उसमें मरने की क्या बात? लेकिन ये हम या आप कह रहे होते हैं न? उस बच्चे पर इस इम्तिहान को लेकर, संबंधित विषय को लेकर घर वालों का कितना दबाव रहा होगा, ये उसकी आत्महत्या से हम समझ सकते हैं। मरना बहुत आसान नहीं होता। एक बच्ची ने आत्महत्या के अपने नोट में लिखा- मेरी अंग्रेजी बहुत कमजोर है। मैं इस विषय में पास नहीं हो पाऊंगी। सोचिए उस बच्ची पर अंग्रेजी का कैसा दवाब रहा होगा? तो माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों की रुचियों का ध्यान रखें और उन्हें अपनी रुचि के क्षेत्र में आगे बढ़ने को न केवल प्रोत्साहित करें, बल्कि मौके भी तलाशें। आज चुनिंदा विषय नहीं रह गए हैं पढ़ने को, न ही चुनिंदा राहें। हर विषय के बच्चों के लिए काम के पर्याप्त मौके हैं। बच्चों को उनके अपने सपने पूरे करने दें, उनमें अपना सपना साकार न करें। हमारी ये सोच शायद उन्हें तनावमुक्त कर सकें।

मानसून में बनाएं कॉर्न चाट

मानसून में गर्मा-गर्म भुट्टा तो आपने बहुत खाएं होंगे। मगर आज हम आपके लिए खास स्वीट कॉर्न चाय रेसिपी लेकर आए है। इसे आप अपनी मनपसंद सब्जियों से बना सकती है। वहीं स्वीट कॉर्न पोषक तत्व व एंटी-ऑक्सडीटेंस गुणों से भरपूर होती है। ऐसे में इसका सेवन करने से टेस्ट के साथ सेहत भी बरकरार रहेगी। जानते हैं इसे बनाने का तरीका...

सामग्री

फोजन कॉर्न (उबले)- 900 ग्राम, मिर्च पाउडर - 1/2 छोटा चम्मच, भुना जीरा पाउडर - 2 छोटे चम्मच
नमक- आवश्यकता अनुसार, शिमला मिर्च - 2
नींबू का रस -2 बड़े चम्मच, धनिया - 2 बड़े चम्मच
काली मिर्च - 1/2 छोटा चम्मच
काला नमक - 1 छोटा चम्मच, टमाटर - 1 कप
प्याज - 1, तेल- आवश्यकता अनुसार

विधि

- एक बाउल में सभी मसाले मिलाएं।
- अलग बाउल में सब्जियां काट कर मिलाएं।
- पैन में तेल गर्म करके मीडियम आंच पर कॉर्न फाई करें।
- अब कॉर्न को सब्जियों में मिलाएं।
- इसमें मसाला, नींबू का रस मिलाएं।
- चाट को सर्विंग प्लेट में निकाल कर धनिया से गार्निश करके सर्व करें।

बच्चों के लिए बनाएं क्रिस्पी चीजी रैप

चीज से आपने बर्गर, पिज्जा तो बहुत खाया होगा। वहीं बच्चों को तो चीज बेहद ही पसंद होता है। चीज प्रोटीन से भरपूर होता है। यह खाने में टेस्टी होने के साथ सेहत को दुरुस्त रखने में मदद करता है। ऐसे में हम आपके लिए खास चीजी रैप की रेसिपी लेकर आए है।

सामग्री

उबले मैश्ड आलू- 1,1/2, प्याज- 1 (बारीक कटा)
शिमला मिर्च-1 (बारीक कटी),
चिली फ्लेक्स- 1 छोटा चम्मच,
ऑरिगेनो- 1/2 छोटा चम्मच, ब्रेड स्लाइस- 4,
चीज- 2 बड़े चम्मच (कद्दूकस किया)
नमक- स्वाद अनुसार, तेल- आवश्यकता अनुसार

विधि

- एक बाउल में आलू, प्याज, शिमला मिर्च, चिली फ्लेक्स, ऑरिगेनो, नमक और चीज डालकर मिलाएं।
- ब्रेड या रोटी को हल्के से दबाकर स्टफिंग भरें।
- ब्रेड पर तेल लगाकर फोल्ड करें।
- पैन में तेल गर्म करके ब्रेड रैप तल लें।
- इसे सर्विंग प्लेट में निकाल कर टोमैटो सॉस के साथ सर्व करें।

हैल्थ कॉन्शियस है तो खाएं गुजराती खांडवी

बेसन खांडवी गुजरात की फेमस डिशेज में से एक है। यह खाने में टेस्टी और हल्की होती है। इसे खाने से पेट हैल्दी रहता है। मगर अक्सर लोग इसे बनाने में कंफूजर रहते हैं। आप इसे विकेंड में बनाकर खा सकते हैं। ऐसे में आज हम आपके लिए खास गुजराती खांडवी की रेसिपी लेकर आए है। जानते हैं इसे बनाने की रेसिपी...

सामग्री

बेसन- 1 कप
अदरक-हरी मिर्च पेस्ट - 1 बड़ा चम्मच
हल्दी पाउडर - 1/2 छोटा चम्मच
छाछ- 3 कप
हींग- चुटकीभर
राई- 1/2 छोटा चम्मच
नींबू का रस - 1 बड़ा चम्मच
नमक- स्वाद अनुसार
तेल- आवश्यकता अनुसार
नारियल- 2 बड़े चम्मच (कद्दूकस किया)
धनिया- 1 बड़ा चम्मच

विधि

- एक बाउल में बेसन, नमक, हल्दी, नींबू का रस, अदरक-हरी मिर्च का पेस्ट और छाछ मिलाएं।
- इसे पैन में डालकर लगातार चलाते हुए पकाएं।
- मिश्रण को गाढ़ा घोल होने तक पकाएं।
- अब प्लेट के पिछले हिस्से पर तेल लगाकर मिश्रण पतला सा मिश्रण फैलाएं।
- मिश्रण के ठंडा होने पर इसे दो इंच चौड़ी स्ट्रिप्स में काटकर रोल करें।
- अब अलग पैन में तेल गर्म करके हींग और राई भूनें।
- प्लेट में खांडवी रखकर ऊपर से हींग और राई का तड़का डालें।
- नारियल और धनिया से गार्निश करके सर्व करें।

अपनी स्किन प्रॉब्लम के हिसाब से बेसन में मिलाकर लगाएं ये चीजें

मौसम भले कोई भी हो स्किन से जुड़ी समस्याएं होना आम बात है। मगर अक्सर लड़कियां स्किन प्रॉब्लम्स के हिसाब से सही चीजें नहीं चुनती है। इसके कारण समस्या वहीं की वहीं रहती है। वैसे तो स्किन संबंधी समस्याओं से आराम पाने के लिए बेसन का इस्तेमाल करना बेस्ट माना गया है। ऐसे में आज हम आपको कुछ ऐसी चीजों के बारे बताते हैं कि जिसे आप बेसन में मिलाकर लगाने से फायदा मिलेगा। जानते हैं उन होममेड फेसपैक के बारे में...

ऑयली स्किन के लिए बेसन और टमाटर फेसपैक

ऑयली स्किन टाइप वाली लड़कियों को बेसन और टमाटर का फेसपैक लगाना चाहिए। यह चेहरे से एक्स्ट्रा ऑयल साफ करके त्वचा की रंगत निखारने में मदद करता है। इससे चेहरे पर मौजूद दाग-धब्बे, सनटैन की समस्या दूर होने में मदद मिलती है।

ऐसे करें इस्तेमाल

इसके लिए 1 टमाटर को ब्लेंड करके पेस्ट बनाएं। फिर इसमें जरूरत अनुसार बेसन, कुछ बूंदें नींबू के रस की मिलाकर चेहरे पर लगाएं। 15 मिनट या सूखने के बाद फेसपैक को हल्के हाथों से स्क्रब करते हुए उतारे। बाद में ताजे पानी से मुंह धो लें।

दाग-धब्बे हटाने के लिए बेसन और हल्दी फेसपैक

अगर आप चेहरे पर पड़े दाग-धब्बे, कील-मुंहासे आदि से परेशान है तो बेसन में हल्दी मिलाकर लगाएं। इससे स्किन संबंधी समस्याएं दूर होकर चेहरा साफ, निखरा, मुलायम व जवां नजर आएगा। साथ ही त्वचा की रंगत निखरेगी।

ऐसे करें इस्तेमाल

एक कटोरी में 1 बड़ा चम्मच बेसन, चुटकीभर हल्दी और जरूरत अनुसार गुलाब जल या पानी मिलाएं। अब इसे चेहरे व गर्दन पर 10-15 मिनट तक लगाएं। बाद में इसे पानी से साफ करके मॉश्चराइजर लगा लें।

झुर्रियां दूर करने के लिए बेसन और दही फेसपैक

झुर्रियों को कम करने के लिए दही और बेसन का फेसपैक बेस्ट माना जाता है। यह ढीली पड़ी स्किन को टाइट करने उसे ग्लोइंग बनाने में मदद करता है। इसके साथ ही यह त्वचा को नमी देकर बुढ़ापे के लक्षण करता है।

ऐसे करें इस्तेमाल

एक कटोरी में 1 बड़ा चम्मच बेसन और जरूरत अनुसार दही मिलाएं। इसे हल्के हाथों से चेहरे व गर्दन पर लगाएं। 20-30 मिनट के बाद चेहरा धो लें।

ग्लोइंग स्किन के लिए बेसन और शहद फेसपैक

सनटैन से खराब हुई स्किन पर निखार वापस लाने के लिए आप बेसन और शहद का फेसपैक लगा सकती है। बेसन स्क्रब की तरह काम करके डेड स्किन सेल्स को साफ करता है। वहीं शहद क्लींजिंग एजेंट की तरह काम करके ग्लो लाने में मजज करता है। इसके साथ ही त्वचा में होने वाली जलन, खुजली व रूखापन दूर होगा।

ऐसे करें इस्तेमाल

इसके लिए एक कटोरी में 1 बड़ा चम्मच बेसन और जरूरत अनुसार शहद मिलाएं। इसे चेहरे व गर्दन पर स्क्रब करते हुए लगाएं। 15-20 मिनट तक लगा रहने दें। बाद में इसे पानी से साफ कर लें।

मुसीबत के दौरान गुरुद्वारों की शरण में पहुंचे कनाडा गए पंजाबी स्टूडेंट्स

लुधियाना । भले ही अच्छे अवसर और बेहतर जीवन शैली के लिए पंजाबी छात्र विदेश जाना पसंद करते हैं। लेकिन कनाडा गए छात्रों के लिए मुश्किलों का दौर शुरु हो गया है। अब उन्हें वहां गुरुद्वारों की शरण लेनी पड़ रही है। एक सर्वे की रिपोर्ट के मुताबिक 2022 में 1.63 लाख पंजाबी स्टूडैंट्स कनाडा गए थे। इसी वजह से वहां पर अब पंजाबी स्टूडैंट्स की संख्या बहुत अधिक हो चुकी है। इसी का फायदा अब वहां की कंपनियां उठाने लगी हैं। हालात ऐसे बन चुके हैं कि लेबर 5 गुना तक सस्ती हो चुकी है। जिस काम के बदले 2.50 डॉलर मिलते थे, अब उसी काम के बदले मात्र आधा डॉलर ही मिल रहा है। कुल मिलाकर एक कहावत है, 'दूर के ढोल सुहावने' और यही इस बात पर लागू हो रही है। कनाडा जाना आसान है, लेकिन वहां के नियम कानूनों का पालन कर जीवन यापन करना उतना ही कठिन है। जानकारों का कहना है कि इस समय हालात ये बन चुके हैं कि पंजाबी छात्रों को लेबर जॉब नहीं मिल पा रही है। जिन्हें हाथ में कुछ हुनर है, सिर्फ वे ही यहां पर थोड़ा-बहुत काम कर पा रहे हैं लेकिन हालात दिन-ब-दिन बदतर होते जा रहे हैं। पंजाबी छात्रों के पास महीने का राशन तक खरीदने के पैसे नहीं हैं। यहां तक उन्हें किराया तक देना मुश्किल हो चुका है। कई छात्र तो अब पूरी तरह से गुरुद्वारों पर ही निर्भर हो चुके हैं। वो गुरुद्वारों में लंगर खाकर गुजारा करने के लिए मजबूर हो चुके हैं। कनाडा में रहने वाले कई छात्र बताते हैं कि उन्हें अब कोई काम नहीं मिल पा रहा है। अब कुछ न कमा पा रहा हैं और न बचत कर पा रहे हैं। वे नहीं जानते कि मुझे ऐसे हालात कब सुधरेंगे और अब उनका भविष्य अनिश्चित हो चुका है। हजारों छात्रों को काम नहीं मिल पा रहा है। छात्रों ने आरोप लगाया कि कनाडा सरकार अब हमें नहीं पहचान रही, लेकिन हम उन्हें बताना चाहेंगे कि हम वे लोग हैं जिन्होंने आपकी 'श्रम की कमी' को हल करने सहायता की थी। हालांकि इसी नीति का दुरुपयोग कर पंजाबी छात्रों से बहुत कम मानदेय पर कहीं अधिक कार्य करवाया जा रहा है। कनाडा सरकार उनका दुरुपयोग श्रम के सस्ते स्रोत यानी 'चीप लेबर' के रूप में कर रही है और जब उनका उपयोग हो जाता है, तब वह उन्हें देश छोड़ने के लिए बाध्य कर देती है। दरअसल बीते साल कनाडा में जस्टिन ट्रूडो की सरकार ने लगभग 50 हजार विदेशी छात्रों को स्नातक होने के पश्चात नौकरी ढूंढने के लिए 18 महीने तक रहने की अनुमति दी थी।

हथियारबंद लोगों ने अपहरण कर किया सैनिक की हत्या

इंफाल। मणिपुर के इंफाल पूर्वी जिले के खुनिंगथेक गांव में रविवार को भारतीय सेना के एक जवान का शव मिला। जवान की पहचान कांगपोकपी जिले के लीमाखोंग में सेना की रक्षा सुरक्षा कोर (डीएससी) प्लाटून के सिपाही सेर्टो थांगथांग कोम के रूप में हुई है। वह इंफाल पश्चिम के तरुंग का निवासी था। सूत्रों ने बताया कि अज्ञात हथियारबंद लोगों ने शनिवार की सुबह करीब अवकाश पर आए सिपाही कोम का सुबह 10 बजे उनके घर से अपहरण कर लिया था। मामले के प्रत्यक्षदर्शी और कोम के 10 वर्षीय बेटे के अनुसार तीन लोग उसके घर में तब दाखिल हुए जब वह अपने पिता के साथ बरामदे में काम कर रहा था। अधिकारियों ने उनके बेटे के हवाले से बताया कि हथियारबंद लोगों ने सिपाही को बंदूक दिखाकर जबरदस्ती सफेद रंग के एक वाहन में बिठाया और मौके से फरार हो गए। रविवार सुबह तक सिपाही कोम की कोई खबर नहीं मिली। सुबह 9.30 बजे के आसपास उनका शव इंफाल पूर्व जिले के खुनिंगथेक गांव में मिला। अधिकारियों के अनुसार, जवान की पहचान की पुष्टि उनके भाई और एक रिश्तेदार ने की। उन लोगों ने बताया कि सैनिक के सिर पर गोली लगने का निशान था। सिपाही कोम के परिवार में पत्नी, बेटी और बेटा है। अंतिम संस्कार परिवार की इच्छा के अनुसार किया जाएगा। सेना ने शोकसंतप्त परिवार की सहायता के लिए एक टीम भेजी है।

भारी बारिश से रेल यात्रियों का बुरा हाल, बारिश से पश्चिम रेलवे लाइन पर 22 मेल-एक्सप्रेस प्रभावित

मुंबई। भारी बारिश के चलते पश्चिम रेलवे रूट पर कई एक्सप्रेस ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं. पश्चिम रेलवे के रतलाम सेक्शन में भारी बारिश के कारण मुंबई सेंट्रल से दिल्ली, गुजरात, राजस्थान तक चलने वाली ट्रेनों का शेड्यूल काफी प्रभावित हुआ है। मुंबई सेंट्रल से हजरत निजामुद्दीन अगस्त क्रांति, तेजस राजधानी एक्सप्रेस समेत कुल 19 ट्रेनें लेट हो गई हैं। इसका खामियाजा यात्रियों को भुगतना पड़ रहा है। बताया गया है कि गुजरात के गोधरा रेलवे स्टेशन पर रेलवे ट्रैक पर पानी जमा हो गया है और जलस्तर लगातार बढ़ रहा है. इसका असर ट्रेन सेवा पर पड़ा है. मुंबई और दिल्ली के बीच ट्रेन सेवाएं प्रभावित हुई हैं. अवंतिका एक्सप्रेस रद्द कर दी गई है. राजधानी समेत अवध पश्चिम गोल्डन टेंपल जम्मू तवी एक्सप्रेस ट्रेन का रूट बदल दिया गया है। ट्रेन सेवाएं बाधित होने से यात्री गोधरा रेलवे स्टेशन पर फंसे हुए हैं। मुंबई और दिल्ली के बीच ट्रैक पर पानी भर जाने के कारण राजधानी समेत यात्री ट्रेनों का रूट डायवर्ट कर दिया गया है. साथ ही कुछ लोकल मेमू ट्रेनों को रद्द कर दिया गया है। पश्चिम रेलवे सूत्रों के मुताबिक भारी बारिश के कारण रेलवे ट्रैक पर पानी बहने के कारण निर्धारित मार्गों पर ट्रेनों को भोपाल-इटारसी-खंडवा मार्ग से डायवर्ट करने का निर्णय लिया गया है। जबकि करीब दो दर्जन ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं और कुछ ट्रेनें देरी से चल रही हैं. इससे गणेशोत्सव के मौके पर यात्रा करने वाले यात्रियों को काफी परेशानी उठानी पड़ रही है. ट्रेन नंबर 12961 मुंबई सेंट्रल-इंदौर-मुंबई सेंट्रल अवंतिका एक्सप्रेस, इंदौर-दौंड-इंदौर एक्सप्रेस, नागदा-रतलाम स्पेशल रतलाम-उज्जैन स्पेशल, दाहोद-रतलाम-दाहोद स्पेशल, रतलाम-नागदा स्पेशल रद्द कर दी गई है। ट्रेन 12939 पुणे-जयपुर जेसीओ को भेस्तान-जलगांव-भुसावल-इटारसी-भोपाल-संत हिरदाराम नगर नागदा रूट पर डायवर्ट किया गया है.

डीजीपी शत्रुजीत कपूर की पहल पर हरियाणा बनेगा नशा मुक्त राज्य

सोनीपत । हरियाणा पुलिस के डीजीपी शत्रुजीत कपूर की पहल पर राज्य को नशा मुक्त बनाने के लिए हरसंभव प्रयास किए जाएंगे। डीजीपी शत्रुजीत कपूर ने सोनीपत जिले का दौरा करने के बाद पुलिस के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ हुई बैठकें में अपनी मंशा जाहिर की। उन्होंने इस दौरान अधिकारियों के साथ-साथ पुलिस कर्मचारियों को जनता की सेवा के लिए हमेशा तैयार रहने की बात कही। डीजीपी ने सोनीपत में मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि हरियाणा पुलिस का मुख्य लक्ष्य हरियाणा को नशा मुक्त बनाना और महिलाओं की सुरक्षा और सुदृढ़ करना है। उधर, कांग्रेस विधायक मामन खान की गिरफ्तारी और मोनू मानेसर के लॉरेंस बिश्नोई के साथ वीडियो कॉल रिकॉर्डिंग वायरल पर डीजीपी शत्रुजीत कपूर ने ज्यादा कुछ नहीं कहा और बोले कि निजी मामलों की जानकारी स्थानीय पुलिस मीडिया को देगी। उन्होंने मीडिया से कहा कि आज हमने सोनीपत पुलिस अधिकारी और कर्मचारियों के साथ बैठक की है और इस बैठक में हमने कुछ निर्णय लिए हैं, जिसमें सबसे पहले जनता की समस्याओं का समय पर निवारण करना है और शिकायतों का निवारण सही तरीके से हो इसके लिए हमने एक सिस्टम बनाया है। हमारे शिकायतकर्ता पुलिस से कितने संतुष्ट हैं और कितने संतुष्ट नहीं है। इसका फीड बैक लिया जाएगा। इसके लिए उच्च अधिकारी शिकायतकर्ताओं से सीधे तौर पर बातचीत करेंगे, ताकि इसका स्तर बढ़ाया जा सके। उन्होंने कहा कि महिलाओं की सुरक्षा का एक मुद्दा हमारे सामने सबसे बड़ा है, जहां पर आवारागर्दी होती है, उन हॉटस्पॉट को चिन्हित किया जाए। खासकर पब्लिक ट्रांसपोर्ट में महिलाओं को सफर करते हुए किसी भी तरह की दिक्कतें ना आए। नशे पर रोकथाम के लिए हम लगातार कम कर रहे हैं। हरियाणा और इस जिले को हम नशा मुक्त बनाने के लिए काम करेंगे। हरियाणा को नशा मुक्त बनाने के लिए काम कर रहे है।

निपाह वायरस से राहत, केरल में कोई नया मामला नहीं मिला

तिरुवनन्तपुरम । केरल में फिलहाल 'निपाह वायरस का कोई नया मामला सामने नहीं आया है। हालांकि एक नौ साल के बच्चे का इलाज चल रहा है, उसे अब वेंटिलेटर से हटा दिया गया है। फिलहाल वह ऑक्सीजन सपोर्ट पर है। केरल की स्वास्थ्य मंत्री वीना जॉर्ज ने बताया कि बच्चे की सेहत में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है, उसकी स्थिति आशाजनक है। फिलहाल 1233 लोग अब संपर्क सूची में हैं। 23 लोगों को मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। आईएमसीएच में 4 लोग भर्ती हैं। वहीं 36 चमगादड़ों के नमूने इकट्ठा किए गए और परीक्षण के लिए भेजे गए। निपाह वायरस की स्थिति का जायजा लेने के लिए एहतियात के तौर पर 34,167 घरों में हाउस विजिट पूरा हो चुका है। सतर्कता और सावधानी बरतने के सवाल पर मंत्री जॉर्ज ने कहा कि वायरस का इन्क्यूबेशन पीरियड 21 दिनों का होता है।

जी-20 के सफल आयोजन से पीएम मोदी ने भारत को चमक दिया : जयशंकर

नई दिल्ली (एजेंसी)। आज मैं केंद्रीय मंत्री हूं, पर 40 साल जो डिप्लोमेट की ट्रेनिंग है न, वे जाती नहीं... भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर की यह बात काफी कुछ कह जाती है। एक सवाल के जवाब में जयशंकर ने कहा कि मैं राजनीति में आ चुका हूं, पर आप जानते हैं कि मैं राजनेता नहीं हूं। लालू सहित कई विपक्षी नेताओं ने जी20 समिट को पैसे की बर्बादी कहा है। जयशंकर ने बताया कि इससे हमें क्या मिला। विदेश मंत्री ने कहा कि जी20 समिट में जो भी मेहमान आए थे, उन्होंने भारत की क्षमता देखी। दो दिन में अगर किसी एक बात की चर्चा सबसे ज्यादा हुई तब वह चंद्रयान की थी। जब लोग लौटे तब उनके दिमाग में यह बात रहेगी कि भारत की क्षमता क्या है। यह 60 शहरों में मनाया गया। टूरिज्म, आयात-निर्यात, रिसोर्सेज ही नहीं हर क्षेत्र पर इसका प्रभाव पड़ा है। जब कहा गया कि समिट पहले भी होते थे, प्रधानमंत्री पहले भी होते थे, तब विदेश मंत्री ने टोकते हुए कहा कि इसतरह नहीं होते थे। पूरे देश में समिट फैला दिया ताकि राजनीति में फायदा हो, मोदी जी की छवि चमके? इस सवाल पर जयशंकर ने कहा कि अगर कुछ चमक रहा है, तब भारत चमक रहा है।

इस दौरान पीएम मोदी के जी20 समिट का वीडियो दिखाया गया जिसमें वह बाइडेन सहित दुनिया के तमाम नेताओं से मुस्कुराते हुए मिलते हैं। पत्रकार ने पूछा कि क्या पीएम ने सभी को सेट कर लिया? इस सवाल पर जयशंकर ने मुस्कुराते हुए कहा, सच है। आगे कहा कि मोदी जी जिनसे भी मिलते हैं, वो कॉमन पॉइंट ढूंढ लेते हैं। मुझे उनके साथ दुनिया में घूमते हुए करीब 10 साल हो गए और मैंने देखा है कि जब यह पीएम बने तब लोगों ने कहा कि विदेश नीति के बारे में जानकारी है ही नहीं। अब वहीं पीएम की सक्सेस आप देखिए, इसकी वजह यह है कि वह खुले विचारों के नेता हैं जो लोगों के साथ जुड़ते हैं। इस दौरान सवाल किया गया पहले लोग समझते थे कि मोदी जी की ट्रंप से दोस्ती है, बाइडेन उन्हें हराकर आए वह भी पीएम के दोस्त बन गए? विदेश मंत्री ने कहा, ये मानना पड़ेगा न, ये मोदी जी हैं। उनके पहले ओबामा भी थे। एक किस्म से मोदी जी का कैरेक्टर है कि जिनके साथ भी वह कॉन्टैक्ट में आते हैं, अलग तरह की दोस्ती कर लेते हैं।

जयशंकर ने बताया कि बाइडेन से मोदी जी की पहली मुलाकात 2014 में हुई थी। मोदी जी का पहला दौरा था अमेरिका का और जो बाइडेन उपराष्ट्रपति थे। उस समय मैं अमेरिका में राजदूत था। बाइडेन भी काफी ओपन माइंडेड हैं। वह दिल की बात प्रकट करते हैं। उन्होंने मोदी जी के लिए लंच होस्ट किया था। बाद में जब वह 2020 में राष्ट्रपति चुने गए तब यह स्वाभाविक था कि पहले की जो मुलाकात थी उसका पॉजिटिव प्रभाव, यादों का कुछ असर हो। जैसे ही वह राष्ट्रपति बने, उस समय कोविड चल रहा था। क्वाड के जरिए पहली मीटिंग उनकी मोदी जी के साथ थी। जापान में बाइडेन के पीएम मोदी से ऑटोग्राफ मांगने की बात का जिक्र कर जयशंकर ने कहा कि 10 साल के बाद अगर आपकी पॉपुलैरिटी रेटिंग 70 प्रतिशत से ज्यादा हो, तब ये कमाल की बात है और ये दुनिया के नेताओं को पता है।

प्रलय मिसाइल बढ़ाएगी सेना की ताकत, रक्षा मंत्रालय ने दी खरीद की मंजूरी

नई दिल्ली । भारतीय सेना की ताकत बढ़ाने के लिए रक्षा मंत्रालय ने 'प्रलय' बैलिस्टिक मिसाइलों की खरीदी को मंजूरी दे दी है। रक्षा मंत्रालय ने एक रेजिमेंट के अधिग्रहण के लिए यह मंजूरी दी है। इन्हें नियंत्रण रेखा पर तैनात किया जाएगा। रक्षा अधिकारियों ने बताया कि सेना की सैन्य क्षमताओं में अधिक मारक क्षमता जोड़ने का निर्णय रक्षा अधिग्रहण परिषद की हालिया बैठक के दौरान लिया गया था। यह सेना के लिए एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। प्रलय सेना की सूची में सबसे लंबी दूरी की सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल होगी। प्रलय ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल के साथ मिलकर भारत की रॉकेट फोर्स का आधार बनेगा। चीन और पाकिस्तान दोनों ने पहले ही सामरिक उद्देश्यों के लिए बैलिस्टिक मिसाइलों को तैनात किया है। हालांकि रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा विकसित सैन्य आवश्यकताओं के अनुसार रेंज में और वृद्धि के लिए तैयार हैं। यह खरीद इन मिसाइलों के अधिग्रहण के लिए भारतीय वायु सेना को दी गई इसी तरह की मंजूरी के बाद की गई है। प्रलय की खासियतों की बात करें तो 'प्रलय' बैलिस्टिक मिसाइलों की मारक क्षमता 150 से 500 किलोमीटर तक है। यह लगभग 350 किलोग्राम से 700 किलोग्राम तक के घातक हथियार ले जाने में सक्षम है। यह एक उच्च विस्फोटक पूर्वनिर्मित विखंडन वारहेड, पेनेट्रेशन-कम-ब्लास्ट (पीसीबी) और भगोड़ा इनकार प्रवेश सबम्यूनिशन (आरडीपीएस) भी ले जा सकता है। प्रलय' को अर्ध-बैलिस्टिक सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जिसमें इंटरसेप्टर मिसाइलों को विफल करने के लिए डिज़ाइन की गई उन्नत क्षमताएं हैं। यह एक निश्चित दूरी तय करने के बाद उड़ान के बीच में अपने प्रक्षेप पथ को बदलने की क्षमता प्रदर्शित करता है। मिसाइल एक ठोस प्रणोदक रॉकेट मोटर द्वारा संचालित होती है और इसकी मार्गदर्शन प्रणाली में अत्याधुनिक नेविगेशन और एकीकृत एवियोनिक्स सहित अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों को शामिल किया गया है। इसकी तुलना चीन की डोंग फेर 12 और रूसी इस्कंदर मिसाइल से की जा सकती है जिसका इस्तेमाल यूक्रेन के साथ चल रहे युद्ध में किया गया है।

सोनिया गांधी का सपना है, तेलंगाना में कांग्रेस की सरकार बनाना

-कांग्रेस कार्य समिति की बैठक के बाद आयोजित बड़ी रैली को किया संबोधित

हैदराबाद (एजेंसी)। कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने कहा कि उनका सपना है कि, तेलंगाना में कांग्रेस की सरकार बने। वह यहां पार्टी की एक बड़ी रैली को संबोधित कर रहीं थीं। कांग्रेस की दो दिवसीय कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) की बैठक के बाद हैदराबाद के बाहरी इलाके में पार्टी द्वारा आयोजित एक बड़ी रैली में उन्होंने कहा कि तेलंगाना में कांग्रेस सरकार देखना मेरा सपना रहा है जो हमारे समाज के सभी वर्गों के लिए काम करे। उन्होंने जन समुदाय से पूछा क्या आप सभी हमें अपना समर्थन देने जा रहे हैं, और हजारों लोगों ने जोरदार जयकारे के साथ हां में जवाब दिया। तेलंगाना राज्य के गठन में अहम भूमिका निभाने वाली सोनिया गांधी ने कहा कि उन्हें अपने सहयोगियों के साथ इस महान राज्य के जन्म का हिस्सा बनने का अवसर मिला। उन्होंने बैठक में अपने कहा कि अब इसे नई ऊंचाई पर ले जाना हमारा कर्तव्य है। कांग्रेस पार्टी तेलंगाना के लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए छह गारंटियों की घोषणा कर रही है और पार्टी उनमें से प्रत्येक को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है।

सोनिया गांधी ने कहा कि मैं इस ऐतिहासिक दिन पर आपके साथ एक ऐसी घोषणा करते हुए खुशी से भर गई हूं, जो तेलंगाना की मेरी प्यारी बहनों को सशक्त बनाएगी। उन्होंने एक गारंटी महालक्ष्मी की घोषणा की। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि सोनिया गांधी ने तेलंगाना राज्य गठन का वादा किया था और उन्होंने इसे निभाया। उन्होंने कहा कि जिन्होंने कुछ नहीं किया, वे बड़े-बड़े दावे कर रहे हैं। तेलंगाना के मुख्यमंत्री केसीआर ने राज्य को दिवालियापन के कगार पर धकेल दिया है। उन्होंने कहा कि जिस राज्य का बजट सरप्लस था, उस पर अब 3.66 लाख करोड़ रुपये का कर्ज है।

कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया कि केसीआर की पार्टी बीआरएस बीजेपी की बी टीम है और लोगों से सतर्क रहने का आग्रह किया। खड़गे ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को अपने दोस्तों को बेच रहे हैं, जबकि केसीआर भी तेलंगाना में ऐसा ही कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मोदी और केसीआर दोनों ने झूठे वादों से लोगों को धोखा दिया है। वहीं हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा हालांकि अविभाजित आंध्र प्रदेश में कांग्रेस पार्टी सत्ता में थी और उसके मुख्यमंत्री राज्य के विभाजन के खिलाफ थे, लेकिन पार्टी ने तेलंगाना के लोगों की भावनाओं का सम्मान किया और नया राज्य बनाने के लिए ऐतिहासिक विधेयक लाया।

कांग्रेस नेता गहलोत ने कहा कि गांधी परिवार ने कभी भी सत्ता की चिंता नहीं की। 30 साल तक गांधी परिवार का कोई भी सत्ता में नहीं रहा, हालांकि सोनिया गांधी और राहुल गांधी प्रधानमंत्री बन सकते थे, लेकिन इनमें पद का लालच नहीं है। उन्होंने दावा किया कि भारतभर के गांवों में लोगों के मन में गांधी परिवार और कांग्रेस पार्टी के प्रति बहुत सम्मान है, जो समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलता है। गहलोत ने कहा कि आज देश और देश का लोकतंत्र खतरे में है, संविधान की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं।

नई ऊर्जा और आत्मविश्वास के साथ शुरु हुए सत्र में सभी का सहयोग जरूरी: बिरला

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि नई ऊर्जा और आत्मविश्वास के साथ शुरु होने वाला 13वां सत्र महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि इस सत्र में हम गौरवशाली लोकतांत्रिक इतिहास से प्रेरणा प्राप्त कर नए संसद भवन में नई ऊर्जा व आत्मविश्वास से लोकतंत्र को और अधिक समृद्ध बनाने की नई यात्रा प्रारंभ करेंगे। बिरला ने सभी सांसदों से सदन की कार्यवाही को सुचारू ढंग से चलने देने की उम्मीद जताई है। उन्होंने यह भी कहा कि आशा है सदैव की भांति सांसदों का सहयोग उन्हें मिलेगा और वे सदन की कार्यवाही में सक्रियता से भाग लेकर जनहित के विषयों पर उच्च कोटि की चर्चा-संवाद से देशवासियों को नई दिशा दिखाएंगे। हालांकि कार्रवाई शुरु होते ही हंगामा होने लगा, जिस पर उन्होंने तकनीकी समस्या बताते हुए जांच का भरोसा भी दिलाया। विपक्षी सदस्यों ने माइक बंद करने का आरोप लगाया जिस पर लोक सभा अध्यक्ष ने जांच का भरोसा दिलाते हुए आगे की कार्रवाई जारी रखी।

इस दौरान लोकसभा स्पीकर बिरला ने कहा कि लोक सभा का आज से प्रारंभ हो रहा 13वां सत्र महत्वपूर्ण है। इस सत्र में हम गौरवशाली लोकतांत्रिक इतिहास से प्रेरणा प्राप्त कर नए संसद भवन में नई ऊर्जा व आत्मविश्वास से लोकतंत्र को और अधिक समृद्ध बनाने की नई यात्रा प्रारंभ करेंगे। 140 करोड़ देशवासियों की सहभागिता इसे और विशेष बनाएगी। बिरला ने सदन की कार्यवाही सुचारू ढंग से चलने की उम्मीद जताते हुए कहा, आशा है सदैव की भांति माननीय सदस्यों का सहयोग हमें मिलेगा। वे सदन की कार्यवाही में सक्रियता से भाग लेकर जनहित के विषयों पर उच्च कोटि की चर्चा-संवाद से देशवासियों को नई दिशा दिखाएंगे। आपको बता दें कि पहले दिन यानी आज संसद की बैठक पुराने संसद भवन में होगी। मंगलवार, 19 सितंबर, को पुराने संसद भवन में फोटो सेशन होगा, फिर सुबह 11 बजे सेंट्रल हॉल में एक समारोह होगा। उसके बाद नई संसद में प्रवेश किया जाएगा। 19 सितंबर को नए संसद भवन में संसद सत्र की बैठक होगी और 20 सितंबर से नियमित संसदीय काम-काज शुरू होगा। इस कार्यक्रम के अनुसार सोमवार को पुराने संसद भवन में आखिरी बहस होने जा रही है।

प्रेम में फातिमा बनी अंजू स्वदेश लौटने को विवश

-पति अरविंद व 2 संतानो को छोड़कर पाकिस्तान गई अंजू को पासपोर्ट की प्रतीक्षा

नई दिल्ली (एजेंसी)। । नसरुल्लाह से शादी कर पाकिस्तान गई राजस्थान की अंजू अस्वस्थ्ता के चलते अब भारत आना चाहती है। उसके नए पति नसरुल्लाह ने यह जानकारी दी है। इसके अलावा पूर्व पति के बच्चे भी भारत लौटने की वजह हो सकते हैं। अंजू ने जुलाई में नसरुल्लाह से शादी कर ली थी और इस्लाम अपनाते हुए फातिमा बन गई।

सूत्रों ने बताया कि फातिमा ने कहा कि वह मानसिक रूप से परेशान है और अपने बच्चों की बड़ी ही शिद्दत से कमी महसूस कर रही है, इसलिए लौटने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। नसरुल्लाह ने कहा कि वह नहीं चाहते कि अंजू की मानसिक सेहत और खराब हो। बेहतर है कि वह अपने देश जाकर बच्चों से मिले। उसने कहा कि दस्तावेजी प्रक्रिया पूरी होने के बाद वह भारत लौट जाएगी। संभव है कि वह अगले महीने तक भारत लौटे। उन्होंने कहा कि वीजा मिलता है, तो वह भी भारत आएगे।

उल्लेखनीय है कि नसरुल्लाह से पहले अंजू की शादी राजस्थान में रहने वाले अरविंद से हुई थी। दोनों के दो बच्चे भी हैं। इनमें एक बेटी की उम्र 15 वर्ष है और 6 वर्षीय बेटा है। खास बात है कि अब तक अंजू का अरविंद से तलाक नहीं हुआ है। अंजू से मिलती-जुलती कहानी पाकिस्तान से भारत पहुंचीं सीमा हैदर की है। हालांकि, अंजू ने पाकिस्तान की यात्रा सभी दस्तावेजों के साथ की है। जबकि, सीमा पर गैरकानूनी तरीके से सीमा पार कर भारत प्रवेश का आरोप हैं।

राकेश टिकैत ने योगी सरकार को दी बड़ी चेतावनी, क्या लोकसभा चुनावों से पहले फिर खड़ा होगा किसान आंदोलन?

नई दिल्ली (एजेंसी)। आगामी लोकसभा चुनावों से पहले किसानों का आंदोलन खड़ा करने की तैयारी के तहत भारतीय किसान यूनियन ने विभिन्न मांगों को लेकर उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में सोमवार को एकदिवसीय महापंचायत का आयोजन किया। इसमें प्रदेश भर से किसान हिस्सा लेने पहुँचे। भारतीय किसान यूनियन का आरोप है कि सरकार ने एमएसपी गारंटी का अपना वादा पूरा नहीं किया है साथ ही गन्ना मूल्य का भुगतान नहीं किया जा रहा है। यूनियन का यह भी आरोप है कि उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों के दौरान भाजपा ने अपने घोषणापत्र में किसानों को जो मुफ्त बिजली का वादा किया था वह भी पूरा नहीं किया गया है। इन्हीं सब मुद्दों को लेकर किसान महापंचायत का आह्वान किया गया जिसमें भाग लेने के लिए एक दिन पहले से ही प्रदेश के विभिन्न कोनों से किसान ट्रेनों, बसों, निजी वाहनों और ट्रैक्टर ट्रालियों में लद कर चल पड़े थे। बताया जा रहा है कि भारतीय किसान यूनियन किसानों की मांगों को लेकर सरकार से आर-पार की लड़ाई लड़ने के मूड़ में है।

'महापंचायत' में भाग लेने के लिए आज बड़ी संख्या में किसान लखनऊ के इको गार्डन में एकत्र हुए तो भीड़ देखकर किसान नेता राकेश टिकैत गदगद हो गये। केंद्र सरकार को तीन कृषि कानूनों को वापस लेने पर मजबूर करने वाले प्रमुख किसान नेता राकेश टिकैत ने योगी सरकार को सीधी चेतावनी देते हुए कहा कि अभी हम सिर्फ अपनी बात रखने आए हैं। उन्होंने मीडिया से बातचीत में कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार ने अपने घोषणापत्र में कहा था कि हम सत्ता में आएंगे तो मुफ्त बिजली देंगे, फिर उन्होंने कहा कि एक साल के लिए मुफ्त बिजली देंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। राकेश टिकैत ने कहा कि आज जैसे नेताओं को ईडी का डर दिखाकर लूटा जा रहा है वैसे ही किसानों को बिजली के नाम पर लूटा जा रहा है। महापंचायत के उद्देश्य को लेकर पूछे गये प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में भीड़तंत्र ही उसकी समस्या का समाधान है। उन्होंने कहा कि अभी यह हमारा एक दिन का कार्यक्रम है।

हम आपको बता दें कि महापंचायत में पश्चिमी उत्तर प्रदेश से ज्यादा लोग दिखे। यह वही इलाका है जहां 2019 के लोकसभा चुनावों के अलावा 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में भी भाजपा को झटका लगा था। देखना होगा कि भारतीय किसान यूनियन की मांगों को लेकर योगी सरकार का क्या रुख रहता है। बहरहाल, हम आपको यह भी बता दें कि किसान महापंचायत को देखते हुए आज लखनऊ में सुरक्षा के कड़े प्रबंध किये गये हैं साथ ही कई जगह रूट को भी बदला गया है।

जम्मू-कश्मीर एलजी मनोज सिन्हा ने अनंतनाग में जवानों की शहादत का बदला लेने की कसम खाई

श्री नगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में अनंतनाग जिले के गडोले वन क्षेत्र में छिपे आतंकवादियों का सफाया करने के लिए चलाया गया अभियान सोमवार को छठे दिन भी जारी है। इस बीच, उपाराज्यपाल मनोज सिन्हा ने कसम ली है कि शहीदों के बहे खून की एक-एक बूंद का बदला लिया जायेगा। उपराज्यपाल ने अनंतनाग में मुठभेड़ के दौरान शहीद हुए जम्मू-कश्मीर पुलिस उपाधीक्षक हुमायूं भट्ट के घर जाकर आज उन्हें श्रद्धांजलि दी और उनके परिजनों को सांत्वना देते हुए विश्वास दिलाया कि उनके बेटे की शहादत बेकार नहीं जायेगी।

दूसरी ओर, सोमवार को भी आतंकवादियों के ठिकानों का पता लगाने के सुरक्षा बल ड्रोन का प्रयोग कर रहे हैं और लगातार कार्रवाई कर रहे हैं। अधिकारियों के मुताबिक, पिछले पांच दिनों से जारी इस आतंक विरोधी अभियान के दौरान नष्ट हुए आतंकी ठिकानों में से एक के समीप ड्रोन की फुटेज में एक व्यक्ति का जला हुआ शव पड़ा दिखाई दे रहा है। उन्होंने बताया कि सुरक्षा बलों द्वारा इलाके की छानबीन करने के बाद ही अधिक जानकारी प्राप्त हो सकेगी। अधिकारियों ने बताया कि सुरक्षा बल घने वन क्षेत्र में ड्रोन और हेलीकॉप्टर के जरिए तलाश कर रहे हैं। माना जा रहा है कि बुधवार को शुरुआती मुठभेड़ में सेना के दो अधिकारियों और एक पुलिस उपाधीक्षक के शहीद होने के बाद से आतंकवादी यहीं छिपे हैं। अधिकारियों ने बताया कि वन क्षेत्र में कई गुफानुमा ठिकाने हैं। अधिकारियों ने बताया कि आतंकवादी आवासीय इलाकों में न घुस पाएं, यह सुनिश्चित करने के लिए एहतियात के तौर पर पड़ोसी पोश ज़ेरी इलाके तक सुरक्षा घेरा बढ़ा दिया गया है।

पुलिस महानिदेशक (जीपी) और सेना की 15 कोर के जनरल ऑफिसर कमांडिंग (जीओसी) सहित कश्मीर में सुरक्षा बल के शीर्ष अधिकारी अभियान पर नजर बनाए हुए हैं। इस बीच, सेना की उत्तरी कमान के कमांडर ने हालात का जायजा लेने के लिए शनिवार को मुठभेड़ स्थल का दौरा किया। पुलिस का मानना है कि वन क्षेत्र में दो से तीन आतंकी छिपे हुए हैं।

इस बीच, केंद्र शासित प्रदेश के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने मुठभेड़ में शहीद हुए सेना के तीन अधिकारियों की शहादत का बदला लेने की कसम खाई है। एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए उपराज्यपाल ने कहा कि शहीदों के खून की एक-एक बूंद का बदला लिया जाएगा और आतंकवादियों के आकाओं को इसकी भारी कीमत चुकानी होगी। सिन्हा ने कहा, %हमें हमारे सैनिकों पर पूरा भरोसा है....पूरा देश जवानों के साथ एकजुटता से खड़ा है।% उन्होंने दावा किया कि अनंतनाग में सुरक्षा बलों पर हमला, जी20 शिखर सम्मेलन के सफल आयोजन और जम्मू-कश्मीर में संघर्षरत मुनाफाखोरों पर कार्रवाई से बौखलाए आतंकियों की हताशा का परिणाम है। सिन्हा ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद और आम आदमी को दबाने वाले पारिस्थितिकी तंत्र को खत्म करने का समय आ गया है।

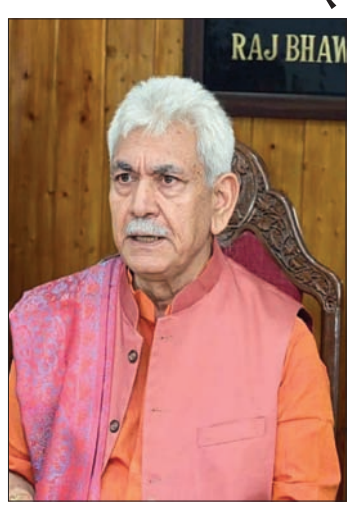

ईरान तटस्थ समुद्री क्षेत्र में स्थित गैस हिस्सेदारी को नहीं छोड़ेगा

तेहरान । ईरान ने साफ कर दिया है कि वह तटस्थ समुद्री क्षेत्र में स्थित गैस हिस्सेदारी को कभी नहीं छोड़ेगा। मिली जानकारी के अनुसार ईरान के तेल मंत्री जवाद ओवजी ने कहा कि ईरान अराश गैस क्षेत्र में अपना हिस्सा नहीं छोड़ेगा, जो ईरान, कुवैत और सऊदी अरब के बीच तटस्थ समुद्री क्षेत्र में स्थित है। ओवजी ने कहा कि ईरान को उम्मीद है कि संयुक्त क्षेत्र से संबंधित सभी मुद्दों को कुवैत के साथ बातचीत के माध्यम से हल किया जाएगा। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, कुवैत और सऊदी अरब में दुर्रा के नाम से जाना जाने वाला अपतटीय गैस क्षेत्र 1967 में खोजा गया था। तीन देशों के बीच स्वामित्व को लेकर विवाद के कारण इसके विकास में देरी हुई है। गौरतलब है कि मार्च 2022 में, सऊदी अरब और कुवैत ने संयुक्त रूप से क्षेत्र को विकसित करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, लेकिन ईरान ने समझौते को अवैध बताया है और कहा है कि इसने पिछली वार्ता का उल्लंघन किया है। हालांकि जुलाई में कुवैत ने कहा कि वह ईरान के साथ आधिकारिक तौर पर सीमांकित होने की प्रतीक्षा किए बिना गैस क्षेत्र में ड्रिलिंग और गैस उत्पादन शुरू कर देगा।

वीजा आवेदन शुल्क जैसे अन्य शुल्कवृदधि से विदेशी विद्यार्थियों पर बढ़ेगा आर्थिक भार

लंदन। छात्र वीजा के लिए आवेदन फीस अगले महीने से 127 पाउंड (13 हजार से अधिक) बढ़ने वाली है। ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत इस विधेयक से लंदन जाने वाले भारतीयों पर आ?र्थिक भार बढ़ने की आशंका है । दरअसल, भारत से बड़ी संख्या में छात्र पढ़ाई के लिए ब्रिटेन जाते हैं। अगले महीने से अब उनकी जेब पर बोझ बढ़ने वाला है। इतना ही नहीं शुल्क में भी बदलाव किया गया है। ब्रिटेन की गृह कार्यालय ने शुक्रवार संब?धित शुल्क 15 से बढ़ाकर 115 पाउंड कर ?दिया है। वीजा के लिए आवेदन करने का संसदीय अनुमोदन के अधीन, शुल्क 127 पाउंड बढ़ाकर 490 इमिग्रेशन और राष्ट्रीयता शुल्क चार पाउंड कर दिया जाएगा, जो देश अक्टूबर से बढ़ जाएगा। आंकड़ों में आवेदन के लिए ली जाने वाली अनुसार 2021-2022 में 120,000 राशि के बराबर होगा। 6 महीने से से अधिक भारतीय छात्र ब्रिटेन कम अवधि के लिए विजिट वीजा के में पढ़ रहे हैं। 6 महीने से कम अवधि के लिए विजिट वीजा के शुल्क में भी बदलाव 4 अक्टूबर से बढ़ जाएगा। 1.20 लाख छात्रों में से भारतीय छात्र सबसे बड़े अंतरराष्ट्रीय छात्र समुदाय में से एक हैं। सरकार ने कहा कि आव्रजन और राष्ट्रीयता शुल्क में बदलाव महत्वपूर्ण सेवाओं का भुगतान और सार्वजनिक क्षेत्र के वेतन वृद्धि के लिए अधिक धन को प्राथमिकता देने की अनुमति देने के लिए किए गए हैं।

जापानी कपड़ों पर चीन में लगी रोक

बीजिंग। चीन और जापान के बीच तनाव बढ़ता जा रहा है। चीन ने जापान से आने वाले कपड़ों और अन्य सामानों पर रोक लगाने का फैसला किया है। जापान का सामान, चीन मे पाए जाने पर जुर्माना और कड़ी सजा का प्रावधान भी किया जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार लोगों की भावनाओं को चोट पहुंचाने, प्रतीक चिन्ह वाले कपड़े पहनने पर चीन सरकार ने सख्ती कर दी है। जापानी पोशाक पहनने पर एक युवति को अपमानित किया। इसी तरह शॉपिंग मॉल, सिनेमा घर जैसे स्थानों पर भी अब जापान के समान का विरोध शुरू हो गया है। चीन की सरकार जापानी खाना,जापानी कपड़े, जापानी कार्टून और जापानी भाषा पर रोक लगाने पर विचार कर रही है। चीन में जापानी संस्कृति को निशाने पर लिया जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों में चीन और जापान के रिश्ते मैं तलखी बढ़ती जा रही है।

इमरान के प्रमुख सहयोगी शेख राशिद खान गिरफ्तार

इस्लामाबाद। पाकिस्तानी प्राधिकारियों ने पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के प्रमुख सहयोगी और आवामी मुस्लिम लीग के नेता शेख राशिद को भ्रष्टाचार में शामिल होने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। राशिद (72) तथा उनके दो सहयोगियों को रावलपिंडी के बहरिया शहर में उनके आवास से गिरफ्तार कर लिया गया तथा उन्हें एक अज्ञात स्थान पर ले जाया गया है। उनके भतीजे शेख राशिद शफीक ने एक वीडियो संदेश में यह जानकारी दी। शेख शफीक ने कहा कि मैं शीर्ष न्यायपालिका से एक वरिष्ठ नेता की गिरफ्तारी पर संज्ञान लेने का अनुरोध करता हूं क्योंकि वह किसी मामले में वांछित नहीं थे। उन्होंने कहा कि पुलिस ने उनके बड़े भाई तथा एक घरेलू सहायक को भी गिरफ्तार किया है। राशिद के खिलाफ आरोपों की जानकारियां अब तक साझा नहीं की गई है। इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर राशिद की गिरफ्तारी की निंदा की है।

अल-शबाब आतंकवादियों ने की 167 इथियोपियाई सैनिकों की हत्या

मोगादिशु।पश्चिमी सोमालिया में कट्टरपंथी इस्लामी समूह अल-शबाब के आतंकवादियों द्वारा घात लगाकर किए गए हमले में कम से कम 167 इथियोपियाई सैनिक मारे गए। सूत्रों ने बताया कि जीवित इथियोपियाई सैनिकों को पकड़ लिया गया है और इथियोपियाई सैनिकों को आगे बढ़ने से रोक दिया गया है। आतंकवादियों ने इथियोपियाई सैन्य उपकरणों को भी नष्ट कर दिया और बड़ी मात्रा में हथियार जब्त कर लिए। सूत्र अनुसार इथियोपियाई सशस्त्र बलों और सोमालिया में अफ्रीकी संघ संक्रमण मिशन (एटीएमआईएस) ने अभी तक हमले पर कोई टिप्पणी नहीं की है।इथियोपियाई सेना ने वाजिद शहर में अपने फॉरवर्ड ऑपरेटिंग बेस को मजबूत करने की कोशिश की, जो लगभग एक दशक से आतंकवादियों के नियंत्रण में है। अल-शबाब एक सोमालिया स्थित जिहादी आतंकवादी समूह है जो अल-कायदा आतंकवादी समूह (रूस में प्रतिबंधित) से जुड़ा हुआ है। यह सोमाली सरकार के खिलाफ सशस्त्र प्रतिरोध कर रहा है और देश में संयुक्त राष्ट्र के मानवीय मिशनों में बाधा डालता है।

कांगो में भूस्खलन से 17 लोगों की मौत

किन्शासा । उत्तर-पश्चिमी कांगो में मूसलाधार बारिश के बाद भूस्खलन होने के कारण रविवार देर रात कम से कम 17 लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों ने भूस्खलन की घटना में मरने वालों की संख्या में इजाफे की आशंका जताई हैं, क्योंकि बचाव दल ढह चुके घरों के मलबे में लोगों की तलाश कर रहे हैं। भूस्खलन कांगो नदी के किनारे उत्तर-पश्चिमी मोंगाला प्रांत के लिसल शहर में हुआ और पहाड़ की तलहटी में बने घरों में रहने वाले लोग इसकी चपेट में आ गए। बताया जा रहा है कि मूसलाधार बारिश और भूस्खलन से बहुत नुकसान हुआ है। भूस्खलन के कारण कई घर जमींदोज हो गए हैं। कई लोग अब भी मलबे के नीचे दबे हैं। ऐसे में मृतकों की वास्तविक संख्या का अनुमान लगा पाना मुश्किल है। गवर्नर सीजर लिंबाया मबांगिसा ने कहा कि भूस्खलन प्रभावित क्षेत्र से मलबा हटाने और जीवित बचे लोगों को बचाने के लिए मशीनरी की सख्त जरूरत है। उन्होंने पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना जताई और पूरे प्रांत में तीन दिन के शोक की घोषणा की।

केटीएफ प्रमुख निज्जर की हत्या को लेकर कनाडा में जनमत संग्रह

ओटावा । प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन खालिस्तान टाइगर फोर्स (केटीएफ) के प्रमुख और सरे में गुरु नानक सिख गुरुद्वारा के अध्यक्ष हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के लिए जिम्मेदार को लेकर 29 अक्टूबर को कनाडा में जनमत संग्रह की खबर है। सूत्रों के अनुसार, प्रतिबंधित चरमपंथी समूह, सिख फॉर जस्टिस (एसएफजे), जिसने 10 सितंबर को सरे में अनौपचारिक मतदान का पहला चरण आयोजित किया था। उन्होंने ब्रिटिश कोलंबिया में मतदान में एक प्रश्न जोड़ा है। 29 अक्टूबर को होने वाले मतदान में पूछा जाएगा कि क्या उच्चायुक्त संजय वर्मा ने प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन खालिस्तान टाइगर फोर्स (केटीएफ) के प्रमुख और सरे में गुरु नानक सिख गुरुद्वारा के अध्यक्ष हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के लिए जिम्मेदार थे। जनमत संग्रह के सवाल पर अभी तक ओटावा में भारतीय उच्चायोग और वैंकूवर में भारत के महावाणिज्य दूतावास से प्रतिक्रिया नहीं मिली है। 18 जून को निज्जर की मौत के बाद कनाडा में पोस्टर युद्ध छिड़ गया है, जिसमें भारतीय राजनयिकों और प्रतिष्ठानों को धमकी दी गई है और उनकी मौत के लिए उच्चायुक्त संजय वर्मा और वैंकूवर और टोरंटो में महावाणिज्य दूत को जिम्मेदार ठहराया गया है। निज्जर की मौत में विदेशी हस्तक्षेप के संबंध को खारिज करते हुए, कनाडा की एकीकृत मानव वध जांच टीम (आईएचआईटी) ने पिछले महीने कहा था कि वे दो भारी-भरकम बंदूकधारियों और एक भगदड़ कार, एक सिल्वर 2008 टोयोटा कैमरी के चालक की तलाश कर रहे हैं।

कार्यकर्ताओं ने एक प्रदर्शन के दौरान न्यूयॉर्क में जलवायु सप्ताह की शुरुआत की, जिसमें अमेरिकी सरकार से जलवायु परिवर्तन पर कार्रवाई करने और न्यूयॉर्क शहर, न्यूयॉर्क, अमेरिका में जीवाश्म ईंधन के उपयोग को अस्वीकार करने का आह्वान किया।

चीनी युद्धक विमानों के प्रवेश से ताइवान में गंभीर सुरक्षा संकट

ताइपे। ताइवान ने चीन पर युद्ध संकट खड़ा करने का आरोप लगाते हुए कहा है ?कि चीनी लड़ाकू विमानों ने ताइवान के एयरस्पेस में एंट्री ले ली है। अब तक 103 विमान ताइवान में आए हैं। बीते 24 घंटे में इनकी संख्या करीब 40 बताई गई है। ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने कहा कि उसने एक दिन में द्वीप के आसपास 103 चीनी युद्धक विमानों का पता लगाया है और इस संख्या को हालिया उच्च बताया है। इसमें कहा गया है कि 17 सितंबर से 18 सितंबर की सुबह के बीच, राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय ने कुल 103 चीनी विमानों का पता लगाया था, जो हाल ही में सबसे अधिक था और इसने ताइवान जलडमरूमध्य और क्षेत्र में सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौतियां पैदा की हैं। मंत्रालय ने कहा कि बीजिंग के लगातार सैन्य उत्पीड़न से आसानी से तनाव बढ़ सकता है और क्षेत्रीय सुरक्षा खराब हो सकती है। मंत्रालय ने चीन से ऐसी विनाशकारी एकतरफा कार्रवाइयों को तुरंत रोकने का आह्वान किया। बयान में कहा गया है कि पाए गए युद्धक विमानों की कुल संख्या में से 40 ने ताइवान जलडमरूमध्य की तथाकथित मध्य रेखा को पार किया, जो स्व-शासित द्वीप को चीन से अलग करती है, और इसके दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व वायु रक्षा पहचान क्षेत्र (एडीआईजेड) में प्रवेश कर गई। इसमें नौ चीनी नौसैनिक जहाजों का भी पता लगाया गया है। बीजिंग का दावा है कि स्व-शासित ताइवान को उसका अपना क्षेत्र माना जाता है, यदि आवश्यक हुआ तो बलपूर्वक एक दिन उसे जब्त कर लिया जाएगा, और हाल के वर्षों में संबंधों में खटास आने के कारण उसने राजनयिक और सैन्य दबाव बढ़ा दिया है।

भारत की तरक्की को कोई नहीं रोक सकता, दुनिया के टॉप इन्वेस्टर ने पीएम मोदी को बताया डेन शियाओपिंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। लॉस एंजिल्स में यूसीएलए के परिसर में रॉयस हॉल में आयोजित ऑल-इन समिट 2023 में अपने संबोधन के दौरान अरबपति निवेशक रे डालियो ने विश्वास व्यक्त किया है कि भारत वैश्विक स्तर पर शीर्ष 20 देशों में विकास की सबसे अधिक क्षमता रखता है। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन के दिग्गज नेता डेंग जियाओपिंग के बीच समानताएं दर्शाते हुए डेलियो ने मजबूत आर्थिक प्रगति में तब्दील होने के लिए भारत के महत्वपूर्ण सुधारों के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हमारे पास भारत और दुनिया के शीर्ष 20 देशों के लिए 10-वर्षीय विकास दर अनुमान हैं। भारत की संभावित विकास दर

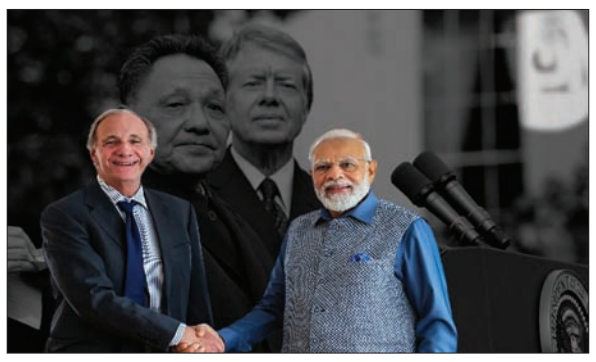

सबसे अधिक है। मुझे लगता है कि भारत वहीं है जहां चीन था जब मैंने 1984 में जाना शुरू किया था।

दुनिया के सबसे बड़े हेज फंड ब्रिजवाटर एसोसिएट्स के संस्थापक डेलियो ने कहा कि यदि आप प्रति व्यक्ति आय के स्वरूप को देखें, तो मुझे लगता है कि मोदी डेंग जियाओपिंग हैं। राष्ट्रों के उत्थान और पतन और उभरते वैश्विक परिदृश्य पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि आपके पास बड़े पैमाने पर सुधार, विकास, रचनात्मकता, ये सभी विकास हों सकता है। डेलियो ने कुछ जोखिम कारकों की उपस्थिति को स्वीकार किया, लेकिन भारत के प्रक्षेप पथ के बारे में आशावादी बने रहे। उन्होंने टिप्पणी करते हुए कहा कि मुझे नहीं लगता कि इनमें से कोई भी मुद्दा भारत को रोकने वाला है।

इसके अलावा, डेलियो ने बताया कि संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बीच चल रहे तनाव से भारत को फायदा होगा। उन्होंने कहा कि इतिहास में जो देश तटस्थ देश थे, उन्होंने सबसे अच्छा प्रदर्शन किया। इसलिए जैसा कि हमारे पास अमेरिका और चीन और उसके सहयोगियों, रूस और इसी तरह के बीच संघर्ष है, जो देश बीच में हैं, जैसे कि भारत, इससे लाभान्वित होने जा रहे हैं।

जयशंकर ने फिर चीन को बताई उसकी हद, कहा- पश्चिमी मुल्क बुरे नहीं हैं

नई दिल्ली। एक पुरानी कहावत है कायदे में रहोगे तो फायदे में रहोगे। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने चीन को एक बार फिर से उसकी हद समझाई है। उन्होंने चीन पर तंज कसते हुए कुछ ऐसा बोला जिससे बीजिंग बौखला सकता है। जयशंकर ने कहा कि पश्चिमी मुल्क बुरे नहीं हैं। वे एशियाई या अफ्रीकी मुल्कों के बाजारों में अपना सामान बेतहाशा ढंग से नहीं पहुंचा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमें पश्चिमी मुल्कों को लेकर बने इस नकारात्मक रवैये वाले सिंड्रोम से उबरने की जरूरत है। दुनिया अधिक जटिल है, समस्याएं उससे कहीं अधिक जटिल है। पूर्व भारतीय राजनयिक टी पी श्रीनिवासन ने मंत्री का साक्षात्कार लिया। यह पूछे जाने पर कि क्या चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग नई दिल्ली में जी20 शिखर सम्मेलन में शामिल नहीं हुए क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि भारत को ग्लोबल साउथ के नेता के रूप में देखा जाए, जयशंकर ने कहा कि ये अटकलें हैं।

रूस प्रवास पर किम को उपहार में मिले अत्याधुनिक शस्त्र कवच से चिन्तित पश्चिम देश

मॉस्को (एजेंसी)। उत्तर कोरिया के तानाशाह किम जोंग उन एक हफ्ते के रूस दौरे के बाद स्वदेश लौट आए। इस दौरान रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ किम जोंग की बातचीत से यह संभावना बढ़ गई कि उत्तर कोरिया यूक्रेन पर हमले में सहायता के लिए रूस को हथियार प्रदान कर सकता है। अपनी स्पेशल ट्रेन से रूस दौरे पर गए किम जोंग को उत्तर कोरिया लौटते वक्त कुछ खास गिफ्ट मिले जिनमें बुलेटप्रूफ जैकेट और ड्रोन्स शामिल हैं। इन गिफ्ट ने पश्चिम देशों की चिंता को और बढ़ा दिया है। किम जोंग बहुत कम विदेश यात्रा पर जाते हुए देखे जाते हैं। रूस में उनका भव्य स्वागत किया गया। अपने दौरे के अधिकांश समय में किम जोंग ने मिलिट्री साइट्स का दौरा किया। उत्तर कोरिया पर भारी प्रतिबंध लगे हुए हैं, ऐसे में उसे एनर्जी से फूड और सैन्य प्रौद्योगिकी तक हर चीज की जरूरत है।

सूत्रों के मुताबिक, किम जोंग को पूर्वी रूसी क्षेत्र प्रिमोरी के गवर्नर ने बुलेटप्रूफ जैकेट और ड्रोन का एक सेट गिफ्ट किया। यह जैकेट छाती, कंधे, गले और कमर पर सुरक्षा प्रदान करता है जो अन्य सिक्योरिटी जैकेट की तुलना में बहुत हल्का है।

सूत्रों ने बताया कि किम को उसी क्षेत्र में बने 5 कामिकेज ड्रोन, साथ ही एक जेरेनियम-25 एयरक्राफ्ट टाइफ टोही ड्रोन भी गिफ्ट किया गया। इसके अलावा स्पेशल कपड़ों का एक सेट भी उन्हें गिफ्ट किया गया, जो थर्मल इमेजिंग कैमरों के लिए इनविजिबल है। किम जोंग के लिए आयोजित विदाई समारोह में रेड कॉर्पेट और ऑनर गार्ड शामिल थे। इसके बाद किम आर्टेम रेलवे स्टेशन से जब अपनी खास बख्तरबंद ट्रेन से उत्तर कोरिया के लिए रवाना हुए तब रूसी अधिकारियों ने हाथ हिलाकर विदाई दी। आर्टेम से उत्तर कोरिया बॉर्डर टाउन खासन 200 किलोमीटर दूर है।

किम और पुतिन ने बुधवार को मुलाकात की और वोस्तोचन कोस्मोड्रोम स्पेसपोर्ट में पांच घंटे तक लंबी बैठक की, जिसमें पुतिन ने कहा कि किम ने बहुत रुचि दिखाई और उत्तर कोरिया ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी को प्राथमिकता दी है। वहीं, किम ने बातचीत के बाद पुतिन को अपना समर्थन देते हुए कहा, मैं हमेशा रूस के साथ खड़ा रहूंगा. पुतिन ने किम के साथ बैठक को बहुत ठोस बताया.

मिस यूनिवर्स पाकिस्तान का खिताब जीतने वाली एरिका रॉबिन की हुई आलोचना

-न जीतने का जश्न मनाया, न ही सरकार ने दी प्रतिक्रिया, आयोजकों को लगाई लताड़

इस्लामाबाद (एजेंसी)। अपने ही देश में मिस यूनिवर्स पाकिस्तान का खिताब जीतने वाली एरिका रॉबिन को आलोचना का शिकार होना पड़ रहा है। हालांकि कराची की रहने वाली एरिका रॉबिन ने मिस यूनिवर्स पाकिस्तान 2023 का खिताब जीत लिया है, वह यह खिताब हासिल करने वाली देश की पहली महिला बन गई हैं। लेकिन एरिका की जीत का घर में जश्न भी नहीं मनाया गया। इसके बजाय उसे लोगों की आलोचना या पूर्ण चुप्पी का सामना करना पड़ा। जानकारी के अनुसार मिस यूनिवर्स पाकिस्तान कार्यक्रम में पाकिस्तान के पांच प्रतियोगी शामिल थे और इसे दुबई स्थित कंपनी युगेन ग्रुप द्वारा आयोजित किया गया था। हालांकि एरिका ने खिताब जीतने पर खुशी जताई और ऊपर वाले का आशीर्वाद बताया। उनकी उपलब्धि की पाकिस्तान में कई लोगों, विशेषकर धार्मिक समूहों और पार्टियों ने आलोचना की, जबकि सरकार ने एरिका की उपलब्धि पर अपना पल्ला झाड़ लिया। जमात-ए-इस्लामी के सीनेटर मुश्ताक अहमद खान ने कहा, युवा महिलाओं को मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता के लिए तैयार करना और मिस पाकिस्तान प्रतियोगिता का आयोजन करना शर्मनाक है। यह पाकिस्तान का अपमान है। पाकिस्तान की महिलाओं का अपमान है।

सीनेटर मुश्ताक अहमद खान ने कहा कि इसका आयोजक कौन हैं? यह शर्मनाक कृत्य कौन कर रहा है? सरकार को उन्हें सामने लाना चाहिए। किसने उन्हें पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व करने के लिए अधिकृत किया है? क्या यह पाकिस्तान सरकार का निर्णय है? कार्यवाहक प्रधान मंत्री को तुरंत अपनी सरकार की स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए और सौंदर्य प्रतियोगिताओं के नाम पर पाकिस्तानी महिलाओं का यह उपहास, अपमान बंद करें। यह पाकिस्तान के मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं के साथ जानबूझकर खेला जाने वाला खेल है।

प्रमुख धार्मिक नेता मोहम्मद तकी उस्मानी ने भी इस खबर पर सवाल उठाते हुए कहा कि खबर है कि पांच युवतियां अंतरराष्ट्रीय सौंदर्य प्रतियोगिता में पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व करेंगी। अगर यह सच है, तो हम कितनी दूर तक जाएंगे? इस धारणा को मिट जाने दीजिए। एक महिला कार्यकर्ता एरिका रॉबिन के समर्थन में सामने आई हैं और जब भी कोई पाकिस्तानी महिला अपने लिए नाम कमाती है, तो असुरक्षित महसूस करने वाले लोग उसकी आलोचना करते हैं। कार्यकर्ता ज़ोहरा यूसुफ़ ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर नाम कमाने वाली पाकिस्तानी महिलाओं पर हमला करना एक आदर्श बन गया है। महिलाओं की अंतरराष्ट्रीय सफलताओं को देश की नैतिकता पर एक धब्बा के रूप में क्यों देखा जाता है।

दुनियां भर के नेता मिलकर करेंगे विकास व जलवायु परिवर्तन पर चर्चा

-संयुक्त राष्ट्र महासभा की वार्षिक बैठक में ग्लोबल साउथ की प्राथमिकताओं पर होगा मंथन

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। संयुक्त राष्ट्र महासभा की वार्षिक बैठक सोमवार से शुरु होने जा रही है। इसमें दुनियां के विभिन्न देशों के राष्ट्र व राज्य प्रमुख शामिल हो रहे हैं। न्यूयॉर्क में आयोजित बैठक में विकास और जलवायु परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करते हुए मंथन किया जाएगा। ये दोनों ही मुद्दे ग्लोबल साउथ (विकासशील देशों) की प्राथमिक चिंताएं हैं, इनमें से कई देशों को चुनौतियों का सामना करने में गंभीर वित्तीय संकट का सामना करना पड़ता है, जबकि उनकी समस्याएं कोविड महामारी और रूस के यूक्रेन पर आक्रमण के कारण और बढ़ गई हैं। यूएन के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस औद्योगिक देशों पर विकास और जलवायु परिवर्तन के लिए फंडिंग बढ़ाने के लिए दबाव डालेंगे। बैठक में संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) पर शिखर सम्मेलन के साथ अपने व्यस्त कार्यक्रमों के सप्ताह की शुरुआत करेंगे। इसमें 2030 तक शांति और न्याय लाते हुए गरीबी और भूख से लेकर जलवायु परिवर्तन और असमानता की समस्या का समाधान समेत 17 महत्वाकांक्षाएं हैं।

बैठक से पूर्व गुटेरेस ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि मुझे पूरी उम्मीद है कि एसडीजी शिखर सम्मेलन वास्तव में एसडीजी के कार्यान्वयन के संबंध में अब तक देखी गई नाटकीय विफलताओं की प्रतिक्रिया में एक लंबी छलांग का प्रतिनिधित्व करेगा। एसडीजी को 2015 में विश्व नेताओं द्वारा अपनाया गया था और जैसे ही वे 2030 के मध्य में सोमवार को मिलेंगे, वे पाएंगे कि अधिकांश समय सीमा तक पहुंच से बाहर हैं और उन्हें विशेष रूप से औद्योगिक देशों से पुनः सक्रिय प्रतिबद्धताओं की आवश्यकता होगी। प्रतीकात्मक रूप से, यह बैठक पारंपरिक महासभा की बैठक से एक दिन पहले शुरू होती है, जो परंपरा के अनुसार मंगलवार को शुरू होगी, जिसमें ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज़ इनासियो लूला दा सिल्वा का पहला संबोधन होगा, इसके बाद राष्ट्रपति जो बाइडेन वक्ता होंगे।

बाइडन इस सप्ताह संयुक्त राष्ट्र में सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य के एकमात्र शीर्ष नेता होंगे। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग, रूस के व्लादिमीर पुतिन और फ्रांस के इमैनुएल मैक्रॉन और ब्रिटेन के प्रधान मंत्री ऋषि सुनक व भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी शिखर सम्मेलन में भाग नहीं ले रहे हैं। परिषद के स्थायी सदस्यों के नेताओं की अनुपस्थिति के बारे में पूछे जाने पर गुटेरेस ने कहा, जो मायने रखता है, वह उनकी उपस्थिति नहीं है, बल्कि उनकी सरकारों की प्रतिबद्धताएं हैं।

नए आतंकी संगठन ने पाकिस्तान में जमाई धाक, चीफ जस्टिस को दी धमकी

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान में नए मुख्य न्यायाधीश के साथ ही नया आतंकवादी संगठन भी पैदा हो गया है। यह संगठन तहरीक ए नमूस के नाम से सामने आया है। संगठन ने पाकिस्तान चीफ जस्टिस के घर के पास बम पिस्तौल और जजों के घर का नक्शा रखकर धमकी दी है और कहा कि गलत व्यवस्था चलाने वालों को सबक सिखाया जा रहा है। इस नए संगठन की पहली कार्रवाई के प्रत्येक निशाने पर न्यायाधीश और जनरल है। पाकिस्तान में मुख्य न्यायाधीश को पद ग्रहण करते ही जस्टिस काजी फैज ईशा को डराने की कोशिश की गई है। उनके आवास के पास से एक बैग में तीन बम पिस्तौल और गोलियां रखी मिली हैं। बैग में उस इलाके यानी वीआईपी क्षेत्र का एक नक्शा भी बरामद हुआ है, जिसमें न्यायाधीशों के घरों की लोकेशन के अलावा कहां वीआईपी लोगों के घर शामिल है, साथ बैग में एक पत्र भी मिला है। यह बैग उस दिन रखा गया जब जस्टिस फैज ईशा ने मुख्य न्यायाधीश के तौर पर शपथ ली है तो ऐसे में यह धमकी सीधे तौर पर उन्हें दी गई है।

गौरतलब है कि जस्टिस ईशा को अगले 13 महीने तक यानी 25 अक्टूबर 2024 तक पाकिस्तान के मुख्य न्यायाधीश के तौर पर काम करना है और इस दौरान उन्हें कई अहम और कड़े फैसले लेने पड़ सकते हैं जो अगर कानून के मुताबिक लिए गए तो संभवतः पाकिस्तान के मौजूदा प्रशासक पाकिस्तान की फौज और वहां के राजनेताओं को पसंद ना आए। ऐसे में माना जा रहा है कि यह धमकी सीधे तौर पर नए मुख्य न्यायाधीश को दिलाई गई है, जिससे वह जो भी फैसला लें सोच समझ कर लें। इस पत्र को कथित तौर पर एक नए आतंकवादी संगठन तहरीक ए नमूस द्वारा लिखा गया है। इस संगठन ने खुद को पाकिस्तानी अवाम की लोकप्रिय पार्टी बताते हुए कहा है कि पाकिस्तान के हालात दिन- प्रतिदिन बदलते जा रहे हैं हर रोज मंहगाई बढ़ती जा रही है।

पेट्रोल चीनी समेत हर चीज की कीमत बढ़ रही है। पहले साल में महंगाई बढ़ती थी अब पाकिस्तान में हर दिन महंगाई बढ़ती जा रही है। अदालतें चिड़ियाघर बन गई हैं। कार्यवाहक सरकार आईएमएफ की गुलाम है। फौजी जनरल राजनीति कर रहे हैं। प्रतिभा पलायन लगातार हो रहा है। लाखों पाकिस्तानी निराशा में देश के बाहर हैं। इस स्थिति को देखते हुए इस संगठन ने पाकिस्तान में समस्याओं के समाधान के लिए व्यावहारिक कदम उठाने और सिस्टम को गलत तरीके से चलाने वाले लोगों और जनरलों को सबक सिखाने का फैसला किया है।

टीएसए एजेंटों के यात्रियों के बैग से नगदी चुराने का वीडियो वायरल

मास्को (एजेंसी)। फ्लोरिडा (ईएमएस)। अमेरिका के फ्लोरिडा के मियामी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से टीएसए एजेंटों के यात्रियों के बैग से नगदी चुराने का वीडियो सामने आया है। वायरल होने के बाद, वीडियो देख नेटिजंस में काफी गुस्सा है। क्लिप में टीएसए एजेंटों को स्कैनर के माध्यम से सामान पास करने से पहले कई बैगों को खोलने और मूल्यवान वस्तुओं और नकदी को जेब में डालते हुए देखा जा सकता है।

चोरी करने वाले तीनों टीएसए एजेंटों की पहचान 33 वर्षीय लाबेरियस विलियम्स, 20 वर्षीय जोसु गोंजालेज और 22 वर्षीय एलिजाबेथ फस्टर की गई है। तीनों को जुलाई में ही गिरफ्तार कर लिया गया था। हालांकि, एलिजाबेथ फस्टर को उसी समय रिहा कर दिया गया था। वीडियो में, फ्लोरिडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर स्कैनर के पास दो टीएसए एजेंट खड़े थे और लोगों की सामानों की जांच कर रहे थे। दोनों सुरक्षाकर्मियों ने पहले ट्रे में रखे एक बैग से कुछ पैसे चुराकर जल्दी-जल्दी अपने पॉकेट में डालते हुए दिखे। उसके बाद दूसरा एजेंट बैग में रखे यात्री के पर्स वाले ट्रे को वे बार-बार आगे-पीछे करते हुए उसमें रखे पर्स को खोलता है, लेकिन सावधानी बरतता है किसी की नजर न पड़े। कुछ देर मेहनत करने के बाद उसने पर्स से भारी मात्रा में नगदी निकाल कर अपने पॉकेट में डाल लिया। एजेंटों को यात्रियों के समान चुराने और उस जेब में डालने से पहले बैगों को सावधानीपूर्वक खंगालते हुए देखा गया है।

वीडियो देखने के बाद यूजर्स ने अपना गुस्सा कमेंट बॉक्स में जाहिर किया है। यूजर ने लिखा है, हवाईअड्डे के सुरक्षा कर्मचारियों द्वारा यात्रियों की सुरक्षा को खतरा है, अद्भुत!' एक अन्य यूजर लिखा है, 'यहीं कारण है कि सामान के अंदर नकदी छिपाकर रखता हूं, मैं हमेशा अपने पैसे को अलग-अलग जगहों पर बांट कर रखने की कोशिश करता हूं। सीबीएस ने बताया कि एयरपोर्ट सिक्योरिटी गार्ड्स द्वारा यात्री के पर्स से 600 डॉलर रुपए चुराने के आरोप लगे हैं। सिक्योरिटी गार्ड्स पर यात्रियों का सामान चुराने से पहले उनका ध्यान भटकाने का आरोप है।

विश्व कप से पहले शीर्ष वनडे रैंकिंग की होड़ हुई तेज

दुबई (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) पुरुष क्रिकेट विश्व कप की शुरुआत से पहले नंबर एक वनडे टीम बनने की होड़ अगले कुछ दिनों में तेजी आएगी। एशिया कप हालांकि समाप्त हो गया है। पाकिस्तान एशिया कप 2023 में जल्दी बाहर होने और फाइनल में श्रीलंका पर भारत की प्रचंड जीत के बावजूद नंबर 1 स्थान पर कायम है।

दक्षिण अफ्रीका से सीरीज हारने के बाद ऑस्ट्रेलिया ने भी रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचने का मौका गंवा दिया। ऑस्ट्रेलियाई टीम श्रृंखला में 2-0 से आगे थी, इससे पहले मेजबान टीम ने जबरदस्त वापसी की और लगातार तीन मैच जीतकर रविवार को श्रृंखला जीत ली। आईसीसी की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि फाइनल से पहले बंगलादेश से हार से भारत की रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचने की संभावना कम हुई और यहां तक कि श्रीलंका के खिलाफ सिर्फ छह ओवर में मिली रिकॉर्ड-तोड़ जीत भी भारतीय टीम को शीर्ष पर नहीं पहुंचा सकी।

भारत मौजूदा समय में दूसरी रैंकिंग पर है और यदि 22 सितंबर से शुरू होने वाली सीरीज में ऑस्ट्रेलिया पर घरेलू मैदान पर जीत दर्ज कर लेता है तो वह रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचने की स्थिति में आ सकता है। यदि भारत ऑस्ट्रेलिया से पहला वनडे जीत जाता है तो वह पाकिस्तान को पछाड़कर क्रिकेट के तीनों प्रारूपों में नंबर एक टीम बन जाएगा। रोहित शर्मा के नेतृत्व में टीम एशिया कप में शानदार जीत दर्ज चुकी है।

मेजबान टीम अगले हफ्ते शुक्रवार तक वह मोहाली में पहले वनडे में ऑस्ट्रेलिया को हराकर नंबर 1 स्थान पर पहुंचने के लिए पूरी ताकत झोंक देगी। ऑस्ट्रेलियाई कैप्टन पैट कमिंस की टीम के खिलाफ भारत की आगामी तीन मैचों की श्रृंखला यह तय करने में महत्वपूर्ण साबित हो सकती है कि कौन सी टीम नंबर एक रैंकिंग के साथ विश्व कप में प्रवेश करेगी। यदि भारत ऑस्ट्रेलिया से श्रृंखला हार जाता है, तो पाकिस्तान विश्व कप के लिए शीर्ष क्रम की टीम बनी रहेगी।

इसके उलट ऑस्ट्रेलिया से 3-0 की हारता है तो भारत तीसरे स्थान पर खिसक जाएगा और ऑस्ट्रेलियाई टीम शीर्ष पर पहुंच जाएगी। दक्षिण अफ्रीका से सीरीज हारने के बाद ऑस्ट्रेलिया (मौजूदा रैंकिंग 3) अब विश्व कप की शुरुआत में नंबर एक रैंकिंग वाली टीम बनने की स्थिति में नहीं है। विश्व कप में नंबर एक टीम बनने के लिए उन्हें भारत के साथ सीरीज में उसका सुपड़साफ करना जरुरी होगा। हालाँकि, अगर ऑस्ट्रेलिया सीरीज के पहले दो मैज जीत जीतता है तो भी उसे कम से कम अंतिम वनडे तक रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचने के लिए उसे तीसरा मैच भी भारत को हराना जरुरी होगा।

कोच राणा के साथ होने पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर पाती हूं : मनु भाकर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की अनुभवी पिस्टल निशानेबाज मनु भाकर ने रविवार को संकेत दिया कि बड़े अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों में अपने निजी कोच जसपाल राणा को साथ ले जाने की अनुमति नहीं मिलने से उनके प्रदर्शन पर असर पड़ा है। उन्होंने एनआरएआई से मामला सुलझाने का अनुरोध किया। महान पिस्टल निशानेबाज राणा 2 साल पहले तोक्यो ओलंपिक से पहले विवाद के बाद भाकर से अलग हो गए थे। अब वह फिर उनके साथ काम कर रहे हैं और पेरिस ओलंपिक का कोटा तथा हांगझोउ एशियाई खेलों में पदक जीतने के लक्ष्य को हासिल करने में उनका मार्गदर्शन कर रहे हैं।

भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ (एनआरएआई) की नीति है कि अंतरराष्ट्रीय स्पर्धाओं में निजी कोच साथ नहीं जाते। भाकर ने एशियाई खेलों के लिये निशानेबाजी टीम के विदाई समारोह में कहा कि मैं उम्मीद कर रही हूं कि जल्दी मामला सुलझ जाएगा। मैंने अनुरोध किया है कि उन्हें (राणा को) मेरे साथ बड़े टूर्नामेंटों में भेजा जाए। हांगझोउ एशियाई खेल 23 सितंबर से शुरू होंगे। भाकर ने कहा कि उम्मीद है कि मामला सुलझ जाएगा। कालिकेश (एनआरएआई अध्यक्ष कालिकेश सिंहदेव) ने मेरा काफी साथ दिया है और हमेशा मदद की है।

उन्होंने कहा कि टीम के कोच भी काफी मदद करते हैं लेकिन मेरा मानना है कि मैं अपने निजी कोच के साथ ही सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर पाती हूं। यही वजह है कि हम फिर साथ हैं। वह जकार्ता में 2018 एशियाई खेलों में तीन स्पर्धाओं में भाग लेने के बावजूद पदक नहीं जीत सकी थी। उन्होंने कहा कि एशियाई खेलों में हमेशा अपेक्षायें रहती है। मैं अपना सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश करूंगी। मेरा लक्ष्य हमेशा जीतने का ही रहता है।

हॉकी रैंकिंग: भारतीय पुरूष तीसरे, महिलाएं सातवें स्थान पर

लुसाने (स्विटजरलैंड) (एजेंसी)। भारतीय पुरूष हॉकी टीम अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ की ताजा रैंकिंग में तीसरे स्थान पर पहुंच गई। भारत (2771) मई 2022 में शीर्ष तीन से बाहर हो गया था। भारत की रैंकिंग में सुधार पिछले महीने एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी में खिताबी जीत मिलने से हुआ है। भारत ने सात में से छह मैच जीते और एक ड्रॉ रहा।

यूरो हॉकी फाइनल में नीदरलैंड से हारी इंग्लैंट टीम शीर्ष तीन से बाहर हो गई। नीदरलैंड (3113) शीर्ष पर है जबकि बेल्जियम (2989) दूसरे स्थान पर है। जर्मनी पांचवें और आस्ट्रेलिया छठे स्थान पर है जबकि उनके बाद अर्जेंटीना और स्पेन हैं।

महिला रैंकिंग में नीदरलैंड शीर्ष पर है जबकि आस्ट्रेलिया दूसरे और अर्जेंटीना तीसरे स्थान पर है। बेल्जियम चौथे और जर्मनी पांचवें स्थान पर है। भारत एक पायदान चढकर सातवें स्थान पर पहुंच गया है। स्पेन आठवें, न्यूजीलैंड नौवें और जापान दसवें स्थान पर है।

एशिया कप 2023 जीतने के बाद भारतीय फैंस ने फोड़े पटाखे, रोहित शर्मा ने कहा- विश्व कप जीतने के बाद फोड़ना

मेलबर्न (एजेंसी)। भारतीय टीम ने लंबे इतंजार के बाद एशिया कप 2023 का खिताब अपने नाम कर लिया है। भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने एशिया कप 2023 जीतने के बाद खिलाड़ियों के शानदार खेल की खुलकर तारीफ की है। श्रीलंका को एशिया कप फाइनल में 50 रन पर आउट करने के बाद भारतीय कप्तान रोहित शर्मा तेज गेंदबाजों के प्रदर्शन की सराहना की है।

कप्तान रोहित शर्मा ने कहा कि तेज गेंदबाजों का इस तरह का प्रदर्शन उन्हें काफी संतोष देता है। तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज सात ओवर में 21 रन देकर छह विकेट लिये। भारत ने श्रीलंका को दस विकेट से हराकर खिताब जीता। उन्होंने कहा कि सभी कप्तान तेज गेंदबाजों पर फख्र करते हैं और मैं भी अलग नहीं हूं। हमारे पास बेहतरीन तेज गेंदबाज हैं।''

टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा एशिया कप 2023 फाइनल के बाद अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान पटाखे फोड़ने की आवाज सुनकर ज्यादा प्रभावित नहीं हुए। 36 वर्षीय ने प्रशंसकों से भारत के 2023 विश्व कप जीतने के बाद भी ऐसा करने का अनुरोध किया, जो 5 अक्टूबर को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में शुरू होगा। इससे पहले एशिया कप जीतने के बाद फैंस भारतीय टीम की जीत की खुशी में पटाखे जलाते दिए। कॉन्फ्रेंस के दौरान भी पटाखों की आवाज आ रही थी। इस दौरान रोहित शर्मा ने कहा कि विश्व कप जीतने के बाद फोड़ो यार। रोहित शर्मा का ये रिस्पॉन्स काफी वायरल हो रहा है।

खुलकर की मोहम्मद सिराज की तारीफ

सिराज की तारीफ करते हुए उन्होंने कहा ,'' स्लिप में खड़े होकर उसे गेंदबाजी करता देखना बहुत अच्छा लगा। उसने लगातार एक स्पैल में सात ओवर डाले और मुझे ट्रेनर से संदेश मिला कि अब उसे रोको। वह गेंदबाजी के लिये इतना लालायित था।'' उन्होंने कहा ,'' वह सात ओवर डाल चुका था जो काफी थे।'' प्लेयर आफ द टूर्नामेंट चुने गए कुलदीप यादव की तारीफ करते हुए उन्होंने कहा ,'' कुलदीप ने दबाव में शानदार प्रदर्शन किया। श्रीलंका के खिलाफ सुपर फोर मैच में उसने उम्दा गेंदबाजी की और कम स्कोर के बावजूद हम वह मैच जीते।'' उन्होंने कहा ,'' पिछले दो साल में उसका आत्मविश्वास बढा है और वह किसी भी हालात से निकालकर टीम को जीत दिला रहा है।

श्रेयस अय्यर को लेकर भी दिया जवाब

विश्व कप से पहले फिटनेस को लेकर जूझ रहे श्रेयस अय्यर की वापसी को लेकर भी रोहित शर्मा ने जवाब दिया है। उन्होंने कहा कि दाएं हाथ के बल्लेबाज श्रेयस अय्यर जल्द ही टीम के लिए उपलब्ध हो सकते है। श्रेयस ने लंबे समय तक टीम के लिए बल्लेबाजी की है। श्रेयस फाइनल के लिए उपलब्ध नहीं थे क्योंकि उनके लिए कुछ निश्चित पैरामीटर रखे गए थे। संभावना है कि उनकी फिटनेस अब पूरी तरह से ठीक है।

सुरेश रैना को रोहित शर्मा पर है ऑस्ट्रेलिया वनडे सीरीज में जीत का भरोसा

मुंबई। पूर्व बल्लेबाज सुरेश रैना को ऑस्ट्रेलिया वनडे सीरीज में रोहित शर्मा पर जीत का भरोसा है। उनका मानना है कि विश्व कप से पहले भारत के खिलाफ 3 मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला में ऑस्ट्रेलिया का दबदबा रहेगा क्योंकि उनकी बल्लेबाजी में लचीलापन है और इस टीम के खिलाड़ियों को भारतीय परिस्थितियों की अच्छी समझ है। भारत रविवार को एशिया कप फाइनल में मेजबान श्रीलंका से भिड़ेगा। टीम इसके बाद विश्वकप में अपने अभियान को शुरू करने से पहले ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 3 मैचों की घरेलू एकदिवसीय श्रृंखला में भाग लेगी। इस श्रृंखला का आगाज मोहाली में 22 सितंबर को होगा। इसके बाद इंदौर 24 सितंबर और राजकोट 27 सितंबर को मैच खेले जाएंगे। दोनों टीमें 8 अक्टूबर को चेन्नई में विश्व कप में एक-दूसरे का आमना सामना करेंगी। रैना ने कहा कि उनके पास बल्लेबाजी क्रम में दाएं और बाएं हाथ का अच्छा संयोजन है। इंदौर का मैदान बहुत छोटा है, और राजकोट की पिच सपाट है।

विश्व कप में सबसे खतरनाक टीम हो सकती है भारत, एशिया कप में श्रीलंका की हार के बाद बोले अख्तर

स्पोर्ट्स डेस्क । भारत ने श्रीलंका को कोलंबो में खेले गए एशिया कप फाइनल में हराकर आठवीं बार खिताब अपने नाम किया। भारत ने श्रीलंका को 50 रन पर ढेर करने के बाद 37 गेंदों में ही लक्ष्य हासिल करते हुए बड़ी खिताबी जीत अपने नाम की। पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज शोएब अख्तर ने रोहित शर्मा की कप्तानी वाली टीम के कौशल की प्रशंसा की और भारतीय कप्तान की उनके अनुकरणीय निर्णय लेने के कौशल की सराहना की। उन्होंने टीम इंडिया के शानदार भविष्य की भविष्यवाणी की। अख्तर ने कहा, 'रोहित शर्मा की कप्तानी में सुधार हुआ है। वह और टीम प्रबंधन महान निर्णय ले रहे हैं। मैंने भारत को इस तरह से श्रीलंका को हराने की कल्पना नहीं की थी। अब से भारत विश्व कप में सबसे खतरनाक टीम हो सकती है, लेकिन मैं किसी को भी कम नहीं आंक रहा क्योंकि उपमहाद्वीप की टीमें ताकतवर हैं।' रावलपिंडी एक्सप्रेस ने प्रभावशाली मोहम्मद सिराज के लिए तालियां बजाईं जिन्होंने छह विकेट लेकर श्रीलंकाई बल्लेबाजी क्रम को तहस-नहस कर दिया। उन्होंने कहा, 'अच्छा काम सिराज, आपने भारत को जीत दिलाने में मदद की। और आपने अपनी पुरस्कार राशि ग्राउंड स्टाफ को देकर बहुत अच्छा काम किया। भारत अपना आत्मविश्वास बढ़ाकर विश्व कप में जाएगा। भारत ने अंडरडॉग के रूप में शुरुआत की थी, लेकिन अब मुझे लगता है कि यह न केवल पाकिस्तान के लिए चिंता का विषय है, बल्कि कई अन्य देशों के लिए भी चिंता का विषय है। भारत ने विश्व कप में अपने आगमन की घोषणा कर दी है क्योंकि उनके पास सभी बॉक्स सही हैं।'

दक्षिण अफ्रीका के एडेन मार्कराम ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पूरे किए 5,000 रन

जोहानिसबर्ग (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाज एडेन मार्कराम ने 5,000 अंतरराष्ट्रीय रन पूरे कर लिए हैं। 28 वर्षीय बल्लेबाज ने जोहान्सबर्ग में चार मैचों की श्रृंखला में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ यह उपलब्धि हासिल की। मैच में मार्कराम अपने सबसे शानदार रूप में थे। उन्होंने 87 गेंदों में 93 रन बनाए जिसमें 9 चौके और तीन छक्के शामिल थे। उनके रन 106 से अधिक की स्ट्राइक रेट से आए।

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 2017 में पदार्पण के बाद से मार्कराम ने प्रोटियाज के लिए 35 टेस्ट खेले हैं। उन्होंने सबसे लंबे प्रारूप में 36.26 की औसत से 2,285 रन बनाए हैं। उन्होंने 64 पारियों में छह शतक और 10 अर्धशतक बनाए हैं जिसमें उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 152 है। मार्कराम ने 55 एकदिवसीय मैच भी खेले हैं, जिसमें उन्होंने 35.42 की औसत और 96 से

अधिक की स्ट्राइक रेट से 1,665 रन बनाए हैं। दाएं हाथ के बल्लेबाज बल्लेबाज ने 52 पारियों में दो शतक और सात अर्द्धशतक बनाए हैं जिसमें उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 175 है।

मार्कराम ने 37 टी20 इंटरनेशनल मैचों में 39.37 की औसत और 149.50 की स्ट्राइक रेट से 1,063 रन बनाए हैं। 33 पारियों में उन्होंने 70 के सर्वश्रेष्ठ स्कोर के साथ 9 अर्द्धशतक बनाए हैं। कुल मिलाकर 127 अंतरराष्ट्रीय मैचों में बल्लेबाज ने 36.59 की औसत और 79 से ऊपर की स्ट्राइक रेट से 5,013 रन बनाए हैं। 149 पारियों में उन्होंने आठ शतक और 26 अर्धशतक बनाए, जिसमें 175 उनका सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत स्कोर है।

इस साल मार्कराम ने सभी प्रारूपों में शानदार निरंतरता दिखाई है। 19 अंतर्राष्ट्रीय मैचों और 21 पारियों में उन्होंने 61.00 की औसत और 101 से अधिक की स्ट्राइक रेट से 1,037 रन बनाए हैं। उन्होंने इस वर्ष 175 के सर्वश्रेष्ठ स्कोर के साथ तीन शतक और तीन अर्धशतक बनाए हैं। उनका वनडे फॉर्म विशेष रूप से अक्टूबर से भारत में होने वाले आईसीसी क्रिकेट विश्व कप से पहले उत्साहवर्धक है। 11 वनडे मैचों में उन्होंने 64.11 की औसत और 119.70 की एसआर से 577 रन बनाए हैं। उन्होंने 11 पारियों में दो शतक और दो अर्द्धशतक लगाए हैं, जिसमें 175 उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर है।

दाहिने कंधे पर चोट लगने से नसीम शाह नहीं खेलेंगे वनडे विश्व कप

दुबई। पाकिस्तान के स्टार तेज गेंदबाज नसीम शाह के के कंधे में चोट लगने से वह विश्व कप में नहीं खेल पाएंगे। भारत में होने वाले आईसीसी पुरुष एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय विश्व कप में नहीं खेलने से पाकिस्तान को करारा झटका लगा है। जानकारी के अनुसार सुपर 4 चरण में भारत के खिलाफ मुकाबले में नसीम के दाहिने कंधे पर चोट लग गई थी। चोट से उभरने के लिए उन्हें एक साल तक लग सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि नसीम दुबई में एक्स-रे स्कैन के लिए गए थे और पहली रिपोर्ट से पता चलता है कि चोट पहले से अधिक गंभीर है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) किसी प्रतिस्थापन की तलाश कर सकता है, लेकिन अभी तक उनके भारत दौरे पर जाने वाली पाकिस्तानी टीम का हिस्सा बनने की संभावना नहीं है। पीसीबी (पीसीबी) ने अभी तक नसीम की चोट पर आधिकारिक तौर पर अपडेट जारी नहीं किया है, लेकिन जैसे ही सेकेंडरी रिपोर्ट उपलब्ध होगी, वह अपडेट जारी कर सकता है। प्रारंभिक रिपोर्टों के अनुसार, नसीम को लंबी छुट्टी का सामना करना पड़ रहा है, जिससे वह ऑस्ट्रेलिया दौरे और पाकिस्तान सुपर लीग (पीएसएल) से भी बाहर हो जाएंगे। भारत और पाकिस्तान के बीच पहला मैच बारिश के कारण रद्द हो जाने के बाद एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) ने आगामी मुकाबले के लिए रिजर्व डे जोड़ा था जिसमें नसीम जख्मी हो गए। श्रीलंका के खिलाफ मुकाबले में उनकी जगह जमान खान ने ली। यह मैच पाकिस्तान ने 2 विकेट से गंवा दिया था और टूर्नामेंट से बाहर हो गए। नसीम के अलावा मोहम्मद हसनैन भी जख्मी हैं।

आयरलैंड में कमाल दिखाने के बाद रिंकू सिंह ने टी20 लीग में जड़े 16 छक्के

-टीम इंडिया के खिलाड़ी ने अब एशियन गेम्स पर टिकाई निगाहें, जुटे तैयारी में

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के बल्लेबाज रिंकू सिंह इन दिनों ताबड़तोड़ प्रदर्शन करने में जुटे हुए हैं। आईपीएल 2023 में कोलकाता नाइट राइडर्स की ओर से खेलते हुए बाएं हाथ के बैटर रिंकू ने लगातार 5 गेंद पर 5 छक्के जड़े थे। इंडियन प्रीमियर लीग में कमाल का प्रदर्शन करने के बाद रिंकू को भारतीय टीम में जगह मिली और उन्होंने आयरलैंड के खिलाफ टी20 सीरीज में भी रन कूटे। दूसरे मैच में उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार भी मिला। टीम इंडिया ने सीरीज पर 2-0 से कब्जा भी किया। सीरीज का तीसरा मैच बारिश के चलते रद्द हो गया था। इसके बाद रिंकू ने यूपी टी20 लीग में कमाल का प्रदर्शन किया और टीम के फाइनल में जगह दिलाई। अब 25 साल के बैटर रिंकू सिंह इन दिनों एशियन गेम्स की तैयारी में लगे हुए हैं। रिंकू सिंह की टीम मेरठ मावरिक्स हालांकि यूपी टी20 लीग के फाइनल में काशी रुद्रास से हार गई, लेकिन उन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया। रिंकू ने टी20 लीग में 16 छक्के जड़े और 234 रन भी बनाए। इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट भी बेहतरीन रहा। उप्र के रिंकू के ओवरऑल टी20 के रिकॉर्ड को देखें, तो उन्होंने अब तक 91 मैच की 82 पारियों में 31 की औसत से 1806 रन बनाए हैं। 10 अर्धशतक लगाये है। 79 रन बेस्ट प्रदर्शन है। स्ट्राइक रेट 142 का है। उन्होंने 83 छक्के भी जड़े हैं। एशियन गेम्स में तीसरी बार क्रिकेट को शामिल किया गया है, लेकिन भारतीय पुरुष और महिला क्रिकेट टीमें पहली बार गेम्स में उतर रही हैं। मेंस कैटेगरी की बात करें, तो कुल 14 टीमें भाग ले रही हैं। टीम इंडिया सीधे क्वार्टर फाइनल में उतरेगी। ऋतुराज गायकवाड़ को एशियन गेम्स के लिए भारतीय टीम का कप्तान बनाया गया है। यानी गोल्ड मेडल जीतने के लिए भारतीय टीम को 3 मुकाबले जीतने होंगे। एशियन गेम्स के इतिहास की बात करें, तो इससे पहले 2010 और 2014 में भी क्रिकेट को शामिल किया गया था। मेंस कैटेगरी में 2010 में बांग्लादेश की टीम गोल्ड मेडल जीतने में सफल रही। अफगानिस्तान को सिल्वर तो पाकिस्तान को ब्रॉन्ज मेडल मिला। 2014 में श्रीलंका की टीम गोल्ड मेडल जीतने में सफल रही। अफगानिस्तान को सिल्वर तो बांग्लादेश की टीम ब्रॉन्ज मेडल जीतने में सफल हुई। इस बार टीम इंडिया ऋतुराज गायकवाड़ की अगुआई में एशियन गेम्स में मेडल के लिए दम लगाएगी।

दीक्षा डागर स्विस लेडीज ओपन में संयुक्त 7वें स्थान पर

होल्जहौसर्न (स्विटजरलैंड)। भारत की दीक्षा डागर ने लेडीज यूरोपीय टूर गोल्फ में अपना शानदार फॉर्म बरकरार रखते हुए वी पी बैंक स्विस लेडीज ओपन में संयुक्त सातवां स्थान हासिल किया। दीक्षा ने तीसरे और आखिरी दौर में चार अंडर 68 स्कोर किया। अन्य भारतीय खिलाड़ियों में अमनदीप द्राल संयुक्त 43वें स्थान पर रही जबकि वाणी कपूर कट में प्रवेश नहीं कर सकी। लेडीज यूरोपीय टूर में अब छोटा ब्रेक होगा जिसके बाद फ्रांस में लेडीज लाकोस्टे ओपन खेला जाएगा। इस साल पांच और टूर्नामेंट बाकी हे जिनमें हीरो महिला इंडियन ओपन अगले महीने खेला जाएगा।

भारत की अंडर17 महिला फुटबॉल टीम थाईलैंड पहुंची

बुरिराम । अपने पहले दौर के ग्रुप में शीर्ष पर रहने के बाद भारत की अंडर17 महिला फुटबॉल टीम एएफसी अंडर17 महिला एशियाई कप क्वालीफिकेशन राउंड 2 के लिए उच्च उम्मीदों के साथ थाईलैंड पहुंच गई। खिलाड़ी थाईलैंड में कदम रखने के लिए पूरी तरह से उत्साहित हैं और योग्यता की लड़ाई फिर से शुरू होने का इंतजार कर रही हैं, जिस बाधा को उन्होंने पिछले दौर में विशिष्टता के साथ पार किया था। अप्रैल में भारतीय महिला यू17 टीम ने अपने राउंड 1 ग्रुप में शीर्ष स्थान हासिल किया और पहली बार एएफसी यू17 महिला एशियाई कप क्वालीफायर के राउंड 2 में जगह बनाई। किर्गिज गणराज्य के बिश्केक में खेले गए तीन-टीम समूह में टीम इंडिया ने मेजबान किर्गिज गणराज्य और म्यांमार के खिलाफ अपने दोनों मैच जीते और छह अंक हासिल किए।

विश्व कप जीत सकता है भारत, लेकिन प्रबल दावेदार का ठप्पा लगाना सही नहीं : कपिल देव

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व कप्तान कपिल देव का मानना है कि भारतीय टीम अपनी धरती पर वनडे विश्व कप जीत सकती है लेकिन उन्होंने कहा कि प्रबल दावेदार का ठप्पा लगाना सही नहीं है क्योंकि बहुत कुछ तकदीर पर निर्भर करेगा।

कपिल ने कहा, 'अगर हम शीर्ष चार में आ गए तो यह महत्वपूर्ण होगा। इसके बाद से किस्मत की बात है।' उन्होंने जम्मू तवी गोल्फ कोर्स पर चार से सात अक्टूबर तक होने वाले जे एंड के ओपन के तीसरे सत्र के लांच से इतर कहा, 'हम अभी नहीं कह सकते कि हम प्रबल दावेदार है। हमारी टीम अच्छी है। दिल कुछ कहता है और दिमाग कहता है कि अभी काफी मेहनत करनी होगी। मैं अपनी टीम को जानता हूं लेकिन दूसरी टीमों को नहीं जानता। ऐसे में जवाब देना गलत होगा।' उन्होंने कहा, 'जहां तक भारत का सवाल है तो यह टीम जीत सकती है। उन्हें जुनून के साथ खेलना चाहिए।' भारत ने श्रीलंका को एशिया कप फाइनल में दस विकेट से हराकर खिताब जीता। उन्होंने कहा, 'सिराज ने शानदार गेंदबाजी की। मुझे खुशी है कि अब हर देश में हमारे तेज गेंदबाज दस विकेट ले रहे हैं। यह सोने पे सुहागा है। एक समय पर हम स्पिनरों पर निर्भर थे लेकिन अब ऐसा नहीं है। यही इस टीम की ताकत है।'

कपिल ने यह भी कहा कि बतौर प्रशंसक वह करीबी मुकाबला देखना चाहते हैं, एशिया कप की तरह एकतरफा मुकाबले नहीं। उन्होंने कहा, 'एक क्रिकेटर के तौर पर मुझे करीबी मुकाबले देखना पसंद है। लेकिन बतौर खिलाड़ी मैं चाहूंगा कि उन्हें 30 रन पर आउट करके मैच जीत लूं। एक दर्शक के तौर पर मैं करीबी मुकाबले देखना चाहूंगा।'

कपिल ने सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल की तारीफ करते हुए कहा, 'यह ऐसा युवा खिलाड़ी है जो भारतीय क्रिकेट का भविष्य है। भारत में इस तरह का खिलाड़ी होना गर्व की बात है।' शिखर धवन, रविचंद्रन अश्विन और युजवेंद्र चहल जैसे सीनियर खिलाड़ी विश्व कप टीम में जगह नहीं बना सके। कपिल ने हालांकि चयनकर्ताओं का बचाव करते हुए कहा, 'जो टीम में जगह नहीं बना सके, उनको लेकर बात हो रही है। सभी की अपनी राय है। चयनकर्ता हमसे बेहतर जानते हें क्योंकि वे आपस में सलाह मशविरा करके सर्वश्रेष्ठ टीम चुनते हैं। उन्हें उनका काम करने दीजिए। ऊंगली उठाना आसान है।'

बचपन से अभिनेत्री बनने का सपना देखती थीं शबाना आजमी

बॉलीवुड की दिग्गज अभिनेत्री शबाना आजमी 73 वर्ष की हो गई हैं। 18 सितंबर 1950 को जन्मीं शबाना आजमी के पिता कैफी आजमी मशहूर शायर और गीतकार थे जबकि मां शौकत आजमी रंगमंच की जानी-मानी अभिनेत्री थीं। शबाना ने स्नातक की पढ़ाई दिल्ली के सेंट जेवियर कालेज से पूरी की और इसके बाद उन्होंने पुणे फिल्म इंस्टीट्यूट में दाखिला ले लिया।

पुणे में अभिनय का प्रशिक्षण हासिल करने के बाद शबाना आजमी अभिनेत्री बनने के लिए 1973 में मुंबई आ गईं। यहां उनकी मुलाकात निर्माता-निर्देशक ख्वाजा अहमद अब्बास से हुई, जिन्होंने उन्हें अपनी फिल्म फासले में काम करने का प्रस्ताव किया। यह फिल्म पूरी हो पाती उससे पहले ही उनकी फिल्म अंकुर रिलीज हो गई।

श्याम बेनेगल के निर्देशन में बनी और 1974 में रिलीज फिल्म 'अंकुर' हैदराबाद की एक सत्य घटना पर आधारित थी। इस फिल्म में शबाना आजमी ने लक्ष्मी नामक एक ऐसी ग्रामीण युवती का किरदार निभाया, जो शहर से आए एक कालेज स्टूडेंट से प्यार कर लेती है। फिल्म के निर्माण के समय श्याम बेनेगल ने अपनी कहानी कई अभिनेत्रियों को सुनाई, लेकिन सभी ने फिल्म में काम करने से मना कर दिया। करियर के शुरआती दौर में इस तरह का किरदार किसी भी अभिनेत्री के लिए जोखिम भरा काम हो सकता था लेकिन शबाना आजमी ने इसे एक चैलेंज के रूप में लिया और अपने सधे हुए अभिनय से समीक्षकों के साथ ही दर्शकों का भी दिल जीतकर फिल्म को सुपरहिट बना दिया। इस फिल्म में अपने दमदार अभिनय के लिए वह सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित की गईं।

साल 1975 में श्याम बेनेगल की ही फिल्म 'निशांत' में शबाना आजमी को उनके साथ फिर काम करने का मौका मिला। 1977 शबाना आजमी के सिने करियर का अहम पड़ाव साबित हुआ। इस वर्ष उन्हें जहां महान फिल्मकार सत्यजीत रे की फिल्म शतरंज के खिलाड़ी में काम करने का मौका मिला। वहीं फिल्म स्वामी में उत्कृष्ट अभिनय के लिए वह सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के फिल्म फेयर पुरस्कार से सम्मानित की गईं।

इस बीच शबाना आजमी ने व्यावसायिक सिनेमा की ओर भी अपना रख कर लिया। इस दौरान उन्हें विनोद खन्ना के साथ परवरिश और अमर अकबर एंथोनी जैसी फिल्मों में काम करने का अवसर मिला, जिसकी सफलता ने उन्हें व्यावसायिक सिनेमा में भी स्थापित कर दिया। साल 1982 में रिलीज फिल्म 'अर्थ' शबाना आजमी के लिए करियर की एक और महत्वपूर्ण फिल्म साबित हुई।

महेश भट्ट के निर्देशन में बनी इस फिल्म में शबाना आजमी ने एक ऐसी शादीशुदा महिला का किरदार निभाया जिसका पति उसे अन्य महिला के कारण छोड देता है। इस फिल्म के लिये शबाना आजमी दूसरी बार सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित की गईं। साल 1983 में रिलीज फिल्म 'मंडी' शबानी आजमी की अहम फिल्मों में शुमार की जाती है। श्याम बेनेगल निर्देशित इस फिल्म में उन्होंने वेश्यालय चलाने वाली रक्मणी बाई की भूमिका को पहले पर्दे पर साकार किया। इस फिल्म के लिये वह सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के फिल्म फेयरपुरस्कार से नामांकित भी की गईं।

जरीन खान की होगी गिरफ्तारी?

अभिनेत्री ज़रीन खान उन सभी गलत कारणों से सुर्खियों में आ गईं, जब धोखाधड़ी के एक मामले में कोलकाता पुलिस द्वारा उन्हें गिरफ्तारी वारंट दिए जाने की खबरें सामने आईं। इंडिया टीवी ने रविवार को अभिनेता की टीम से संपर्क किया, जिन्होंने सभी आरोपों से इनकार किया और इसे गलत संचार बताया। सोमवार को ज़रीन खान के वकील ने उनकी ओर से एक स्पष्टीकरण जारी किया और इसे 卐कुछ गलत संचार卐 का परिणाम बताया। दो पेज के स्पष्टीकरण में उल्लेख किया गया है कि खान को मामले में कलकत्ता उच्च न्यायालय द्वारा सुरक्षा दी गई है और शिकायतकर्ता लगातार मामले में सेवा से बच रहा है। स्पष्टीकरण में आगे कहा गया है कि कार्यक्रम के आयोजक विशाल गुप्ता और उनकी पत्नी पायल गुप्ता ने अपनी प्रबंधक अंजलि अथा के माध्यम से इस कार्यक्रम को मुख्यमंत्री, खेल मंत्री के माध्यम से पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा आयोजित काली पूजा के रूप में प्रस्तुत करके अभिनेता को धोखा दिया।

क्या है जरीन खान धोखाधड़ी मामला?

2018 में, वीर में सलमान खान के साथ अभिनय की शुरुआत करने वाली ज़रीन खान को कोलकाता में एक दुर्गा पूजा कार्यक्रम में प्रदर्शन करने के लिए कहा गया था। रिपोर्ट्स में कहा गया है कि वह कार्यक्रम में शामिल नहीं हुईं जिसके बाद आयोजकों ने उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई। इसके बाद, खान को कोलकाता पुलिस ने पूछताछ के लिए बुलाया था। अभिनेता ने आरोप लगाया था कि आयोजकों ने कार्यक्रम को गलत तरीके से प्रस्तुत किया और यह कहकर उन्हें गुमराह किया कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री इसका हिस्सा होंगी। खान और उनकी टीम को बाद में पता चला कि यह उत्तरी कोलकाता में एक छोटे पैमाने का कार्यक्रम था। इसके अलावा, अभिनेता ने यह भी खुलासा किया कि आयोजकों को उनके प्रवास और हवाई जहाज के टिकटों को लेकर गलतफहमी थी।

'द फीलांसर' के फैन हुए रितिक रोशन

फाइडे स्टोरीटेलर्स की एक्शन थ्रिलर 'द फीलांसर' 1 सितंबर को रिलीज हुई थी और इसने दर्शकों को एक्शन और रोमांच की भरपूर डोज दी। 4 एपिसोड वाली इस सीरीज को जहां दर्शकों ने बेहद पसंद किया है, वहीं अब सुपरस्टार रितिक रोशन भी इसके फैन हो गए हैं। हाल में जब उन्होंने ये शो देखा तो वो शो और टीम की तारीफ किए बिना रह नही पाएं।

इस एक्शन थ्रिलर 'द फीलांसर' की तारीफ करते हुए रितिक ने अपने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर की जिसमें लिखा है, अभी-अभी हॉटस्टार पर द फीलांसर देखना खत्म किया - जो कि नीरज पांडे, शीतल भाटिया और टीम की कला का एक और शानदार नमूना है। मैंने सोचा था कि स्पेशल ऑप्स बेस्ट था, लेकिन आप सभी ने भी मुझे हैरान कर दिया है। अविश्वसनीय रूप से रोमांचकारी!

उन्होंने लिखा, सबसे पहले, क्या नया कॉन्सेप्ट है.. शो देखने से मुझे एहसास हुआ कि यह इतनी संभावनाओं वाला एक ऐसा यूनिवर्स है जिसे किसी ने नही खोजा है। मैं अपकमिंग एपिसोड देखने के लिए इंतजार नहीं कर सकता। अनुपम सर, मोहित और कश्मीरा संग पूरी कास्ट आउटस्टैंडिंग हैं। दोस्तों.. अगर आपने अभी तक हॉटस्टार पर द फीलांसर नहीं देखा है.. तो कृपया इसे तुरंत अपनी वॉचलिस्ट में जोड़ें! यह एक ऐसी वेबसीरीज़ है जिसे आपको मिस नहीं करना चाहिए!

'द फीलांसर' को अपनी रिलीज के बाद से ही खूब प्यार मिल रहा है। ये सीरीज मोहित रैना, अनुपम खेर जैसे कई अन्य प्रतिभाशाली स्टारकास्ट से सजी है। फाइडे स्टोरीटेलर्स ने दर्शकों को हमेशा कुछ नया और ओरिजनल दिया है, 'द फीलांसर' निश्चित रूप से एक मस्ट वॉच कंटेंट है जो डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर उपलब्ध है।

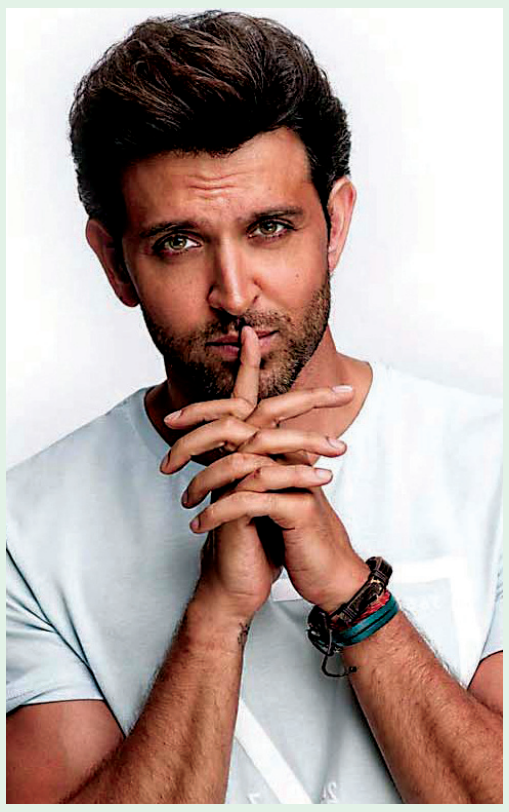

मौनी रॉय के बोल्ड अवतार को देख फैन्स शॉक्ड

टीवी और फिल्मों की दुनिया में दमखम दिखान के बाद मौनी रॉय अब ओटीटी पर भी धमाल मचाने को तैयार हैं। उनकी 'सुल्तान ऑफ दिल्ली' 13 अक्टूबर से डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर स्ट्रीम होगी।

उनकी वेब सीरीज 'सुल्तान ऑफ दिल्ली' का टीजर रिलीज कर दिया गया है, जो काफी इंगेजिंग है। टीजर के साथ-साथ 'सुल्तान ऑफ दिल्ली' की रिलीज डेट का भी ऐलान कर दिया गया है। 'सुल्तान ऑफ दिल्ली' में ताहिर राज भसीन लीड रोल में हैं, जो अर्जुन भाटिया का रोल प्ले कर रहे हैं।

एक्ट्रेस मौनी रॉय, जो अपनी पहली स्ट्रीमिंग सीरीज 'सुल्तान ऑफ दिल्ली' की रिलीज का इंतजार कर रही हैं, इस बात से बेहद खुश हैं कि उन्हें एक बेहद स्टाइलिश किरदार निभाने का मौका मिला, जिसके लिए उन्हें काफी मेहनत करनी पड़ी।

अपने किरदार के लिए उन्हें 200 आउटफिट्स और अपने बालों के साथ कई सारे एक्सपेरिमेंट करने पड़े।

मौनी क्लासिक, खूबसूरत ड्रेस और हेयर-स्टाइल के साथ रेट्रो वाइब अपनाती नजर आएंगी। 'सुल्तान ऑफ दिल्ली' अर्नब रे की किताब 'सुल्तान ऑफ दिल्ली: असेंशन' पर बेस्ड है। यह स्ट्रीमिंग के लिए बनाई गई एक लार्जर दैन लाइफ मास एंटरटेनर है।

इसमें अनुप्रिया गोयनका, हरलीन सेठी और महरीन पीरजादा के साथ ताहिर राज भसीन, अंजुम शर्मा, अनुभवी अभिनेता विनय पाठक और निशांत दहिया भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं।

अपने लुक और किरदार के बारे में बात करते हुए मौनी ने कहा, 'हर एक लड़की को सजने-संवरने और एकदम अलग दिखने में मजा आता है। 'सुल्तान ऑफ दिल्ली' में मुझे नयनतारा के रूप में हर एपिसोड में अपनी स्टाइल और कलर स्कीम का बदलने का मौका मिला। किरदार के लिए परफेक्ट लुक ढूंढना बेहद मुश्किल काम है और मैंने 200 से ज्यादा आउटफिट्स पहनीं है और अपने बालों के साथ भी कई एक्सपेरिमेंट किए है।'

उन्होंने आगे कहा, '10 से ज्यादा टेस्ट-लुक आजमाने के बाद, आखिरकार हमें वह मिल गया जो हम चाहते थे। नयनतारा अपने तरीके से कहानी में काफी ग्लैमर और चमक लाती हैं। यह पहली बार है जब मैं 60 के दशक का लुक अपना रही हूं और दर्शकों को मेरा यह पक्ष दिखाने के लिए बहुत उत्साहित हूं।'

'सुल्तान ऑफ दिल्ली' 13 अक्टूबर से डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर स्ट्रीम होगी। 'सुल्तान ऑफ दिल्ली' में ताहिर राज भसीन लीड रोल में हैं, जो अर्जुन भाटिया का रोल प्ले कर रहे हैं।

गणेश भक्त शिव ठाकरे ने कहा- बप्पा के साथ मेरा गहरा नाता हैं

एक्टर शिव ठाकरे ने इस गणेश चतुर्थी के लिए अपनी योजनाओं को साझा किया। गणेश चतुर्थी भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष को मनाई जाती है। इस साल यह 19 सितंबर को मनाया जाएगा। उत्सव के बारे में बात करते हुए, शिव ने कहा, 'हर कोई बप्पा के साथ मेरे संबंध को जानता है। मैं बप्पा में दृढ़ विश्वास रखता हूं और वह मेरी ताकत का स्रोत हैं।' शिव ने साझा किया, 'मैं उनका आशीर्वाद लिए बिना कभी भी कोई शुभ काम शुरू नहीं करता और 'खतरों के खिलाड़ी 13' में अपनी यात्रा शुरू करने से पहले भी मैं सिद्धिविनायक मंदिर गया था।' उन्होंने आगे कहा, 'हर किसी को गणेश चतुर्थी मनाते और सड़कों पर नृत्य करते देखना खुशी की बात है।' 'हर गणेश चतुर्थी पर, मेरी 'आई' विशेष महाराष्ट्रीयन दावत बनाती है, खास तौर से वरण भात, उकादिचे मोदक आदि और हमारे परिवार के सभी सदस्य इस भव्य त्योहार को मनाने के लिए हमारे साथ शामिल होते हैं। बप्पा का आशीर्वाद हम सबकी रक्षा करे और सभी बाधाओं को दूर करे।' शिव इन दिनों स्टंट बेस्ड रियलिटी शो 'खतरों के खिलाड़ी 13' में एक कंटेस्टेंट के रूप में नजर आ रहे हैं। 'खतरों के खिलाड़ी 13' कलर्स पर प्रसारित होता है।

अपनी महिला प्रशंसकों से घिरी आलिया भट्ट

बॉलीवुड अभिनेत्री आलिया भट्ट को इंडस्ट्री के अंदर जितना प्यार मिलता है, उतना ही इंडस्ट्री के बाहर भी। उनकी तगड़ी फैन फॉलोइंग है। लोग उनके साथ सेल्फि क्लिक कराने के लिए बेताब रहते हैं। सोशल मीडिया पर एक वीडियो सामने आया है, जिसमें कुछ महिलाओं का झुंड उनकी कार को घेरे नजर आ रहा है। वीडियो शेयर किया गया है, जिसमें देखा जा सकता है कि आलिया की कार का शीशा बंद है और तीन महिलाएं उन्हें विंडो से झांक कर देख रही हैं। एक आदमी भी है, जो आलिया को झांक कर देख रहा है। इसके बाद कार वहां से चली जाती है। बैकग्राउंड में कुछ पैपराजी आलिया भट्ट का नाम लेते तक देखे जा सकते हैं। इस वीडियो को देखने के बाद एक यूजर ने कमेंट किया, उन्हें कुछ पर्सनल स्पेस दो। वहीं, एक अन्य ने कमेंट किया, अरे भगवान के दर्शन करने के लिए जाओ ना उनके दर्शन तो कभी भी कर सकते हो।